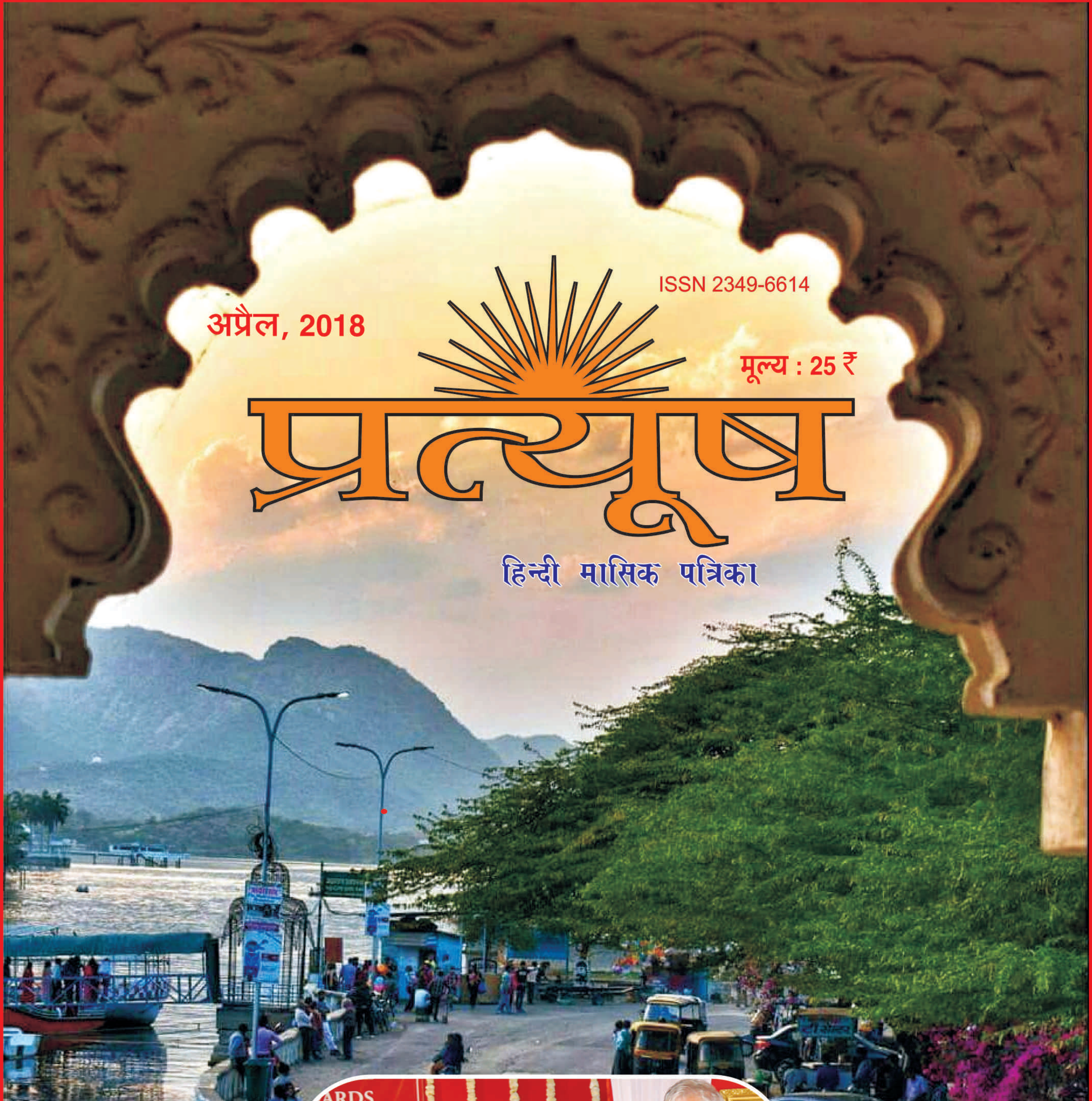

ISSN 2349-6614

अप्रैल, 2018

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

स्थापना दिवस

झीलों में झिलमिलाता
दुनिया का श्रेष्ठ शहर
उदयपुर

अलंकरण

अरविंद सिंह मेवाड़ से
अन्तर्राष्ट्रीय कर्नल जेम्स टॉड
पुरस्कार ग्रहण करते
अमेरिका के प्रो. जॉन स्ट्रेटन

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 16 अंक 2 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

दक्षिणी राजस्थान का पहला अत्याधुनिक
24x7
Cardic Care
कार्डियेक सेंटर
एंजियोग्राफी
एंजियोप्लास्टी
पेसमेकर
I.A.B.P.
A.I.C.D.
C.R.T.-D.
डॉ. एस.के. कौशिक
एम.डी., डी.एम. (कार्डियोलॉजी)
सीनियर इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट
डॉ. अमित खण्डेलवाल
एम.डी., डी.एम. (कार्डियोलॉजी)
सीनियर इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट
कैल्शियम युक्त ब्लॉकेज हटाकर सटीक एंजियोप्लास्टी
अत्याधुनिक तकनीक IVUS & ROTABLATION से सुसज्जित
दक्षिणी राजस्थान की प्रथम कैथलेब
राजस्थान सरकार के कर्मचारी एवं पेंशनर्स, ईएसआईसी, ईसीएचएस, उत्तर पश्चिम रेल्वे एवं समस्त मेडिक्लेम कम्पनियों के लिए मान्यता प्राप्त
दक्षिणी राजस्थान का पहला NABH प्रमाणित कॉर्पोरेट हॉस्पिटल
जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पिटल
भट्ट जी की बाड़ी, उदयपुर सम्पर्क : 0294-3056000

प्रत्यूष

अप्रेल
2018
वर्ष 16, अंक 2

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs
कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
क्रष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग येलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अन्दर के पृष्ठों पर...

06 उपचुनाव

प्रतिष्ठा की लड़ाई में चित्तभाजपा

10 कीर्तिशेष

अनंत आकाश की यात्रा पर हाकिंग

12 अधिवेशन

नए राहुल, नई कांग्रेस और नए अध्यक्ष

18 पाटोत्सव

शर्मनाक! आदर्शों की 'छवि भंजक' राजनीति

30 पूर्वोत्तर विजय

पुराने प्रतिमान टूटने का दौर

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा
AADHAR PRODUCTS
डिसाइड®
डिसाइड
वाशिंग पाउडर
डिसाइड
एडवाइज़
वाशिंग पाउडर
Decide
डिसाइड
नमक
बर्तन बार
एडवाइज़
डिसाइड
Rose beauty soap
RICH ROSE AROMA
डिसाइड
Lime beauty soap
FOR LUMINOUS FRESHNESS with natural fragrance
डिसाइड
MILK & ALMOND
FOR SMOOTH & SOFT SKIN with natural fragrance
हमारे अन्य उत्पाद
➤ डिसाइड वाशिंग पाउडर
➤ डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
➤ डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
➤ डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
➤ एडवाइस वाशिंग पाउडर
➤ एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
➤ डिसाइड डिशवाश बार
➤ डिसाइड डिशवाश टब
➤ डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
➤ डिसाइड नमक
➤ डिसाइड बाथ सोप
AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
RIICO Industrial Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India
FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at aadharproducts@rediffmail.com
www.aadharproducts.in

हवाएं ही तय करेंगी मौसम

पिछले महीने यानी मार्च की शुरुआत में तीन पूर्वोत्तर राज्यों के चुनावी नतीजों ने पूरे देश को संदेश दिया कि भारतीय जनता पार्टी का चुनावी रथ पूरे वेग से विपक्ष को रौंद रहा है। पिछले दो दशकों से अधिक समय तक जिस त्रिपुरा पर वामपंथ का कब्जा था, वहां तो उसे जीत मिली ही, देश के एक मात्र ईसाई बहुल राज्य नगालैण्ड में भी उसने अच्छा प्रदर्शन किया। इस तरह भाजपा ने शाह-मोदी की सरपरस्ती से 21 राज्यों में अपनी और सहयोगी दलों को सरकारों को स्थापित कर दिया। इन राज्यों में भारत की 70 फीसदी आबादी बसती है। जून 2014 में जब नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में भाजपा ने आम चुनाव जीता था, तब महज सात राज्य केसरिया रंग में आवेष्ठित थे अर्थात् वहां भाजपा की सरकारें थीं। जबकि स्वतंत्रता के कई वर्षों बाद तक लगभग सभी राज्यों में पताका फहराती रही कांग्रेस की सत्ता तब 13 सूबों में सिमटी हुई थी। मगर चार वर्ष भी नहीं बीते कि कांग्रेस की हकूमत घटकर चार राज्यों में सिकुड़ गई। कांग्रेस को यह बुरे दिन इसलिए देखने पड़े कि उसके लम्बे शासन के बाद भी कमज़ोर और मध्यम वर्ग के लोगों की मूलभूत समस्याएं हल नहीं हो पा रही थीं, गरीब और अमीर के बीच की खाई लगातार चौड़ी हो रही थी और शासन व प्रशासन में भ्रष्टाचार की जड़ें गहरे तक जमती जा रही थीं। नेता निष्ठुर होकर बजाए जनता के योगक्षेम चिंतन के अपने ही परिवारों को पुष्ट करते रहे। उन्हीं बुरे दिनों को भूलने के लिए जनता ने चार साल पहले 'अच्छे दिनों' को हर शहर, गांव और देहरी तक पहुंचाने का वादा लेकर गुजरात की राजनीति से दिल्ली का सफर तय करने निकले नरेन्द्र मोदी को अपने विश्वास की पूंजी सौंप दी। गुजरात में मुख्यमंत्री रहते विकास के नये आयाम गढ़ने की कहानियां भी भाजपा के इस नेता के पीछे-पीछे उस रास्ते पर चली जो केन्द्रीय सत्ता तक जाता था। जनता ने इन्हें और इनकी पार्टी को वोटों से मालामाल कर दिया। मोदी-शाह की भाजपा केन्द्र में सत्तासीन हो गई। मगर अच्छे दिन तो आए नहीं। चाकू खरबूजे पर गिरा या खरबूजा चाकू पर, यह तो नहीं पता लेकिन कटा खरबूजा सबके सामने है। जितने वादे हुए, वे पूरा होना तो दूर, इन चार सालों में वोटर ने क्या नहीं सहा? लुटेरे देश लूटते रहे और आम ईमानदार आदमी की नाक को नकेल के लिए छेदा जाता रहा।

आखिर यह कब तक और क्यों बर्दाश्त किया जाता, सो त्रिपुरा, मेघालय और नागालैण्ड की जीत के नशे से चूर भाजपा पर ठीक ग्यारहवें दिन वोटर ने घड़ों पानी उडेलकर उसे जमीनी हकीकत का अहसास करवा दिया। मोदी खामोश हैं, शाह अन्तर्ध्यान हैं और बाकी बड़े नेता अपने ही खोल में मुंह छिपाए बैठे हैं। राजस्थान-मध्यप्रदेश में पिछले दिनों उपचुनावों में करारी हार से भी इस पार्टी ने सबक नहीं लिया। अब उत्तरप्रदेश और बिहार के उपचुनावों के नतीजे भी संकेत दे रहे हैं कि 'मार्ग पर आ जाओ, सन् 2019 ज्यादा दूर नहीं है।' उससे पहले भी इसी साल कुछ राज्यों में चुनाव की अग्नि परीक्षा से गुजरना है।

गोरखपुर-फूलपुर लोकसभा सीटों पर भाजपा की हार उसके लिए इसलिए शर्मनाक है कि इन दोनों पर 2014 में विजयी नेता अब उत्तरप्रदेश में मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री हैं। योगी आदित्यनाथ पिछले दिनों यह कहते हुए त्रिपुरा में पार्टी की जीत का श्रेय खुद ले रहे थे कि वे वहां बड़ी संख्या में नाथ सम्प्रदाय के वोटरों को लालगढ़ से निकाल कर केसरियागढ़ में ले आए थे। किन्तु इस बात का जवाब देने से बच रहे हैं कि पिछले 27 वर्षों से गोरखपुर की जो सीट भाजपा के कब्जे में थी, वह भाजपा के ही राज में कैसे दूसरे पाले में जा पड़ी। फूलपुर की सीट खोकर केशवप्रसाद मौर्य भी उपमुख्यमंत्री पद पर रहने का नैतिक अधिकार खो चुके हैं। बिहार में भी भाजपा-जद(यू) गठबंधन रंग नहीं ला सका, वहां लालू यादव के पुत्र तेजस्वी प्रभावी रहे और राजद ने अररिया लोकसभा व जहानाबाद विधानसभा सीटें जीत लीं। हम पिछले अंक में इसी पृष्ठ पर लिख चुके हैं कि भाजपा आलाकमान ने यदि अपने सूबाई क्षत्रपों की क्लास लेकर जनता के सुख-दु:ख को नहीं जाना तो इसी साल राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में होने वाले विधानसभा चुनाव और कुछ अन्य जगहों पर होने वाले उपचुनाव उसके लिए फिर चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं। इन तीनों ही राज्यों में वह पार्टी फिर सत्ता हथिया सकती है, जिसे भारत से ही मुक्त करने का भाजपा हर सुबह-शाम जिक्र करती है। उत्तरप्रदेश और बिहार के ये चुनाव जनता के मूड को बताने वाले हैं। जिस दल ने वोटर के दु:ख-दर्द को समझ लिया उसे वह पलकों पर बिठा लेगा और जो सत्ता के नशे में चूर रहा, उसे सबक सिखाने में भी देर नहीं लगेगी। जनतंत्र में ऐसा ही होता है। जनतंत्र में हवाओं का रूख राजनेता नहीं जनता तय करती है और हवाएं वैसा ही मौसम बनाती है जैसा उनके अनुकूल हो।

उत्तरप्रदेश में सपा और बसपा ने समझौता कर समूचे विपक्ष को भी एकता का संदेश दिया है। इसी एकता की वजह से तीनों लोकसभा सीटें विपक्ष द्वारा जीती जा सकीं। हाल ही में कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी ने भी स्नेह भोज के जरिये विपक्षी एकता का जो प्रयास किया है, वह भी भविष्य के लिए फायदेमंद हो सकता है, बशर्ते कि पार्टी खुद भी 'एकला चलो' प्लान पर ही अड़ी न रहे। अखिलेश यादव ने मायावती से पहले सोनिया गांधी से उत्तरप्रदेश में समझौते के लिए सम्पर्क किया था और सोनिया गांधी ने इस सम्बन्ध में वार्ता के लिए वरिष्ठ नेता गुलाम नबी आजाद को अधिकृत किया, लेकिन वे फूलपुर की सीट कांग्रेस को देने पर अड़ गए। नतीजा यह हुआ कि दोनों ही सीटों पर कांग्रेस की जमानत जब्त हो गई। एनसीपी, तृणमूल कांग्रेस, सपा सहित कई क्षेत्रीय दल पहले भी कांग्रेस को व्यापक गठबंधन की पहल करने की सलाह दे चुके हैं। यदि यह कहा जाए कि उपचुनाव के नतीजों में विपक्ष के लिए एकता का संदेश ही निहीत है, तो गलत नहीं होगा।

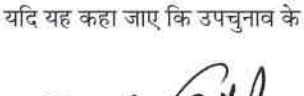

प्रतिष्ठा की लड़ाई में हारी भाजपा

योगी आदित्यनाथ और केशव प्रसाद मौर्य की सीट पर सपा की जीत

बिहार की अररिया लोकसभा सीट पर राजद ने बरकरार रखा कब्जा

तीन दशक बाद तिलिस्म टूटा

गोरखपुर संसदीय सीट

- 1989 से 2018 तक गोरक्षा पीठ के महंत रहे यहां से सांसद
- 1989 में महंत अवैद्यनाथ हिंदू महासभा की टिकट पर लोकसभा पहुंचे थे
- 1998 से महंत अवैद्यनाथ के शिष्य योगी आदित्यनाथ यहां से जीतते आ रहे थे

केसरिया रंग नहीं गहराया

फूलपुर संसदीय सीट

- 2014 में पहली बार भाजपा ने फूलपुर सीट तीन लाख के प्रचंड अंतर से यह सीट जीती
- 2017 में फूलपुर लोकसभा सीट की पांच सीटों में से चार भाजपा के पास और एक अपना दल के पास

14 साल के बाद सपा ने फिर से फूलपुर संसदीय सीट पर कब्जा जमाया

मनीष उपाध्याय

यूपी-बिहार में लोकसभा की तीन सीटों पर हुए उपचुनाव में भाजपा को करारा झटका लगा। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ की गोरखपुर सीट और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य की फूलपुर सीट सपा के खाते में चली गई। वहीं बिहार की अररिया सीट पर राजद ने अपना कब्जा बरकरार रखा। योगी आदित्यनाथ की परंपरागत सीट गोरखपुर में सपा उम्मीदवार प्रवीण निषाद ने भाजपा प्रत्याशी उपेंद्र दत्त शुक्ला को हराया। फूलपुर में सपा के ही नागेंद्र सिंह पटेल ने भाजपा के कौशलेंद्र सिंह पटेल को बड़े अंतर से पराजित किया। यहां देश को आजादी मिलने के बाद 1952 में पहली बार हुए आम चुनाव के 62 साल बाद भाजपा को 2014 में जीत नसीब हुई थी। पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के क्षेत्र फूलपुर से केशव प्रसाद मौर्य 2014 में रिकार्ड 3.08 लाख मतों से जीते थे।

गोरखपुर सीट की बात करें तो ये करीब तीन दशक तक भाजपा के कब्जे में थी। लेकिन गोरखपुर और फूलपुर सीट पर बसपा के साथ तालमेल और राजद, निषाद व पीस पार्टी सहित कई दलों से मिला समर्थन सपा के लिए फायदेमंद साबित हुआ। बिहार की अररिया लोकसभा सीट पर राजद प्रत्याशी सरफराज आजम ने भाजपा के प्रदीप सिंह को 61788 वोटों से हराया। जहानाबाद विधानसभा सीट भी राजद की झोली में चली गई। भभुआ से भाजपा प्रत्याशी ने जीत हासिल की। अररिया में राजद की जीत को इस बात का संकेत माना जा रहा है कि भाजपा को नीतीश के साथ खास फायदा नहीं मिला। इधर, हार को स्वीकारते हुए प्रदीप कुमार ने कहा कि पार्टी की अंदरूनी कलह की वजह से हार का सामना करना पड़ा।

ब्रह्मास्त्र साबित होगा गैर भाजपा गठबंधन

फूलपुर और गोरखपुर उपचुनाव में सपा और बसपा की चौंकाने वाली 'रिश्तेदारी' ने भाजपा को प्रतिष्ठा की लड़ाई में हरा दिया। वर्ष 2017 में जिन कारणों ने अखिलेश सरकार को विदाई दी थी, लगभग उन्हीं कारणों ने सीएम योगी को उनके मठ गोरखपुर में हार का मुंह देखने को मजबूर कर दिया। गोरक्षपीठ के गहरे प्रभाव वाली सीट पर विपक्ष की जीत को सियासी गलियारों में असामान्य घटना के तौर पर देखा जा रहा है। लोगों को यकीन नहीं हो रहा है कि भाजपा अपने अजेय दुर्ग में ही कैसे चित्त हो गई। यह गैर भाजपा गठबंधन के निर्माण में तो मददगार होगा ही, 2019 के आम चुनाव में भाजपा के खिलाफ ब्रह्मास्त्र का भी काम करेगा।

भाजपा हारी, 'मठ' जीता

माना जा रहा है कि गोरखपुर में बीजेपी की हार की रणनीति उपेंद्र दत्त शुक्ला को प्रत्याशी बनाने के बाद से ही बनने लगी थी। दरअसल साल 2017 में हुए विधानसभा चुनाव में बीजेपी को पूर्ण बहुमत मिला। मुख्यमंत्री के लिए कई नाम सामने आए। मनोज सिन्हा का नाम लगभग तय हो चुका था, लेकिन ऐसा माना जाता है कि आरएसएस के दबाव से योगी मुख्यमंत्री बनने में सफल हो गए। उनके मुख्यमंत्री बनते ही यूपी में सबसे ज्यादा नाराजगी ब्राह्मणों में थी। यह बात केंद्रीय नेतृत्व तक पहुंची तो मोदी और शाह ने डैमेज कंट्रोल की कई कोशिशें की, जिसमें महेंद्र पांडेय को यूपी बीजेपी का अध्यक्ष बनाना भी शामिल है।

बीजेपी नेतृत्व पूर्वांचल में ठाकुर बनाम ब्राह्मण टकराव से भली भांति परिचित हो चुका था इसलिए योगी की सीट पर टिकट देने के लिए किसी ब्राह्मण चेहरे की तलाश थी, ताकि यहां भी संतुलन बनाया जा सके। बीजेपी संगठन और आरएसएस की राय से गोरखपुर उपचुनाव के लिए उपेंद्र दत्त शुक्ल मोदी और अमित शाह की पहली पसंद बने। लेकिन सूत्र बताते हैं कि योगी आदित्यनाथ कतई नहीं चाहते थे कि गोरखपुर का नेतृत्व ब्राह्मणों के

हाथ में जाए। योगी के सामने अपनी सीट बचाने से ज्यादा अहम था गोरखपुर में अपने 'मठ' की ताकत को बचाना। इसके बावजूद उपेंद्र दत्त शुक्ल को गोरखपुर संसदीय क्षेत्र से उम्मीदवार घोषित कर दिया गया। चूंकि आदेश अमित शाह का था, तो इसके सीधे विरोध में जाने की हिम्मत भी किसी में नहीं थी। लेकिन अंदरखाने में साजिशों और दुरभिसंधियों का दौर शुरू हो गया। बतौर सीएम योगी ने जमकर प्रचार किया, लेकिन योगी के समर्थक निष्क्रिय हो गए। सभी जानते हैं कि पूर्वांचल में बीजेपी का मतलब योगी और योगी का मतलब संगठन है। ऐसे में किसी भी उम्मीदवार के लिए उनकी मर्जी के बिना जीत हासिल करना टेढ़ी खीर है। इस बार तो आलम ये रहा कि बूथ पर बीजेपी के एजेंट तक मौजूद नहीं थे। इसके उलट सपा और बसपा के समर्थक जोश से लगे हुए थे, जिसका परिणाम सबके सामने है।

ब्राह्मण बनाम ठाकुर के बीच सियासत

गोरखपुर की सियासत ब्राह्मण बनाम ठाकुर की रही है। ये लड़ाई उस वक्त की है जब गोरखनाथ मंदिर के महंत दिग्विजय नाथ हुआ करते थे। गोरखपुर के ब्राह्मणों के बीच पं. सुरतिनारायण त्रिपाठी बहुत प्रतिष्ठित माने जाते थे। किसी वजह से दिग्जिवज नाथ ने सुरतिनारायण त्रिपाठी का अपमान कर दिया। उसी दिन से क्षत्रिय बनाम ब्राह्मण की राजनीति शुरू हो गई। इसके बाद उस वक्त के युवा नेता हरिशंकर तिवारी ने दिग्विजय नाथ के खिलाफ आवाज उठाई। आगे चलकर ठाकुरों का नेतृत्व वीरेंद्र शाही के हाथ आया, लेकिन हरिशंकर तिवारी का 'हाता' और अवैद्यनाथ के 'मठ' के बीच गोरखपुर में वर्चस्व की लड़ाई चलती रही। 90 के दशक में योगी आदित्यनाथ के हाथ मठ की कमान आई। योगी ने 'मठ' की ताकत बढ़ाई। उनकी हिंदू युवा वाहिनी आसपास के कई जिलों में सक्रिय हुई। इसी बीच साल 1998 में माफिया डॉन श्रीप्रकाश शुक्ला का एनकाउंटर कर दिया गया, जिसे ब्राह्मण क्षत्रप कहा जाता था। गोरखपुर में ब्राह्मणों और राजपूतों के बराबर वोट हैं, लेकिन योगी आदित्यनाथ की ताकत लगातार बढ़ी, ब्राह्मण नेतृत्व कमजोर होता गया। इसके साथ ही 'हाता' का असर कम होता गया। उस वक्त शिवप्रताप शुक्ला ब्राह्मणों के सर्वमान्य और ताकतवर नेता थे। लेकिन योगी की बढ़ती ताकत के साथ ही उनका राजनीतिक पतन होता चला गया। कुछ वर्षों के लिए शिवप्रताप शुक्ला राजनीतिक पटल से ही ओझल हो गए। इस बीच राज्य से लेकर केंद्र तक योगी आदित्यनाथ का राजनीतिक कद लगातार बढ़ता रहा। मोदी-शाह युग से पहले आलम ये था कि पूर्वांचल में एक वक्त में मामला योगी बनाम बीजेपी हो गया था।

रिकॉल : जब उपचुनाव में हार गए थे मुख्यमंत्री

गोरखपुर लोकसभा सीट पर उपचुनाव में भाजपा की हार इस सीट के इतिहास में झांकने का संकेत भी करती है। वर्ष 1971 में गोरखपुर जिले की मानीराम विधानसभा सीट पर उपचुनाव हुआ था। इसमें भी सत्ताधारी दल के उम्मीदवार के हारने का मिथक कायम हुआ। इस चुनाव में मुख्यमंत्री रहते हुए त्रिभुवन नारायण सिंह उर्फ टीएन सिंहचुनाव में उतरे और उन्हें हार का सामना करना पड़ा। टीएन सिंह 18 अक्टूबर 1970 से 4 अक्टूबर 1971 तक मुख्यमंत्री रहे थे। दरअसल उस समय उत्तर प्रदेश में चौधरी चरण सिंह की सरकार खतरे में पड़ गई और उन्हें कार्यकाल पूरा होने से पहले हटना पड़ा। ऐसे में टीएन सिंह को उत्तर प्रदेश की कमान सौंप दी गई। टीएन सिंह पहले ऐसे नेता थे जो बिना किसी सदन का सदस्य रहते हुए मुख्यमंत्री बनाए गए थे। इसी वजह से उनकी मुख्यमंत्री पद पर नियुक्ति को उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी गई थी। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार, 1971 में टीएन सिंह मानीराम विधानसभा सीट से सत्ताधारी पार्टी कांग्रेस (ओ) की ओर से चुनाव मैदान में उतरे थे।

माना जाता है कि गोरखनाथ मठ का उन्हें समर्थन भी हासिल था। इस सीट से कांग्रेस ने रामकृष्ण द्विवेदी को अपना उम्मीदवार बनाया। यहां तक कि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी कांग्रेस उम्मीदवार रामकृष्ण द्विवेदी के पक्ष में चुनाव प्रचार करने के लिए गोरखपुर आई हुई थीं। इस चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार ने मुख्यमंत्री टीएन सिंह को 16 हजार मतों से हराकर उपचुनाव में जीत हासिल की थी। टीएन सिंह साल 1979 से लेकर 1981 तक पश्चिम बंगाल के राज्यपाल भी रहे थे। तीन अगस्त 1982 को उनका निधन हो गया।

घाटी की जहरीली हवा में घुट रहा दम

दशकों पुराने कुप्रबंधन से बिगड़ रहे हालात

भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार ने छीना अमन-चैन

-नंदकिशोर

कश्मीर घाटी में तुष्टीकरण की राजनीति से जनता का दम घुट रहा है। हालात यही रहे तो संघर्ष की स्थिति बेकाबू भी हो सकती है। तुष्टीकरण की राजनीति वहां पूरी तरह पैर पसार चुकी है। और ये तब हुआ जब खादी एंड विलेज इंडस्ट्रीज बोर्ड (केवीआईबी) की भर्ती में खुलेआम भाई भतीजावाद से उपजे भारी जन असंतोष से परेशान मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने दिल्ली का रुख किया। सीएम मुफ्ती ने पीएम मोदी से मुलाकात में एलओसी पर नाजुक हालात के चलते कश्मीरियों की 'भारी तकलीफों' का जिक्र किया और भारत-पाकिस्तान के बीच हिंसा में कमी लाने की मांग की। लेकिन भ्रष्टाचार का मुद्दा गौण हो गया। इसके बाद से 'कश्मीर पर संघर्ष' का मुद्दा खड़ा हो गया है। घाटी में जनता की तकलीफों की असल वजह है भ्रष्टाचार। इसके इत्तर राज्य में चौतरफा फैले भ्रष्टाचार के खिलाफ सरकार कार्रवाई की कोई योजना नहीं बना रही है। दूसरी वजह सरकार की दशकों की उदासीनता, कुप्रबंधन, भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार है। जिसके कारण नौजवानों में जबरदस्त नाराजगी है। दूसरी ओर सत्ता का दुरुपयोग और अवसरवाद राज्य के युवाओं में गुस्सा बढ़ाने का काम कर रहा है। जहां पहले ही 18-29 आयुवर्ग के युवाओं में बेरोजगारी की दर 24.6 फीसदी है, जो कि राष्ट्रीय औसत 13.2 फीसदी का तकरीबन दोगुना है। जाहिर है कि बेरोजगारी की इस ऊंची दर का कारण सिर्फ रोजगार में कमी या नौजवानों में शिक्षा और जरूरी योग्यता की कमी नहीं है। बीते फरवरी महीने में राज्य के केवीआईबी के सीईओ पद पर सैयद अरुत मदनी और इंटिग्रेटेड चाइल्ड डेवलपमेंट स्कीम (आईसीडीएस) के तहत हेल्थ एंड न्यूट्रीशन मोबलाइजर के तौर पर रुफाइदा मंसूर व सारा सईद की मनमाने तरीके से नियुक्ति में एक चीज समान है- ये तीनों ही अपने पदों के लिए निर्धारित योग्यता नहीं रखते, लेकिन इनका सत्तारूढ़ पार्टी के आला लोगों से करीबी रिश्ता है। मदनी पीडीपी की अध्यक्ष और मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती के चचेरे भाई होने के साथ ही पार्टी के उपाध्यक्ष सरताज मदनी के बेटे हैं। रुफाइदा पीडीपी के महासचिव और केवीआईबी के वाइस चेयरमैन पीर मंसूर हुसैन की बेटी हैं, जबकि सारा मुहम्मद सईद खान की बेटी हैं। सईद खान और सरताज मदनी में साले-बहनोई का रिश्ता है।

योग्य नहीं, अमीरज़ादे उम्मीदवार चुने गए

जम्मू एंड कश्मीर पब्लिक सर्विस कमीशन (जेकेपीएससी) द्वारा बड़े पैमाने पर सरकारी भर्तियों के लिए ली गई परीक्षा और राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए) में भी यही हुआ, जो भ्रष्टाचार और राजनीतिक पक्षपात का शिकार हो गए। इनमें सुविचारित तरीके से योग्य उम्मीदवारों की कीमत पर अमीरजादे प्रत्याशी चुन लिए गए। मलाईदार पदों पर सत्तारूढ़ दल के प्रभावशाली नेताओं के नाते-रिश्तेदारों की संदिग्ध नियुक्तियों में हाल के दिनों में आई तेजी से राज्य में तुष्टीकरण की राजनीति और गर्त में गई है। सबसे बुरी बात यह है कि पहले से तनावग्रस्त राज्य में खुलेआम भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद की बढ़ती घटनाओं ने राज्य में सामाजिक आर्थिक असंतोष को और बढ़ाया है।

सर्वाधिक भ्रष्ट राज्य

सीएमएस-इंडिया भ्रष्टाचार अध्ययन 2017 ने जम्मू कश्मीर को भारत के सबसे भ्रष्ट राज्यों में रखा है, जहां सर्वे में शामिल 84 फीसदी लोगों का मानना था कि सरकारी नौकरियों में भ्रष्टाचार बढ़ा है। इस राज्य पर लंबे समय से केंद्रीय अनुदान का दुरुपयोग करने और वित्तीय अनियमितताओं के आरोप लगते रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक साल 2000-2016 के दौरान केंद्र द्वारा राज्यों को दिए जाने सभी अनुदानों में से जम्मू कश्मीर को 1.14 लाख करोड़ रुपए (10 फीसद) मिले, जबकि यहां देश की आबादी का सिर्फ एक फीसदी हिस्सा रहता है। इसका अर्थ है कि 1.25 करोड़ की आबादी (2011 की जनगणना के अनुसार) वाले जम्मू कश्मीर में हर व्यक्ति को 91,300 रुपए मिले, जबकि देश की सबसे बड़ी आबादी वाले उत्तर प्रदेश में इसी अवधि के दौरान प्रति व्यक्ति 4,300 रुपए मिले. सीएजी (नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक) 'गंभीर आर्थिक अनियमितताओं' के लिए सरकार की कई बार आलोचना कर चुका है। समग्रता से देखें तो जम्मू कश्मीर में भारत सरकार द्वारा एक रणनीति के तहत राजनीतिक तुष्टीकरण की शुरुआत 1953 के बाद शुरू की गई। एक रसूखदार तबके को खुश रखने के इकलौते मकसद के साथ इसे संस्थागत रूप दिया गया। केंद्र में बाद की सरकारों ने भी वित्तीय अनियमितता और खुलेआम भ्रष्टाचार की इसी रवायत को कायम रखा और कभी भी बेईमान अफसरों और नेताओं के खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं की गई। दूसरी तरफ राज्य ने हमेशा तनाव को अपनी गड़बड़ियों को ढांकने के लिए मोलभाव के औजार के रूप में इस्तेमाल किया। तुष्टीकरण की राजनीति, जिसके चलते कश्मीर की राजनीति में भ्रष्टाचार रच-बस गया था, ने एक और बाईप्रोडक्ट को जन्म दिया। इसने कट्टरपंथियों को खुली छूट देने के साथ ही कश्मीरियों में अलगाव की भावना को जन्म दिया। इससे पाकिस्तान समर्थित अलगाववादियों, कट्टरपंथियों और मुख्यधारा के राजनेताओं को स्थानीय लोगों की भावनाओं से खेलने का जरिया और घाटी के कुंठित युवाओं को नई दिल्ली के खिलाफ भड़काने का मौका मिल गया। हम कह सकते हैं कि राज्य सरकार ने अपनी स्वायत्तता का इस्तेमाल ना तो समता, समानता और समाज के कल्याण के लिए किया, ना ही केंद्र ने ऐसी स्वायत्तता के खुले दुरुपयोग पर रोक लगाने के लिए कुछ किया।

G.L Patel
Director

Dali Chand Patel

JAI LAXMI
LANDCON PVT. LTD

407-408, 4th Floor, Krishna Complex
Hazareshwar Colony, Udaipur 313 001

Telefax : 0294-2417199
E-mail : laxmilandcon@yahoo.com
Website : www.jailaxmilandconpvt.com

ब्रह्मांड का रहस्य खोजने वाले स्टीफन हॉकिंग

अनंत आकाश की यात्रा पर

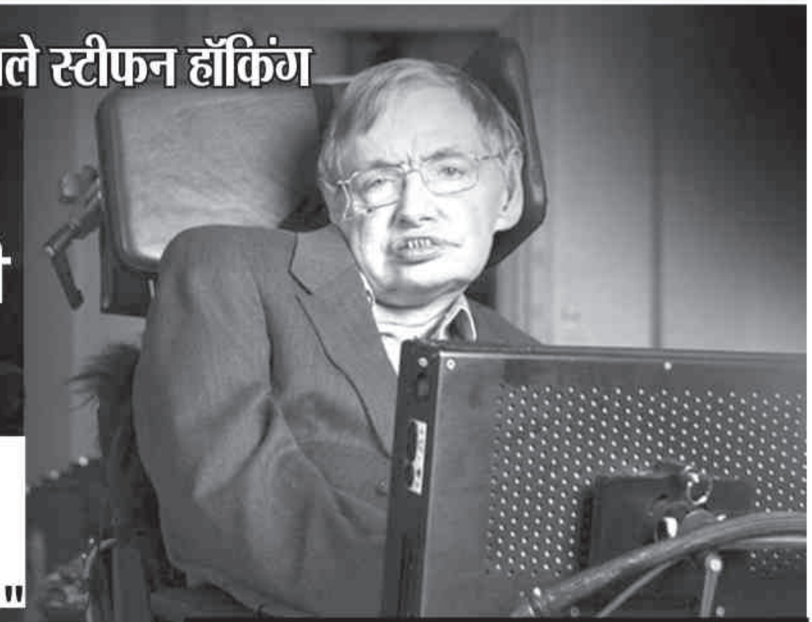

"मृत्यु से डर नहीं लगता, लेकिन उसकी जल्दी भी नहीं है। बहुत काम करने हैं। जीवन जिज्ञासु बने। कदमों की तरफ नहीं, सितारों की ओर देख आगे बढ़ें।

-स्टीफन हॉकिंग"

- जगदीश सालवी

आधुनिक युग के महानतम वैज्ञानिक और खगोल विशेषज्ञ स्टीफन हॉकिंग का 14 मार्च को निधन हो गया। वे दुर्लभ बीमारी को मात देने वाले महान भौतिक विज्ञानी तो थे ही मजबूत शख्स के तौर पर भी दुनिया में सभी के पसंदीदा रहे। स्टीफन 21 साल के थे तभी, डॉक्टरों ने उन्हें कहा था कि वह सिर्फ 2 साल और जीएंगे। बावजूद इसके वे मौत से 55 साल डटकर लड़े और लोगों को जीने का असली फलसफा सीखा गए। हॉकिंग ने ब्रह्मांड के रहस्यों को समझने में दुनिया की मदद की। उनकी जिंदगी भी उनकी खोजों की तरह ही लोगों को हैरान कर देने वाली है। 1974 में स्टीफन हॉकिंग ने दुनिया को अपनी सबसे महत्वपूर्ण खोज ब्लैक होल थिअरी के बारे में बताया था। उन्होंने बताया कि ब्लैक होल क्वॉन्टम प्रभावों की वजह से गर्मी फैलाते हैं। इसके 5 साल बाद ही वे कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में गणित के प्राफेसर बने। ये वही पद था जिस पर कभी महान वैज्ञानिक ऐलबर्ट आइंस्टाइन नियुक्त थे। हॉकिंग कहते थे विकलांगता नाम की कोई चीज नहीं होती। इंसानी निश्चय से बढ़कर दुनिया में कोई ताकत नहीं है। अपनी इसी बात पर आखिर तक कायम रहे और इसी की बदौलत उन्होंने वो तमाम शोहरत हासिल की और उन तमाम सवालों के जवाब ढूंढे जिनकी आम इंसान कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। उनके चले जाने से उनकी व्हीलचेयर पर लगे कम्प्यूटर और कई तरह के उन्नत उपकरण ही विरान नहीं हुए बल्कि पूरा ब्रह्मांड भी रिक्त हो गया है। यूं लग रहा है जैसे स्टीफन कुछ दिनों के लिए अनंत आकाश की यात्रा पर निकल पड़े हैं।

मौत को भी दी मात

हॉकिंग को 21 साल की उम्र में एमीट्रोफिक लैटरल स्क्लेरोसिस (ALS) नामक गंभीर बीमारी हो गई थी। उनके शरीर का 92 प्रतिशत हिस्सा काम नहीं करता था। फिर भी वे दुनिया के 700 करोड़ लोगों में एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने जिंदगी भर 100 प्रतिशत दिया। हैरानी वाली बात ये है कि बीमारी की वजह से उनके शरीर के अंग क्रमश: काम करना बंद करते गए और स्टीफन नए कीर्तिमान गढ़ते गए। 1963 में उनके अंदर एमियोट्रॉफिक लेटेरल स्लेरोसिस बीमारी डिटेक्ट हुई थी। उनके दोनों पैरों ने काम करना बंद कर दिया। डॉक्टरों ने भी 2 साल और जिंदा रहने की बात कही। इस दौरान उन्होंने गुरुत्वाकर्षण पर पहली रिसर्च पूरी की। जिसमें उन्होंने बताया कि पृथ्वी से बाहर ग्रैविटी का क्या असर रहता है। 1970 में उनके दोनों हाथ बेकार हो गए। ऐसे में बिस्तर से उठना ही असंभव हो गया था। इसी समय उन्होंने ब्लैक होल पर रिसर्च कर बताया कि ब्लैकहोल के पास जाने वाली हर चीज उसमें समा जाती है। 1980 में जब उनकी आवाज भी बंद हो गई तो आंखों और उंगलियों के इशारे से बात करने लगे। इस दौरान उन्होंने बिग-बैंग थ्योरी पर शोध किया

हॉकिंग का सफरनामा

8 जनवरी, 1942
हॉकिंग का जन्म ब्रिटेन के केंब्रिज में हुआ। उनके पिता रिसर्च बायोलॉजिस्ट थे और मां अर्थशास्त्र की छात्रा। द्वितीय विश्व युद्ध के साथ उनको लंदन जाना पड़ा। वहीं पले-बढे।

1959 : ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पढने के लिए स्टीफन हॉकिंग को स्कॉरशिप मिली। वहां उन्होंने प्राकृतिक विज्ञान में स्नातक की डिग्री हासिल की।

1962 : कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में स्टीफन हॉकिंग ने कोस्मोलॉजी में रिसर्च शुरू की।

1963 : हॉकिंग 21 वर्ष की आयु में मोटर न्यूरॉन (एएलएस) की गंभीर बीमारी की चपेट में आए।

14 जुलाई 1965 : स्टीफन हॉकिंग ने जेन विल्डे से शादी की।

1967 : हॉकिंग और विल्डे से एक रॉबर्ट हुआ। इसके तीन साल बाद लूसी को जन्म दिया।

1974 : महज 32 साल की उम्र में हॉकिंग रॉयल सोसायटी का सदस्य चुना गया। वे इस उपलब्धि को हासिल करने वाले सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे।

1979 : हॉकिंग कैम्ब्रिज में गणित के प्रोफेसर बने। इससे पहले इस जगह पर आइजैक न्यूटन भी रह चुके है।

1995 : वे अपनी पहली पत्नी जेन विल्डे से अलग हुए और उन्होंने ऐलन मेसन नाम की नर्स से दूसरी शादी की। वर्ष 2007 में उनका ऐलन से तलाक हो गया।

2009 : अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने स्टीफन को मेडल ऑफ फ्रीडम से नवाजा, जो अमेरिका का बड़ा सम्मान है।

14 मार्च, 2018 : 'ईश्वर को पासों का खेल पसंद है। वह उस समय अपने पासे फेंकता है, जब कोई देख नहीं रहा होता।' इसी अंदाज में इस महान, हिम्मती और जिंदादिल वैज्ञानिक ने इस असार संसार को अलविदा कहा।

और बताया कि धरती कैसे बनी। अभी इसका जो स्वरूप है, वो कैसे निर्धारित हुआ। उन्होंने कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी की मदद से लाइफ सपोर्ट सिस्टम तैयार कराया। स्पेशल स्पेलिंग कार्ड बनाए, जिससे वे बातें करते, लेक्चर देते और सवाल-जवाब करते। 1986 में न्यूमोनिया से हालत बिगड़ी तो उनके शरीर का अंदरूनी सिस्टम बिगड़ गया। वजन 40 किलो घट गया। कम्प्यूटर प्रोग्राम के जरिये रिसर्च जारी रखी। इस दौरान उन्होंने बताया कि ब्रह्मांड का कोई आदि-अंत नहीं है। ये भी बताया कि बिग बैंग से पहले धरती कैसी थी। 1990 में उंगलियों की हलचल खत्म हुई और मांसपेशियों ने काम करना बंद दिया तब उनका वजन 30 किलो घट गया लेकिन उन्होंने स्पीच सिंथेसाइजर के जरिये बातें और अध्ययन जारी रखा। उन्होंने बिग बैंग पर नई रिसर्च कर बताया कि पृथ्वी का आकार घट-बढ़ सकता है। 1996 में उनके शरीर के 92 प्रतिशत हिस्से ने काम करना बंद कर दिया सिर्फ दिमाग और आंखें ही काम करती रही। इसके लिए उन्होंने खास व्हीलचेयर तैयार कराई, जो उनकी पहचान बन गई। बाकी जिंदगी इसी पर गुजरी। इसी साल उन्होंने 'द नेचर ऑफ स्पेस एंड टाइम' का छह शृंखला में व्याख्यान दिया।

खास डिवाइस से करते थे सारे काम

हॉकिंग चल फिर नहीं सकते थे और हमेशा व्हील चेयर पर रहते थे। वे कम्प्यूटर और तमाम डिवाइसों के जरिए अपने शब्दों को व्यक्त करते थे। उन्होंने इसी तरह से भौतिकी के बहुत से सफल प्रयोग भी किए।

स्वर्ग की परिकल्पना को किया था खारिज

स्टीफन हॉकिंग ने स्वर्ग की परिकल्पना को सिरे से खारिज करते हुए इसे अंधेरे से डरने वाली कहानी बताया था। उन्होंने कहा था कि हमारा दिमाग एक कम्प्यूटर की तरह है जब इसके पुर्जे खराब हो जाएंगे तो यह काम करना बंद कर देगा। खराब हो चुके कम्प्यूटरों के लिए स्वर्ग और उसके बाद का जीवन नहीं है। स्वर्ग केवल अंधेरे से डरने वालों के लिए बनाई गई कहानी है।

किताब ने मचाया तहलका

उन्होंने 15 किताबें लिखी थीं। जिनमें कई बालोपयोगी भी थीं। वर्ष 1988 में प्रकाशित हुई 'अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' ने पूरी दुनिया में तहलका मचाया। इस किताब की 237 सप्ताह तक मार्केट में डिमांड रही और ये बेस्ट सेलर किताब साबित हुई। इसमें उन्होंने ब्रह्मांड विज्ञान के मुश्किल विषयों जैसे 'बिग बैंग थिअरी' और ब्लैक होल को इतने सरल तरीके से प्रस्तुत किया कि एक साधारण पाठक भी उसे आसानी से समझ जाए। इस किताब की लाखों प्रतियां हाथों-हाथ बिक गई। हालांकि, स्टीफन हॉकिंग को इस किताब के लिए विरोध का भी सामना करना पड़ा क्योंकि इसमें इन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को ही नकार दिया।

... तो धरती बन जाएगी आग का गोला

बीते साल ही स्टीफन हॉकिंग ने यह चेतावनी दी थी कि धरती पर जिस तेजी से आबादी और ऊर्जा की खपत बढ़ रही है, उस तरह से 600 सालों से भी कम समय में यह धरती आग का गोला बन जाएगी।

थीसिस को 20 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा

स्टीफन हॉकिंग के पीएचडी शोधपत्र को सार्वजनिक करने के कुछ ही दिनों में इसे दुनियाभर के 20 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा था। यह शोध इतना लोकप्रिय हुआ कि इसे जारी करते ही कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी की वेबसाइट ठप हो गई।

भारत भी आए थे हॉकिंग

2001 में स्टीफन हॉकिंग भारत भी आए थे। तब उन्होंने भारतीयों की बुद्धिमता की काफी तारीफ की थी। उन्होंने कहा कि भारतीय भौतिकी व गणित में निपुण होते है। 16 दिन के इस दौरे में उन्होंने मुंबई स्थित टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च में अंतरराष्ट्रीय फिजिक्स सेमिनार को भी संबोधित किया। स्ट्रिंग 2011 कॉन्फ्रेंसस दौरान

उन्हें सरोजनी दामोदरन फैलोशिप से भी सम्मानित किया गया। महिंद्रा एंड महिंद्रा की एकमोडेटेड व्हीलचेयर में उन्होंने दिल्ली व मुंबई का दौरा भी किया था। साथ ही तत्कालीन राष्ट्रपति केआर नारायणन के साथ मुलाकात को उन्होंने कभी न भूलने वाले पल बताये। दिल्ली के प्रमुख पर्यटन स्थलों में उन्होंने जंतर-मंतर और कुतुब मीनार को भी काफी देर तक निहारा।

स्टीफन हॉकिंग ने दुनिया को ये दिया

भौतिक विज्ञान में अहम योगदान : भौतिक विज्ञान में हॉकिंग का योगदान काफी अहम रहा है। उन्होंने कई अलग-अलग लेकिन समान रूप से मूलभूत क्षेत्र जैसे गुरुत्वाकर्षण, ब्रह्मांड विज्ञान, क्वांटम थ्योरी, सूचना सिद्धांत और थर्मोडायनमिक्स पर काम किया था।

ब्लैकहोल और बिग बैंग : हॉकिंग का सबसे उल्लेखनीय काम ब्लैक होल के क्षेत्र में रहा। उन्होंने ब्लैक होल के ऑरिजिन, उसकी कार्यप्रणाली और टाइम ट्रैवेल में उसकी भूमिका के बारे में भी बताया है। जिस थ्योरी के लिए वह सबसे ज्यादा जाने जाते हैं वह है बिग बैग थ्योरी। इसमें उन्होंने यूनिवर्स की शुरुआत की जानकारी दी। उनकी इस थ्योरी को ही सबसे ज्यादा अफेटिव माना जाता है।

थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी : महान साइंटिस्ट आइंसटाइन की थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी पर काम करते हुए उन्होंने इसे बेहद बारीकी और सरलता के साथ समझाया। उनके फलसफे को सामान्य सापेक्षता (जेनरल रिलेटिविटी) के नाम से जाना जाता है। ये फलसफे भी काफी मशहूर हुए।

हॉकिंग और अहम संयोग

हॉकिंग के जन्म के ठीक 300 साल पहले 8 जनवरी 1642 को अंतरिक्ष वैज्ञानिक गैलीलियो का निधन हुआ था। गैलीलियो का निधन जहां 77 साल की उम्र में हुआ था, वहीं हॉकिंग ने 76 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा किया। जिस कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में गैलीलियो लूकेसियन प्रॉफेसर ऑफ मैथमैटिक्स थे, हॉकिंग भी इसी पद पर नियुक्त हुए। 14 मार्च को हॉकिंग का देहांत हुआ। ये संयोग ही है कि इसी दिन महान साइंटिस्ट अल्बर्ट आइंसटीन का जन्म हुआ था। हॉकिंग का आईक्यू (इटेलीजेंस क्रोशेट) आइंसटीन के बराबर (160) ही था। यही कारण है कि बहुत से लोग उन्हें आइंसटाइन का उत्तराधिकारी भी मानते हैं।

उनकी किताब पर बनी फिल्म को मिला ऑस्कर

हॉकिंग की किताब 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' पर हॉलीवुड में ' थ्योरी ऑफ एवरीथिंग' नाम से फिल्म बनी। इस फिल्म को 2014 में ऑस्कर पुरस्कार मिला। हॉकिंग टीवी शो और धारावाहिकों में भी हिस्सा लेते रहे।

नए राहुल, नई कांग्रेस और नए अध्यक्ष

कांग्रेस के महाअधिवेशन में राहुल गांधी बोले-बीजेपी कौरवों की तरह मद में चूर

उमेश शर्मा

18 मार्च को कांग्रेस पार्टी के महाअधिवेशन में जो देखने को मिला वो इस बार कुछ नया था। जो नया था उनमें 'नए राहुल गांधी, नई कांग्रेस और नया अध्यक्ष'। 'नए राहुल गांधी' इसलिए कि उन्होंने महाधिवेशन में अब तक का सबसे प्रभावशाली भाषण देकर सभी को चौंका दिया। भाषण आत्मविश्वास और जोश से भरा था। जिसमें महाभारत थी, हिन्दू धर्म को परिभाषित करने का राजनीतिक रिस्क था, कांग्रेस के सत्ता में आने पर उनकी नीतियों की हल्की सी झलक थी, पार्टी में पैराशूट की राजनीति के खिलाफ और अनुशासन रखने की छिपी चेतावनी भी थी, प्रतिद्वंदी भाजपा को अपने डरपोक न होने का संदेश था और कांग्रेस सदस्यों को बताने की कोशिश थी कि 2019 का चुनाव कांग्रेस के लिए ऐसी ऊंचाई नहीं, जिसे वह छू न सके। इस अधिवेशन में राजस्थान, मध्यप्रदेश, यूपी-बिहार उपचुनाव में जीत की धमक साफ सुनाई दे रही थी। जीत की खुशी लगातार तालियों में तब्दील हो रही थीं। अधिवेशन इस बात का भी संकेत था कि कांग्रेस में आने वाले दिनों में बड़े परिवर्तन होने वाले हैं। राहुल के भाषण के घंटे भर बाद ही भाजपा की वरिष्ठ नेता और केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण ने पार्टी की ओर से प्रतिक्रिया देते हुए इमरजेंसी और सिख दंगों के पुराने मुद्दों के जरिये राहुल के भाषण के प्रभाव को धोने की कोशिश की, लेकिन सच यह है कि राहुल अपने भाषण से आम कांग्रेस कार्यकर्ता और एक आम हिन्दुस्तानी को अपना संदेश देने में सफल रहे। उन्होंने कांग्रेस में आम कार्यकर्ता के महत्व को उजागर किया और साफ संदेश दिया है कि पार्टी में अब बुजुर्गों की मदद के लिए युवा आने वाले हैं। उन्होंने कांग्रेस को 'पांडव' और 'भाजपा' को कौरव बताते हुए पार्टी की गांधीवादी छवि उजागर करने की कोशिश की। राहुल ये बताने में भी सफल रहे कि उनके नेतृत्व में कांग्रेस एग्रेशन और एरोगेंस की राजनीति नहीं करेगी। प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह पर सीधा हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि वे उनसे सीधी टक्कर को तैयार हैं। राहुल ने बार-बार भाजपा को संघ से जोडक़र यह भी संदेश देना चाहा कि देश में एक खास विचारधारा न्यायपालिका से लेकर हर संवैधानिक संगठन पर काबिज हो रही है और इससे में देश पर एक बड़ा खतरा मंडराने वाला है। उन्होंने युवाओं, किसानों को भी अपने भाषण में फोकस किया। गांधी ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से कहा कि 2019 का चुनाव उन्हें मिलजुलकर लडऩा है और इसके लिए वे नहीं चाहते कि पार्टी में कोई मनमुटाव हो।

भाजपा और संघ कौरवों की तरह सत्ता के लिए जबकि कांग्रेस पांडवों की तरह सत्य के लिए लड़ रही है। जब यह जरूरी होता है कि किसी मुद्दे पर प्रधानमंत्री बोलें तो वे चुप हो जाते हैं। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस पार्टी ही 2019 के लोकसभा चुनाव जीतेगी। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी केंद्र की मोदी सरकार पर हमला बोलते हुए उस पर देश की इकॉनोमी को बर्बाद करने का आरोप लगाया। मनमोहन ने कहा कि कश्मीर के हालात दिन-ब-दिन बिगड़ते जा रहे हैं। जम्मू-कश्मीर से संबंधित पक्षों से संवाद की वकालत करते हुए पूर्व पीएम ने कहा कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है। लेकिन हमें वहां की कुछ समस्याओं को भी समझना और उनसे गंभीरता के साथ निपटना होगा।

नोटबंदी एक बड़ी गलती

राहुल ने कहा कि भाजपा ने नोटबंदी लागू कर बड़ी गलती की। कांग्रेस होती तो मान लेती, लेकिन प्रधानमंत्री ने अपनी गलती नहीं मानी। गब्बर सिंह टैक्स (जीएसटी) लागू करने से लाखों लोग बेरोजगार हो गए। लेकिन मोदीजी को

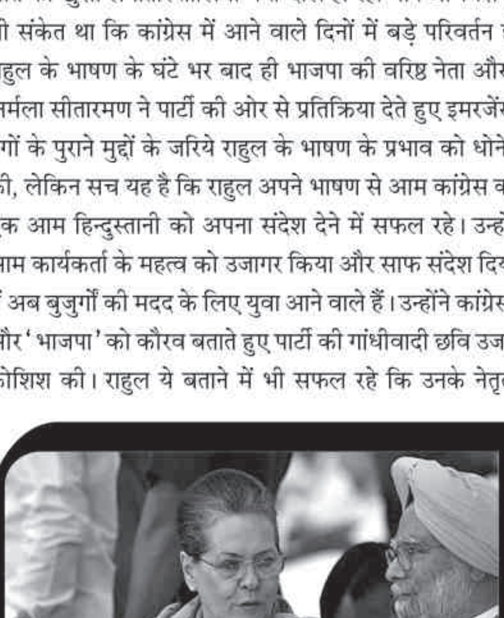

सोनिया ने कहा-कांग्रेस लोगों के दिलों में

कांग्रेस संसदीय दल की नेता और यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी ने सत्तारूढ़ दल की ओर से देश को कांग्रेस मुक्त करने के अभियान पर करारा जवाब दिया। उन्होंने कहा कि जो लोग हमारे अस्तित्व को मिटाना चाहू है, उन्हें पता नहीं कि कांग्रेस किस तरह लोगों के दिलों में हैं। महाधिवेशन को संबोधित करने जब सोनिया मंच पर पहुंची तो वहां मौजूद सभी नेता और देशभर से आए कार्यकर्ताओं ने तालियों की गडग़ड़ाहट के साथ खड़े होकर उनका स्वागत किया। इससे सोनिया भी भावुक हो गई। सोनिया ने बेहद भावुक अंदाज में कहा कि ये एक ऐसी दुनिया है, जहां वह कभी नहीं आना चाहती थीं। पर पार्टी लगातार कमजोर हो रही थी। लिहाजा, कार्यकर्ताओं की भावना का सम्मान करते हुए उन्होंने यह जिम्मेदारी संभाली।

लगता है कि वह भगवान के अवतार हैं, उनसे गलती नहीं हो सकती है।

कांग्रेस ने गलती स्वीकारी

राहुल गांधी ने अपनी पार्टी की गलतियां भी स्वीकार की। उन्होंने पार्टी संगठन को भी एकजुट रहने की बात कर बदलाव के कड़े संदेश भी दिए। पार्टी अध्यक्ष ने कहा, पिछली सरकार के कुछ साल में हमने देश के लोगों की भावना का सम्मान नहीं किया। इसकी सजा लोगों ने हमें दी।

राहुल के भाषण की खास बातें

वर्कर्स-नेताओं के बीच दीवार गिराएंगे : राहुल ने कहा कि पैराशूट नेताओं को नहीं बल्कि पार्टी वर्कर्स को टिकट मिलेगा। अभी वर्कर्स और बड़े पार्टी नेताओं के बीच एक दीवार है जिसे प्रेम से गिराना है। युवाओं की शक्ति के बिना देश को बदला नहीं जा सकता है।

किसान मर रहे, पीएम योगा करवा रहे : मोदी सच स्वीकारने की जगह आभासी दुनिया की सैर करा रहे हैं। सर्जिकल स्ट्राइक, योग परेड की बात करते हैं। हमारे किसान मर रहे हैं, पीएम कहते हैं कि चलो इंडिया गेट के सामने योग करते हैं। आज दुनिया में दो विजन दिखाई दे रहे है। एक अमेरिका का विजन और एक चीन का। राहुल बोले-मै 10 सालों में तीसरा विजन लाना चाहता हूं, भारत का विजन, ताकि लोग कहें कि ये है असली विजन।

संघ पर साधा निशाना : राहुल गांधी ने कहा कि संघ वाले मुसलमानों से कहते है कि पाकिस्तान चले जाओ, नॉर्थ ईस्ट के लोगों से कहते है आपका खाना पंसद नहीं तो तमिलों से कहते हैं कि आपकी भाषा पंसद नहीं।

उनके नेता अंग्रेजों से माफी मांग रहे थे : बीजेपी एक संगठन की आवाज है, कांग्रेस देश की आवाज है। जब हमारे नेता ब्रिटिश जेलों की जमीन पर सो रहे थे तो इनके नेता सावरकर ब्रिटिशों को खत लिखकर माफी मांग रहे थे।

क्या है इस मौसम की ख़ास ज़रूरत

गर्मी के मौसम में शरीर का विशेष ध्यान रखने की ज़रूरत है। तेज धूप में घर-दफ्तर से बाहर निकलने से बचें। साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। कपड़े भी वे ही पहनें जो प्राकृतिक रेशों से निर्मित हों। खान-पान का ध्यान रखना और थोड़ी-थोड़ी देर बाद पानी पीते रहना भी इस मौसम में शरीर की ख़ास ज़रूरत है।

गर्मी का मौसम प्रारंभ हो गया है। आम आदमी की चिंता है कि झुलसा देने वाले लू के थपेड़ों और सूरज की चमचमाती किरणों की तपन में खुद को स्वस्थ और तरोताजा कैसे रखें। डॉक्टरों की मानें तो गर्मियों का मौसम बीमारियों का मौसम है। इन दिनों अस्पतालों में आने वाले रोगियों की संख्या बाकी मौसमों के मुकाबले अधिक होती है। इसलिए बदलते मौसम के साथ जीवनशैली में बदलाव लाना बहुत जरूरी है। करीब तीन माह तक चलने वाली गर्मियों में क्या खाएं, क्या पहनें और कैसे रखें खुद को कूल, उसके लिए कुछ तैयारियां ज़रूरी हैं।

डीहाइड्रेशन से बचें

गर्मी के मौसम में शरीर में पानी का सामान्य स्तर बनाए रखना बहुत जरूरी है। तेज धूप और गर्मी में बाहर निकलने से बचें, क्योंकि इससे शरीर का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है, जो डीहाइड्रेशन का कारण बन सकता है। गर्मियों में डीहाइड्रेशन से बचने के लिए कम से कम तीन-चार लीटर पानी पिएं। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि एक बार में ज्यादा पानी न पिएं। खाने के तुरन्त बाद भी पानी न पिएं, कम से कम आधे घंटे का अंतराल दें। इसके अलावा नारियल पानी, नींबू पानी, बेल शर्बत आदि का भी सेवन करें।

संक्रमण का खतरा

तापमान बढ़ने से संक्रमण का खतरा भी बढ़ जाता है, इसलिए इस मौसम में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। गर्मियों में पसीना अधिक आने से रोगाणु त्वचा के संपर्क में आसानी से आ जाते हैं, जिससे कई बीमारियां फैलती हैं।सबसे अधिक संक्रमण गंदे हाथों से ही फैलता है। अच्छी तरह से हाथ धोना कई प्रकार के संक्रमणों से बचने का आसान और सरल उपाय है।

खानपान में बदलाव

गर्मियां शरीर को बुरी तरह प्रभावित करती हैं। इस मौसम में बाहरी तापमान बढ़ने से ताप भी बढ़ जाता है, इसलिये ऐसे भोजन का सेवन करना चाहिए, जो हमें ठंडा रखे। गर्मियों में पाचन-तंत्र भी कमजोर पड़ जाता है, इसलिये ताजा और हल्का भोजन करना चाहिए। मौसमी फल और सब्जियों का सेवन करें।

सूती कपड़ों को दें तरज़ीह

गर्मियों में तेज धूप, तापमान में अत्यधिक बढ़ोतरी और पसीना आने की समस्या को देखते हुए कपड़ों का चयन भी सोच-समझकर करना चाहिए। इस मौसम में प्राकृतिक रेशों जैसे कॉटन और लिनन से बने कपड़ों को प्राथमिकता देते हुए पॉलिएस्टर और नायलॉन जैसे सिंथेटिक कपड़े पहनने से बचना चाहिए। यह ऊष्मा को रोक लेते हैं। हल्के रंग के कपड़े पहनें। ऐसे कपड़े ऊष्मा को कम मात्रा में अवशोषित कर शरीर को ठण्डक का अहसास कराते हैं। कपड़े ढीले और आरामदायक होने चाहिए।

योग-व्यायाम न छोड़ें

कुछ लोग गर्मियों में व्यायाम और योग करना छोड़ देते हैं। ऐसा कतई न करें। योग की हर क्रिया से कुछ न कुछ स्वास्थ्य लाभ अवश्य होता है, इसलिए अपने स्वास्थ्य को देखते हुए योगासनों का चयन करें। अनुलोम-विलोम, शवासन, कपालभाती प्राणायाम, वृक्षासन, ताड़ासन ऐसे योगासन कारगर हैं। इस बात का ध्यान रखें कि जिस स्थान पर व्यायाम करें, वह ठंडा और हवादार हो। यदि आप व्यायाम-योग नहीं करते तो तड़के नजदीक के बगीचे में कुछ देर के लिए घूमने अवश्य जाएं। इन कुछ बातों पर आपने ध्यान दिया हो तो न सिर्फ तन बल्कि मन भी रहेगा प्रसन्न।

- डॉ. अर्चना शर्मा

AKME GROUP OF COMPANIES

AKME FINTRADE (I) LTD.
(RBI Reg. No. 10.00092)

AKME FINCON PVT LTD.
(RBI Reg. No. B.10.00119)

AKME STAR HOUSING FINANCE LTD.
(NHB Reg. No. 08.0076.09)

AKME BUILD ESTATE PVT. LTD.

AKME PROPERTY & BUILDERS

TVS

AKME TVS

TVS KING
ऑटोवों का राजा

(Akme Automobiles Pvt. Ltd.)

(Authorised Dealer of TVS Motor Company for Two Wheeler & Three Wheeler)

AKME BUSINESS CENTRE
4-5, Subcity Centre, Savina Circle, Udaipur (Raj.) 313 002
Ph. : 0294-2489502/03/04, 2481244

फड़ कला के पर्याय थे श्रीलाल जोशी

– नटवर त्रिपाठी

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत के समन्दर में श्रीलाल जोशी(89)फड़ शिल्प के बिरले रत्न थे। फड़ परम्परा ऐसी सरिता है जो कला के मूल तत्वों को अपने में समाए नये प्रवाह बनाती है और कलाधर्मियों के लिए नये द्वार खोलती है। फड़ की ग्रामीण पारंपरिक चित्रांकन शैली को जर्मनी, जापान, अमरीका, फ्रांस, स्वीडन, सिंगापुर, हॉलेण्ड, आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान सहित अनेक देशों में जोशी ने नई पहचान दी। पद्मश्री के राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित श्रीलाल जोशी ने 2 मार्च की शाम भीलवाड़ा स्थित अपने आवास चित्रशाला में अंतिम सांस ली। उनके दो पुत्र कल्याण जोशी और गोपाल जोशी भी फड़ चित्रकला में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित हैं। जोशी ने 20 से अधिक देशों में अपनी कला का प्रदर्शन कर स्वदेश को गौरवान्वित किया। विश्व के कई प्रसिद्ध संग्रहालयों में उनकी कलाकृतियां भारतीय कला की अमूल्य धरोहर बन चुकी हैं। जोशी का जन्म 5 मार्च 1931 को भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा में हुआ। शाहपुरा को सदियों से फड़ कला का घर माना जाता रहा है। उनके पिता रामचन्द्र जोशी ने 13 साल की उम्र में ही पुत्र को इस पारम्परिक और पारिवारिक कला से जोड़ दिया था। पिता प्रज्ञाचक्षु होने के बावजूद कला के ऐसे चितेरे और पारखी थे कि बेटे ने उनके अनुभवों को समेटने के लिए हर क्षण का भरपूर उपयोग किया। पाबूजी और देवनारायण की फड़ कला को इन्होंने पिता के साथ इतनी ऊंचाई पर पहुंचाया कि देशी-विदेशी छात्रों ने इस शिल्प को शोध का माध्यम बनाया। फड़ कला को लेकर 1978 में सुप्रसिद्ध फिल्म निर्देशक मणिकौल सहित कई लोगों ने डॉक्यूमेन्ट्री भी बनाई।

इन्होंने समकालीन शैली विकसित कर फड़ कला को नई पहचान और प्रसिद्धि का नया आयाम प्रदान किया। इन्होंने अपनी एक खुद की शैली विकसित की। कई नई तकनीकों की खोज की और कई मौलिक और सार्थक रचनाओं को चित्रित किया। इन्हें दीवार पेंटिंग के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

पुरस्कार

1969, 72, 74 में जोशी को नेशनल मेरिट अवार्ड, 1984 में नेशनल अवार्ड, 1989 में भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर द्वारा सिल्वर अवार्ड, 1989 में हरियाणा सरकार द्वारा कलाश्री अवार्ड, 1994 में कलकत्ता के मरूधरा संस्थान द्वारा भुवालका पब्लिक वेलफेयर अवार्ड, 2006 में पद्मश्री सम्मान, 2007 में संगीत श्यामला अवार्ड व शिल्पगुरु अवार्ड आदि प्रदान किये गये।

इतिहास को चित्रों में उकेरा

जोशी ने देवनारायण महागाथा हल्दीघाटी की लड़ाई पद्मिनी का जौहर महाराणा प्रताप का संघर्ष पृथ्वीराज चौहान, रानी हाड़ी, ढोला-मारू, अमर सिंह राठौड़, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर आदि के जीवन-दर्शन के साथ गीत गोविन्दम्, रामायण, महाभारत, कुमारसंभव आदि महाकाव्य एवं कथाओं को फड़ चित्र शैली में उतारा।

कला मर्मज्ञों ने थामा हाथ

राज्याश्रय पर विराम के बाद जब सरकारी संरक्षण भी इस कला को पर्याप्त नहीं मिल पाया तो जोशी परिवार ने इसे लुप्त होने से बचाने का संकल्प लिया। पारम्परिक कलाओं के शीर्षस्थ मर्मज्ञों पद्मश्री देवीलाल सामर, कलाविज्ञ कोमल कोठारी बोरून्दा सहित अनेक लोगों से मार्गदर्शन लिया। जिन्होंने इस कला को मंच देने में अहम भूमिका का निर्वाह किया। इन्होंने 20-25 हाथ लम्बी पुरानी फड़ गाथाओं को लघु स्वरूप में इस तरह से प्रस्तुत किया कि उसकी मौलिकता पर कभी कोई प्रश्न चिह्न नहीं लगा। उनके इस प्रयास से फड़ कला को एक समृद्ध बाजार भी मिला और कलाकारों को सम्मानपूर्वक जीवनयापन का साधन भी। कपिला वात्सायन और ज्योतिन्द्र जैन के सहयोग और आलेखों से देश-विदेश में फड़ चित्रण शैली का डंका बजने लगा। एक ऐसा समय भी आया जब श्रीलाल जोशी फड़ कला का पर्याय बन गए।

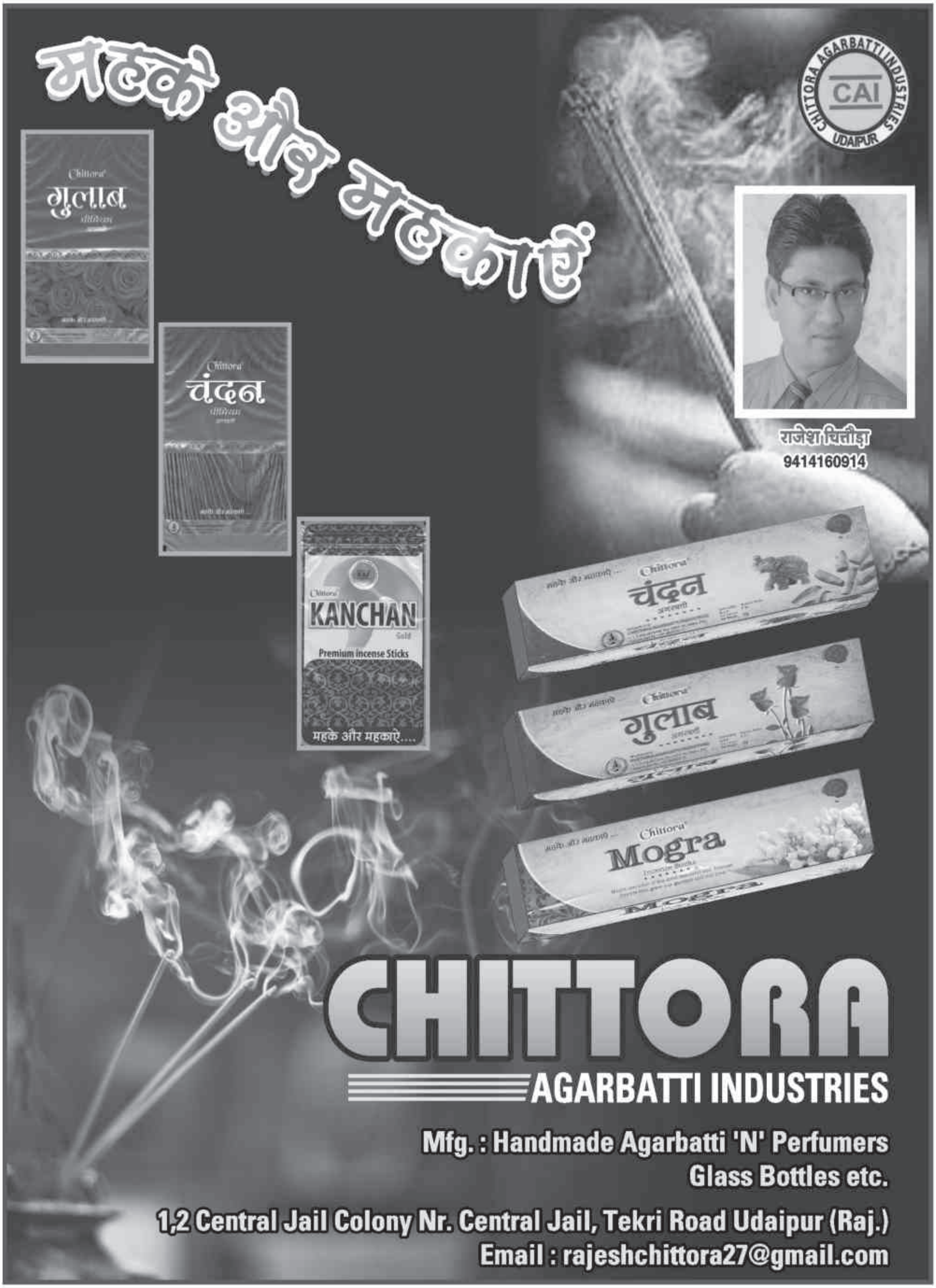

महके और महकाएं
CHITTORA AGARBATTI INDUSTRIES UDAIPUR
CAI
Chittora
गुलाब
Chittora
चंदन
Chittora
KANCHAN
Premium incense Sticks
महके और महकाऐ....
राजेश चित्तौड़ा
9414160914
चंदन
गुलाब
Mogra
CHITTORA
AGARBATTI INDUSTRIES
Mfg. : Handmade Agarbatti 'N' Perfumers
Glass Bottles etc.
1,2 Central Jail Colony Nr. Central Jail, Tekri Road Udaipur (Raj.)
Email : rajeshchittora27@gmail.com

शर्मनाक ! आदर्शों की 'छवि भंजक' राजनीति

त्रिपुरा में तोड़ी लेनिन की मूर्ति

देश के 4 राज्यों में 4 महापुरुषों की मूर्तियां तोड़ी, पूर्व में लेनिन, दक्षिण में पेरियार तो उत्तर में अंबेडकर की मूर्ति से छेड़छाड़

-रेणु शर्मा

सियासत में एक फॉर्मूला चल पड़ा है कि अगर किसी को तोड़ना है तो उसके उसूलों और प्रतीकों पर प्रहार करो और अगर जोड़ना है तो उसके आदर्शों प्रतीकों का गुणगान करो। 2014 आम चुनावों से पहले से लेकर अब तक, पीएम मोदी अपने भाषणों में कई बार भगत सिंह को याद करते रहे हैं। शहीदे आजम भगत सिंह पर खुद लेनिन का प्रभाव रहा है। लेकिन त्रिपुरा की जीत के बाद भाजपा को यह बात अखर गई। जब बात अखरी तो प्रतिक्रिया भी आनी ही थी। वैसे भी लेफ्ट के गढ़ माने जाने वाले त्रिपुरा में सालों से वामपंथी विचारों के विरोधी और खुद संघ लेफ्ट के किले को ढहाने की फिराक में था। जैसे ही त्रिपुरा में भाजपा ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की इसके बाद ही लेनिन की मूर्ति पर बुलडोजर चला दिया गया। मूर्ति गिराने वाले भारत माता के जयकारे लगा रहे थे तो इस आरोप का श्रेय बीजेपी के खाते में जाना लाजमी था। मूर्ति एक प्रतीक है और लेफ्ट मूर्तिपूजा का धुर विरोधी है। भले ही उनके आदर्श कहीं मूर्ति तो कहीं ममी के रूप में पूजे जा रहे हैं। जो लोग लेनिन की मूर्ति गिराने में आगे थे, वे भी खुद लेनिन के बारे में नहीं जानते होंगे। उन्हें इस बात का बिल्कुल अंदाजा नहीं होगा कि जिस लोकतंत्र का ढोल वामपंथी पीटते हैं उनके गुरू ने 'what is to be done' पर्चा लिखकर 'डेमोक्रेटिक सेन्ट्रिलज्म' की शुरुआत की और लोकतंत्र की हवा निकाल दी ? त्रिपुरा में कुछ दिन पहले चुनावी परिणाम के रूप में अगर वामपंथी मूल्य पराजित हुआ तो उसका दृश्य रूप मूर्ति ढहाने के साथ आया है। मूर्तियां गिराना उतना ही शर्मनाक है जितना अस्मितावादियों द्वारा मनुस्मृति जलाना, उसे कुचलना। अस्मितावादियों के लिये मनुस्मृति का जलाना एक टूल है जिससे बृहदतर रूप से दलित एकता को स्थापित करने की कोशिश की जाती है तो लेनिन को गिराना भी ऐसा ही टूल है जिससे दक्षिणपंथियों का एका बन सके। वरना, आज कौन कथित सवर्ण कथित दलित का मनुस्मृति पढ़कर शोषण करता है और कौन कॉमरेड लेनिन का सिद्धांत पकड़े चल रहा है। खैर कौन सही है या गलत, इसको लेकर फिलहाल इतना ही कहा जा सकता है कि राजनीति का अपना अखाड़ा है और आस्था एवं विश्वास का अपना डेरा। गौरतलब है कि चुनाव परिणामों के बाद 5 मार्च को भाजपा कार्यकर्ताओं ने त्रिपुरा के बेलोनिया में 11.5 फीट ऊंची लेनिन की प्रतिमा को बुलडोजर से गिरा दिया। 6 मार्च को भी राज्य में लेनिन की एक मूर्ति को तोड़ दिया। वहीं, 7 मार्च को सीपीआईएम कार्यकर्ताओं के हमले में भाजपा के पांच कार्यकर्ता घायल हो गए।

मूर्ति तोड़ सियायत

त्रिपुरा में लेनिन की मूर्ति तोड़ने के बाद पूरे देश में मूर्ति तोड़ने का ट्रेंड चल पड़ा हैं। यह बवाल त्रिपुरा से तमिलनाडु और उत्तर से पश्चिम तक जा पहुंचा और तीन दिन के अंतराल में ही 4 राज्यों में 4 महापुरुषों की मूर्तियां तोड़ने के मामले सामने आए। लेनिन की दो मूर्तियां तोड़ने के बाद तमिलनाडु में रामासामी पेरियार, बंगाल में श्यामा प्रसाद मुखर्जी और यूपी में डॉ. भीमराव अंबेडकर की मूर्ति तोड़ दी गई। पीएम ने इन घटनाओं की निंदा की और गृहमंत्री से बात की। बाद में गृह मंत्रालय ने राज्य सरकारों को कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए। इधर, माकपा के पूर्व महासचिव और वरिष्ठ नेता सीताराम येचुरी ने हिंसा को आरएसएस का असली चेहरा बताया। कांग्रेस के मल्लिकार्जुन खड़गे ने इसे बर्दाश्त न करने वाला कदम बताया। बीजेपी के महासचिव राम माधव ने इस मामले पर ट्वीट किया कि लोग लेनिन की मूर्ति गिराए जाने की चर्चा कर रहे हैं, रूस नहीं ये त्रिपुरा है, चलो पलटाई। राम माधव के ट्वीट से साफ जाहिर होता है कि लेनिन की मूर्ति गिराने पर बीजेपी की मौन सहमति थी। वहीं माकपा के ट्विटर एकाउंट पर इसकी कड़ी टिप्पणी की गई। पार्टी ने लिखा कि त्रिपुरा में चुनाव जीतने के बाद हुई हिंसा प्रधानमंत्री के लोकतंत्र पर भरोसे के दावों का मजाक उड़ाती है। राज्य में वामपंथी और उनके समर्थकों के बीच डर और असुरक्षा का माहौल पैदा करने की कोशिश की जा रही है। हिंसा की इस घटना के बाद आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला जमकर चला।

भगत सिंह के हीरो बने भाजपा के विलेन

त्रिपुरा में ये बात शायद मूर्ति गिराने वाले को भी पता नहीं होगी कि उन्होंने जिस व्यक्ति की मूर्ति गिराई है उनसे देश के रियल हीरो और शहीदे आजम भगत सिंह भी काफी प्रभावित थे। लेनिन को भगत सिंह कितना मानते थे इसका एक जिक्र वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैय्यर की किताब 'द मार्टिर : भगत सिंह-एक्सपेरीमेंट्स इन रेवोल्यूशन' में मिलता है। किताब के मुताबिक, 21 जनवरी, 1930 को अभियुक्त अदालत में लाल स्कार्फ पहनकर पहुंचे। जैसे ही मजिस्ट्रेट कुर्सी पर बैठे, उन्होंने 'लेनिन जिदाबाद' के नारे लगाने शुरू कर दिए। इसके बाद भगत सिंह ने एक टेलीग्राम पढ़ा जिसे वो लेनिन को भेजना चाहते थे। टेलीग्राम में लिखा था, लेनिन दिवस पर हम उन सभी लोगों को दिली अभिवादन भेजते हैं जो महान लेनिन के विचारों को आगे बढ़ा रहे हैं। हम

रूस में चल रहे महान प्रयोग की कामयाबी की कामना करते हैं। भगत सिंह को फांसी दिए जाने से दो घंटे पहले उनके वकील प्राण नाथ मेहता उनसे मिलने पहुंचे। मेहता ने बाद में लिखा कि भगत सिंह अपनी छोटी सी कोठरी में पिंजड़े में बंद शेर की तरह घूम रहे थे। उन्होंने मुस्करा कर मेहता का स्वागत किया और पूछा कि आप मेरी किताब 'रिवॉल्युशनरी लेनिन' लाए या नहीं? जब मेहता ने उन्हें किताब दी तो वो उसे उसी समय पढ़ने लगे मानो उनके पास अब ज्यादा समय नहीं हो। पत्रकार ऑनिनदयो चक्रवर्ती ने ट्वीट किया, बीजेपी भगत सिंह का सम्मान करती है। भगत सिंह लेनिन का सम्मान करते थे। लेकिन बीजेपी समर्थकों ने इस बात को दरकिनार कर दिया।

रूसी क्रांति के बाद लेनिन ही थे लिविंग लीजेंड

रूसी क्रांति के सबसे बड़े चेहरे व्लादीमीर लेनिन की अगुवाई में साल 1917 में बोल्शेविक क्रांति हुई थी। इस क्रांति के बाद लेनिन सिर्फ रूस ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में लिविंग लीजेंड बन गए। रूसी शहर गोर्की में लेनिन अपनी पत्नी के साथ एकाकी जीवन बिता रहे थे। 1922 के आखिरी महीनों के आते-आते लेनिन की सेहत खराब होने लगी और लकवे के चलते शरीर के आधे हिस्से ने काम करना बंद कर दिया। उनके लिए अब बोलना भी आसान नहीं था। रूसी क्रांति का जनक जिंदगी की जंग हारने वाला था। फिर वो दिन भी आ गया जब लेनिन इस दुनिया को छोड़कर चले गए। 21 जनवरी, 1924 की सुबह 6 बजकर 50 मिनट पर लेनिन की मौत हो गई दो दिन बाद उनके शव को विशेष रेलगाड़ी से गोर्की से मॉस्को लाया गया। मौत के बाद मॉस्को के रेड स्क्वायर पर क्रेमलिन की दीवार के पास ताबूत में लेनिन का शव लोगों के अंतिम दर्शन के लिए रखा गया। लाखों लोग भयंकर ठंड में भी अपने प्रिय नेता को अंतिम श्रद्धांजलि देने के लिए उमड़ पड़े थे। लेकिन लेनिन का शव आज जिस स्थिति में है, उसे इस स्थिति में लाना रूसी वैज्ञानिकों के लिए बेहद चुनौती भरा था। लेनिन की मौत से तीन महीने पहले 1923 में एक गोपनीय बैठक हुई। इस बैठक में ये तय किया जाना था कि मौत के बाद लेनिन के शव को लेकर क्या रणनीति होगी। इतिहासकारों के मुताबिक, सत्ता पर काबिज जोजेफ स्टालिन का प्रस्ताव था कि लेनिन का शव आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जाए।

पेरियार ने दलितों के समर्थन में चलाया था आंदोलन

इरोड वेंकट नायकर रामासामी को पेरियार के नाम से जाना जाता है। तमिलनाडु के लोकप्रिय नेताओं में से एक पेरियर का जन्म 17 सितम्बर 1879 को पश्चिमी तमिलनाडु के इरोड में एक सम्पन्न, परम्परावादी हिन्दू परिवार में हुआ था। दलितों के शोषण के पूर्ण विरोधी रामासामी बाल विवाह, देवदासी प्रथा, विधवा पुनर्विवाह के विरुद्ध अवधारणा, स्त्रियों तथा दलितों के शोषण के पूर्ण विरोधी थे। उन्होंने हिन्दू वर्ण व्यवस्था का भी बहिष्कार किया था। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के कहने पर 1919 में उन्होने कांग्रेस की सदस्यता ली। इसके कुछ दिनों के भीतर ही वे तमिलनाडु इकाई के प्रमुख भी बन गए। उन्होंने हमेशा से ही दलितों के सम्मान और अधिकारों के लिए काम किया। साथ ही कांग्रेस के नेताओं के समक्ष दलितों और पीड़ितों के लिए आरक्षण का प्रस्ताव भी रखा, जिसे मंजूरी नहीं मिल सकी। इसके बाद उन्होंने कांग्रेस ही छोड़ दी। उन्होंने दलितों के समर्थन में 1925 में पेरियार आंदोलन भी चलाया। यह आंदोलन नास्तिकता (या तर्कवाद) के प्रसार के लिए जाना जाता है।

यहां भी मूर्तियों से हुई छेड़छाड़

उत्तर प्रदेश

राज्य के मेरठ जिले के मवाना क्षेत्र में 6 मार्च को शरारती तत्वों ने भीमराव अंबेडकर की मूर्ति तोड़ दी। हालांकि, जल्द ही प्रशासन ने नई मूर्ति लगवा दी। इस मुद्दे को लेकर स्थानीय लोगों ने काफी देर तक हंगामा किया और मूर्ति को बदलवाने की मांग की। पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

तमिलनाडु

राज्य के वेल्लोर में 6 मार्च की रात को समाज सुधारक और द्रविड़ आंदोलन के संस्थापक ईवी रामासामी पेरियार की मूर्ति क्षतिग्रस्त कर दी गई। यह घटना भाजपा नेता एच राजा की एक फेसबुक पोस्ट के बाद हुई। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया। इनमें एक भाजपा व एक सीपीएम से जुड़ा है। वहीं, इसके बाद कोयंबटूर में भाजपा दफ्तर पर पेट्रोल बम से हमला किया गया।

पश्चिम बंगाल

7 मार्च को कोलकाता के कालीघाट में जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मूर्ति पर कालिख पोती गई। पुलिस ने मुखर्जी की प्रतिमा के साथ छेड़छाड़ के आरोप में सात लोगों को गिरफ्तार किया। पुलिस के मुताबिक सभी आरोपी लेफ्ट विंग से जुड़े हैं। इनमें 6 पुरुष और एक महिला शामिल है।

जेनेटिक्स

अनुवांशिक विविधताओं का अध्ययन

जेनेटिक्स करियर की संभावनाओं से भरपूर एक बेहतरीन विषय है। यह विषय देश-विदेश में रोजगार के मौके प्रदान करता है। वर्तमान में वैक्सिनेशन, टैस्ट ट्यूब बेबी, क्लोनिंग आदि का चलन चरम पर है। यह सब जेनेटिक्स की ही देन है। देश-विदेश में क्लोनिंग पर काफी प्रयोग हो रहे हैं। अभी यह प्रयोग जानवरों पर ही किए जा रहे हैं। इसके अलावा भी रोग के पैटर्न थैलीसीमिया, एनीमिया, कलर, ब्लाइंडनेस आदि पर भी तेजी से काम चल रहा है।

– शिल्पा नागदा

आनुवंशिकता(जेनेटिक्स) जन्मजात शक्ति है, जो प्राणी के रूप-रंग, आकृति, यौन, बुद्धि तथा विभिन्न शारीरिक व मानसिक क्षमताओं का निर्धारण करती है। आनुवंशिकता को समझने के लिए आवश्यक है कि पहले वंशानुक्रम को भली-भांति समझा जाए। मुख्यत: वंशानुक्रम उन सभी कारकों को सम्मिलित करता है, जो व्यक्ति में जीवन आरम्भ करने के समय से ही उपस्थित होते हैं यानी वंशानुक्रम विभिन्न शारीरिक व मानसिक गुणों का वह समूह है, जो जन्मजात होते हैं। आनुवंशिकता हमें क्षमताएं देती है और वातावरण उन क्षमताओं का विकास करता है।

क्या है जेनेटिक्स

जेनेटिक्स विज्ञान की ही एक शाखा है, जिसमें वंशानुक्रम एवं डीएनए में बदलाव का अध्ययन किया जाता है। इस काम में बायोलॉजिकल साइंस का ज्ञान काफी लाभ पहुंचाता है। जेनेटिसिस्ट व बायोलॉजिकल साइंटिस्ट का काम काफी मिलता-जुलता है। ये जीन्स और शरीर में होने वाली आनुवंशिक विविधताओं का अध्ययन करते हैं।

क्या काम है प्रोफेशनल्स का

जेनेटिक प्रोफेशनल्स का कार्य क्षेत्र काफी फैला हुआ है। इसमें जीव-जन्तु, पौधे व अन्य मानवीय पहलुओं का विस्तार से अध्ययन किया जाता है, जीन्स व डीएनए को सही क्रम में व्यवस्थित करने, पीढ़ियों में बदलाव को परखने, पौधों की उन्नत किस्म के हाईब्रिड का विकास, पौधों की बीमारियों का उपचार जीन्स द्वारा कार्य किया जाता है। जीवों में इनका काम वंशानुगत दुष्प्रभावों को जड़ से खत्म करना है।

जेनेटिक्स के कार्य क्षेत्र

जेनेटिक्स के अंतर्गत जेनेटिक साइंस, बायो जेनेटिक्स, मॉलिकुलर जेनेटिक्स, कैटोजेनेटिक्स, जेनेटिक इंजीनियरिंग, पॉपुलेशन जेनेटिक्स, जेनेटिक काउंसलर्स क्षेत्र आते हैं।

कब और कैसे प्रवेश

इस क्षेत्र में बैचलर से लेकर पीएचडी तक के कोर्स मौजूद हैं। बैचलर कोर्स में दाखिला बारहवीं (विज्ञान वर्ग) के पश्चात् मिलता है, जबकि मास्टर कोर्स में प्रवेश बीएससी व संबंधित स्ट्रीम में बैचलर के बाद होता है। मास्टर कोर्स के पश्चात् डॉक्ट्रल, एमफिल व पीएचडी तक की राह आसान हो जाती है।

रोजगार की संभावनाएं

पिछले कुछ वर्षों में जेनेटिक प्रोफेशनल्स की मांग तेजी से बढ़ी है। इसमें देश व विदेश, दोनों जगह समान रूप से अवसर मौजूद हैं। सबसे ज्यादा मौका मेडिकल व फार्मास्यूटिकल इंडस्ट्री में मिलता है। एग्रीकल्चर सेक्टर भी रोजगार प्रदाता के रूप में सामने आया है। सरकारी व प्राइवेट क्षेत्रों के रिसर्च एवं डेवलपमेंट

विभाग में पहले से ज्यादा अवसर सामने आए हैं। टीचिंग का विकास हमेशा ही उपयोगी रहा है।

मिलने वाली सेलरी

शुरुआती चरण में प्रोफेशनल्स को 15-20 हजार रुपए प्रतिमाह मिलते हैं। आमतौर पर चार-पांच साल के अनुभव के पश्चात् प्रोफेशनल्स को 40-50 हजार रुपए प्रतिमाह मिलते हैं। आज कई ऐसे प्रोफेशनल्स हैं, जिनका सालाना पैकेज लाखों में है। विदेश में जॉब मिलने पर तो सेलरी काफी आकर्षक होती है।

फायदे एवं नुकसान

- जीवन से जुड़ी जानकारी मिलने पर सुखद एहसास
- अध्ययन के दौरान विभिन्न रोचक पहलुओं से सामना
- सेलरी पैकेज के हिसाब से भी आकर्षक क्षेत्र
- शोध की अधिकता होने पर कई बार काम के घंटे अधिक
- अपेक्षित परिणाम न मिलने पर निराशा का भाव
- विषय की अच्छी समझ न होने पर आती है दिक्कत
- विदेश में नौकरी के अच्छे अवसर, जिससे सेलरी पैकेज भी काफी आकर्षक होते हैं।
- रिसर्च, ऑप्टिकल फाइबर, केमिकल इंडस्ट्री जैसे क्षेत्रों में अवसर मिलते हैं।

कुछ प्रमुख कोर्स

कोर्स	अवधि
बीएससी इन जेनेटिक्स	तीन वर्षीय
बीएससी(ऑनर्स) इन जेनेटिक्स	तीन वर्षीय
एमएससी इन अप्लाइड जेनटिक्स	दो वर्षीय
एमफिल इन जेनटिक्स	दो वर्षीय
पीएचडी इन जेनेटिक इंजी./प्लांट ब्रीडिंग	तीन वर्षीय

(इससे संबंधित कुछ सर्टिफिकेट कोर्स भी संचालित किए जाते हैं।)

पाठकपीठ

त्योहार भरते हैं उमंग और उल्लास

'प्रत्यूष' के पिछले अंक में होली पर लेख काफी पंसद आया। देश-दुनिया में खेली जाने वाली होली से रुबरु होकर होली का वास्तविक अहसास हुआ। वाकई हमारे देश के त्योहार हमारी विरासत हैं और ये हमारी जिंदगी में उमंग और उल्लास भरने का काम करते हैं।

गुरुप्रीत सोनी, उद्योगपति

बैंकों की प्रतिष्ठा को लगा चूना

दो रुपए के पेन को भी डोरी से बांधकर ग्राहकों से उसकी हिफाजत करने वाले बैंक में करोड़ों का घोटाला घनघोर लापरवाही का नतीजा है। प्रत्यूष के मार्च के अंक में 'नीरव और विक्रम ने लगाया देश को अरबों का चूना' पढ़कर लगा कि ऐसे घोटोले और घोटोलबाज न केवल देश के विकास को बल्कि बैंकों की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुंचा रहे हैं।

शरद माथुर, वी.पी ऑटोमोबाइल्स

शिक्षा पर ज्यादा ध्यान देने लगी हैं सरकारें

प्रत्यूष का पिछला अंक कई रोचक और तरोताजा करने वाली नई जानकारियों से भरा था। बजट में इस बार केंद्र और राज्य सरकारों ने कई नई योजनाएं लागू की हैं। इससे ये लगता है कि शिक्षा के आधारभूत ढांचे में मजबूती के लिए सरकारों का विशेष ध्यान है।

पूनम राठौड़, प्रिंसीपल, रेयन स्कूल

पानी सहेजना ही एकमात्र उपाय

जल हमारे जीवन का आधार है। जल है तो कल है बाकी सब व्यर्थ है। प्रत्यूष के मार्च के अंक में 'डे जीरो पानी पर खतरे की घंटी' आलेख पानी को सहेजने की सीख देने वाला है। ये सच भी है कि पानी को सहेजना ही कल को बचाने का एक मात्र उपाय है।

लोकेश त्रिवेदी, उद्योगपति

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित विवरण

घोषणा पत्र फार्म-4

1. प्रकाशन स्थल	उदयपुर
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	आशीष बापना
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाबबाग रोड, उदयपुर
4. प्रकाशक का नाम	पंकज शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	हाँ
पता	रक्षाबंधन, धानमण्डी, उदयपुर
5. सम्पादक का नाम	विष्णु शर्मा हितैषी
क्या भारत का नागरिक है	हाँ
पता	हितैषी भवन, सूरजपोल अन्दर, उदयपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हो	पंकज शर्मा रक्षाबंधन, धानमण्डी,उदयपुर

मैं पंकज शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है।

दिनांक : 27 मार्च, 2018 **पंकज शर्मा**

स्थान : उदयपुर **प्रकाशक**

मध्यकालीन राजस्थान का धार्मिक स्वरूप

राजस्थान धर्म, समन्वय एवं सहिष्णुता का प्रदेश है। मध्यकाल में भी धर्म ने मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विदेशी भी हिन्दू देवी-देवताओं के स्वरूप को जानकर विस्मित हो जाते थे। सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर ज्ञात होता है कि भारतीयों ने सदैव ईश्वरीय शक्ति में ही विश्वास किया। हर देवता जिसकी वे पूजा करते थे, उसे परमात्मा की शक्ति का ही प्रतिनिधि मानते थे।

डॉ. अल्पना त्रिपाठी

धर्म के कारण ही मध्यकाल में देश में सांस्कृतिक एकता बनी रही। प्रतिहार शासकों ने अपने समय में अलग-अलग देवताओं की पूजा की। भागवत् धर्म का उपासक नागभट्ट द्वितीय था जबकि उसका पुत्र रामभद्र सूर्य का, विनयपाल आदित्य का और महेन्द्रपाल द्वितीय महेश्वर का भक्त था। इसके गवर्नर माधव ने सूर्य के मन्दिर के पुनरूद्धार के लिए एक गांव भेंट किया। धार्मिक समन्वय का प्रतीक हर्षनाथ के शिव मन्दिर से प्राप्त सूर्य है। इसी तरह हरिहर की मूर्ति भी धार्मिक समन्वयवाद की प्रतीक है।

विष्णु - विष्णु की पूजा उनके किसी अवतार के माध्यम से की जाती है। जैसे वराह, नृसिंह और त्रिविक्रिमा। मध्यकाल के विष्णु मन्दिर बयाना, घोटार्सी, आहाड़ व अन्य जगहों पर मिले है। हर्षनाथ एवं कोटा में भी शेषशायी विष्णु की प्रतिमाएं मिली हैं। राजपूताना म्यूजियम में भी शेषशायी विष्णु की प्रतिमा रखी हुई है। ये सभी प्रतिमाएं 8वीं, 9वीं शती से लेकर 11वीं शती तक की हैं। बघेरा में कमल की चौकी पर खड़ी विष्णु मूर्ति कलात्मकता की प्रतीक है। इस मूर्ति के मस्तक पर हीरों का किरीट और हाथ में गदा है।

8वीं शती के मध्यकाल तक कृष्ण को विष्णु का अवतार मान लिया गया। मेवाड़ के शिलालेखों से ज्ञात हुआ है कि विष्णु के अवतार के रूप में कृष्ण की पूजा होती थी। विष्णु की पूजा के लिए अवतारों के नाम लिए जाते हैं। कूर्म, मत्स्य, वराह, नृसिंह, वामन, जामदवन्य, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्की।

शिव - मध्यकला में शिव की पूजा विशेष रूप से प्रचलित थी। अनेक शासक शिवोपासक थे। शिवभक्तों में प्रतिहार शासक वत्सराज, महेन्द्रपाल द्वितीय और त्रिलोचन पाल आदि प्रमुख थे। इसी प्रकार मंडोर के शासकों के कोई एक देवता न होकर कुछ वैष्णव थे एवं कुछ सिलूक की तरह शैवधर्मानुयायी थे। राजौर का मधन देव शिव का अनन्य भक्त था वह भगवान लच्छुरेश्वर की पूजा करता था। शिव के उपासकों में नाथ भी थे, जिनका महाराणा मानसिंह के समय जोधपुर में बड़ा जोर था। किशनगढ़, बासंवाड़ा, कोटा, जोधपुर, जयपुर में राजपरिवारों द्वारा अनेक शिव मंदिर बनवाए गए। इन मन्दिरों की सेवा के लिए कई गांव भेंट किए गए थे। चौहान 950 ई. तक परमारों के सामन्त रहे। वाक् पति और सिंहासन ने पुष्कर में शिव मन्दिरों का निर्माण कार्य करवाया था। मेवाड़ ने पुष्कर में शिव मन्दिरों का निर्माण कार्य करवाया था। मेवाड़ के महाराणा अपने को एकलिंगनाथ का दीवान मानकर शासन करते थे। मेवाड़ में लकुलीश सम्प्रदाय का बड़ा जोर था। जिसमें हारीत, वेदांग, मुनि, माहेश्वर, ऋषि, जैसे उनके कई आचार्यों के नाम आते हैं।

शक्ति - शक्ति की पूजा दुर्गा, महाकाली, पार्वती, महिषासुर मर्दिनी के रूप में की जाती थी। मध्यकाल में राजस्थान में विष्णु एवं शिवपूजा के साथ-साथ शक्ति की भी महत्ता थी। वीर योद्धा शक्ति को अपनी आराध्य देवी मानकर युद्ध में उतरते थे। इस काल में राजस्थान में सच्चिया माता मन्दिर, ओसिया कालिका मन्दिर चित्तौड़, जीणमाता, सीकर, शाकंभरी माता मन्दिर, सीकर आदि बड़े प्रसिद्ध हैं। अनेक राज परिवारों ने करणी देवी, नागणेची, बाणमाता और अन्नपूर्णा आदि शक्तियों को अपनी कुलदेवी बनाकर पूजा की।

जैन धर्म - इस काल में राजस्थान में जैन धर्म का वैश्य परिवार में प्रचार रहा। यहां के राजाओं ने इस धर्म को विशेष महत्व नहीं दिया फिर भी वैश्य परिवार इसके प्रति सहिष्णुता का रूख अपनाए रहे। जैसलमेर, नाडोल, आमेर, धुलेव, रणकपुर, नाडलाई, आबू एवं सिरोही में इस धर्म का जोर रहा इस धर्म के साधु भ्रमणरत रहते थे। आचार्यों ने इस धर्म से सम्बन्धित विशाल साहित्य का सृजन किया।

सूर्य - राजस्थान में सूर्य पूजा का भी विशेष महत्व रहा। हालांकि सूर्य के मन्दिर अन्य देवों की तुलना में कम मिलते हैं। उस समय सूर्य पूजा के कुछ प्रतीक थे जैसे - एक गोलवृत्त या एक कमल। वराह मिहिर ने सूर्य की मूर्ति के निर्माण में कुछ तत्व बताए हैं जो निम्न हैं -

उसकी मूर्ति पैरों से लेकर छाती तक ढकी रहनी चाहिए। उनका सिर मुकुट युक्त और हाथ कमल नालों से युक्त होने चाहिए। उनके कानों में बालियां और गले में माला होनी चाहिए।

सूर्य पूजा का सबसे बड़ा केन्द्र भीनमाल था। सिरोही राज्य में इस काल में (600-1400ई.) कोई ऐसा गांव नहीं था। जहां सूर्य मन्दिर या खण्डित सूर्य प्रतिमा नहीं मिलती हो।

ब्रह्मा - त्रिदेवों में ब्रह्मा एक देवता है। पहले उनकी पूजा का बहुत प्रचलन था लेकिन बाद में उनके भक्तों की संख्या कम हो गई। पुराणों में इसका कारण एक श्राप को बताया गया है जो उन्हें शिवलिंग का शीर्ष भाग देख लेने की झूठी बात कहने पर मिला था। प्रारम्भ में शिव को पहाड़ी क्षेत्रों में पूजा जाता था जबकि मैदानों में ब्रह्मा की पूजा होती थी। राजस्थान में सातवीं शती का ईंटों से बना ब्रह्मा का मन्दिर है। एक मन्दिर पुष्कर में भी है।

राजस्थान में इस काल में अनेक धार्मिक सम्प्रदाय विद्यमान थे, जो अपनी मान्यताओं और अवधारणाओं के अनुसार देवताओं की पूजा में रत थे।

बौद्धधर्म - बैराठ, लालसोट, रेड, नगरी, शेरगढ़ आदि स्थानों पर हुई। खुदाई से ज्ञात होता है कि राजस्थान का एक समृद्ध धर्म सम्प्रदाय बौद्ध धर्म था। गुर्जर देश का राजा बौद्ध धर्म का पक्का अनुयायी था। राजपूत जाति युद्ध प्रिय होने से शान्ति का संदेश देने वाले बौद्ध धर्म को पसन्त नहीं करती थी। बौद्ध धर्म की शिक्षाओं, निर्देशों एवं दार्शनिक अवधारणाओं को

हिन्दू धर्म ने अपने में समाहित कर लिया।

जैन धर्म – जैन साधु यक्ष देव के सम्पर्क में नागभट्ट प्रथम थे। वत्सराज के समय में जैनाचार्य लोगों को स्वतंत्र रूप से जैन धर्म में दीक्षित कर रहे थे। इन्होंने ओसिया में महावीर स्वामी का एक सुन्दर मंदिर बनवाया था। पृथ्वीराज प्रथम ने रणथम्भौर के मन्दिर पर कलश चढ़ाए थे।

राजस्थान के लोग प्रारिम्भक काल से ही धर्म प्राण और धर्म भीरू रहे हैं। देवी-देवताओं के प्रति उनकी अतीव श्रद्धा और भक्ति रही है। राजस्थान में गोगाजी, पाबूजी, तेजाजी, मल्लीनाथजी आदि लोकदेवताओं का भी काफी प्रभाव रहा।

मानवाधिकार के प्रति शिक्षकों का अभिमत

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत के संविधान में मानवाधिकारों को स्थान दिया गया। परन्तु वास्तविकता यह है कि मानव अधिकारों के प्रति जनमानस की अभिवृत्ति उपेक्षित है। अगर मानव को शिक्षा उसके अधिकारों के लिए नहीं दी जाए बल्कि कर्त्तव्य बोध के लिए दी जाए तो मानव सही मानव एवं नागरिक सही नागरिक बन जाए।

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन
मा कर्मफल हेतु भूमि ते संगो स्त्वकर्मण'

महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण के कथनानुसार मनुष्य को बिना फल की आशा किए कर्म करते रहना चाहिए। अच्छे कार्य से अच्छे एवं बुरे कर्म से बुरे फल की प्राप्ति होगी। भारत में प्राचीन काल से ही मानव को अधिकारों की प्राप्ति के लिए कर्म वं कर्तव्यों का पालन करने का संदेश दिया जा रहा है। व्यक्ति अपने कर्मों अथवा कर्तव्यों का पालन करे तो उसके मूल अधिकार उसे स्वत: प्राप्त हो जाएंगे।

फौजिया अगवानी

मानवाधिकार को परिभाषित करते हुए मानवशास्त्री लास्की ने कहा है कि – 'अधिकार सामाजिक जीवन की वे परिस्थितियाँ हैं जिनके बगैर सामान्यत: कोई व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास नहीं कर सकता। स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत के संविधान में मानवाधिकारों को स्थान दिया गया। परन्तु वास्तविकता यह है कि मानव अधिकारों के प्रति जनमानस की अभिवृत्ति उपेक्षित है। अगर मानव को शिक्षा उसके अधिकारों के लिए नहीं दी जाए बल्कि कर्त्तव्य बोध के लिए दी जाए तो मानव सही मानव एवं नागरिक सही नागरिक बन जाए। लेखिका स्वयं शिक्षा के क्षेत्र से सम्बंद्ध होने से अवलोकन एवं साक्षात्कार के आधार पर यह निरन्तर देखती रही है कि मानवाधिकार एवं कर्त्तव्यों के प्रति समाज के कर्णधार शिक्षकों के अभिमतों में मानव अधिकार के प्रति भ्रमित अवस्था है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत लघु शोध निम्न उद्देश्यों पर आधारित है :-मानवाधिकार के प्रति सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के समग्र शिक्षकों तथा पुरुष एवं महिला शिक्षिकाओं के अभिमतों का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध परिसीमन

प्रत्येक अनुसंधानकर्ता को विषय की गहनता उसकी सीमाओं एवं समयाभाव को ध्यान में रखते हुए अपना कार्य पूर्ण करना होता है। अत: प्रस्तुत अनुसंधान उदयपुर शहर तक ही सीमित रखा गया है। जिसमें 5 सरकारी माध्यमिक एवं 5 निजी माध्यमिक विद्यालयों को शामिल किया गया है।

न्यादर्श का चयन

समयाभाव एवं अध्ययन में विश्वसनीयता को ध्यान में रखकर अध्ययन में यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुए पांच-पांच सरकारी व गैर-सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्नलिखित है :-

- मानवाधिकार शिक्षा के प्रति सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के अभिमत में कोई अन्तर नहीं होता है।
- मानवाधिकार शिक्षा के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षकों के अभिमत में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- मानवाधिकार शिक्षा के प्रति सरकारी माध्यमिक विद्यालय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के अभिमत में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- मानवाधिकार शिक्षा के प्रति सरकारी माध्यमिक विद्यालय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के महिला शिक्षिकाओं के अभिमत में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

उपकरण

प्रत्येक अनुसंधान में दत्त संकलन हेतु उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। प्रस्तुत शोध कार्य में मानकीकृत उपकरण उचित व उपयुक्त प्राप्त न होने के कारण स्वनिर्मित उपकरण 'मानवाधिकार शिक्षा के प्रति शिक्षकों के अभिमत' की प्रमापनी का निर्माण किया गया।

स्वनिर्मित उपकरण निर्माण

माध्यमिक विद्यालयों में मानवाधिकार के प्रति शिक्षकों के अभिमत ज्ञात करने के लिए विद्वानों की राय एवं अनुसंधान साहित्य, लेख, जनरल्स, पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन करके निम्नलिखित कारकों का चयन किया गया।

- मानवाधिकार शिक्षा – मानवाधिकार के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी।
- मानवाधिकार पाठ्यक्रम में विषयवस्तु।
- मानवाधिकार शिक्षा में शिक्षक की भूमिका।
- मानवाधिकार शिक्षा की उपयोगिता।
- मानवाधिकार शिक्षा में क्रियान्वयन एवं समस्याएं।
- मानवाधिकार शिक्षा में उद्देश्य एवं आवश्यकता।
- मानवाधिकार शिक्षा में नवीन दृष्टिकोण एवं सुझाव।

सभी विषय विशेषज्ञों की 80 प्रतिशत राय के आधार पर 5 क्षेत्रों का अंतिम रूप से चयन किया गया।

- मानवाधिकार शिक्षा की सामान्य जानकारी
- मानवाधिकार पाठ्यक्रम की विषयवस्तु।
- मानवाधिकार शिक्षा में क्रियान्वयन एवं समस्याएं।
- मानवाधिकार शिक्षा में नवीन दृष्टिकोण एवं सुझाव।

प्रविधि : प्रस्तुत अनुसंधान माध्यमिक विद्यालय में माध्यमिक विद्यालय में मानवाधिकार शिक्षा के प्रति शिक्षकों के अभिमत हेतु दत्त संकलन सांख्यिकी का उपयोग किया गया।

- मध्यमान ■ मानक विचलन
- तुलना हेतु टी परीक्षण

सरकारी एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों के अभिमत का तुलनात्मक विश्लेषण :-

क्र. सं.	सम्बन्धित क्षेत्र	पुरुष शिक्षक (N = 50)		महिला शिक्षक (N = 50)		टी मूल्य	सार्थकता स्तर
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
1	मानवाधिकार शिक्षा-सामान्य जानकारी	21.88	3.70	23.16	3.16	1.78	सार्थक अन्तर नहीं
2	मानवाधिकार शिक्षा - विषयवस्तु	21.40	2.02	21.14	3.16	0.08	सार्थक अन्तर नहीं
3	मानवाधिकार शिक्षा-उपयोगिता	13.86	1.16	14.08	2.10	0.59	सार्थक अन्तर नहीं
4	मानवाधिकार शिक्षा - क्रियान्वयन एवं समस्याएं	30.22	2.55	30.54	4.36	0.45	सार्थक अन्तर नहीं
	समग्र क्षेत्रों पर	100.82	7.83	102.70	11.04	0.98	सार्थक अन्तर नहीं

पुरुष एवं महिला शिक्षकों के अभिमतों का तुलनात्मक विश्लेषण :-

क्र. सं.	सम्बन्धित क्षेत्र	पुरुष शिक्षक (N = 50)		महिला शिक्षक (N = 50)		टी मूल्य	सार्थकता स्तर
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
1	मानवाधिकार शिक्षा-सामान्य जानकारी	21.88	3.70	23.16	3.16	1.78	सार्थक अन्तर नहीं
2	मानवाधिकार शिक्षा - विषयवस्तु	21.40	2.02	21.14	3.16	0.08	सार्थक अन्तर नहीं
3	मानवाधिकार शिक्षा-उपयोगिता	13.86	1.16	14.08	2.10	0.59	सार्थक अन्तर नहीं
4	मानवाधिकार शिक्षा - क्रियान्वयन एवं समस्याएं	30.22	2.55	30.54	4.36	0.45	सार्थक अन्तर नहीं
	समग्र क्षेत्रों पर	100.82	7.83	102.70	11.04	0.98	सार्थक अन्तर नहीं

सारांश : समग्र क्षेत्रों का अध्ययन करने पर पुरुष शिक्षकों एवं महिला शिक्षिकाओं के मध्यमान समान प्राप्त होते हैं तथा .05 तथा .01 स्तर पर दोनों ही समूहों में पुरुष शिक्षक एवं शिक्षक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मानवाधिकार शिक्षा के प्रति माध्यमिक सरकारी एवं निजी विद्यालयों के महिला शिक्षिकाओं के अभिमतों का अध्ययन

सुझाव

- मानवाधिकार पाठ्यक्रम विषय के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।
- न्यायिक प्रक्रिया में लचीलापन होना चाहिए।
- समय-समय पर विशेषज्ञों के अभिभाषण करवाए जाने चाहिए।
- मानवाधिकार में प्रशिक्षित अध्यापकों को उनके अनुभव के आधार पर शिक्षण हेतु विद्यालय में भेजा जाना चाहिए।
- विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन मानवाधिकार शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए करना चाहिए।
- संचार माध्यमों के द्वारा मानवाधिकार के प्रति जागरूकता के कार्यक्रम चलाना चाहिए।

राजस्थान विद्यापीठ के नवें दीक्षांत समारोह में राजस्थान पत्रिका समूह के सम्पादक गुलाब कोठारी को डी. लिट् की उपाधि से नवाजा

शिक्षा संस्थान भी मां के समान : शास्त्री

प्रत्यूष संवाददाता

वरिष्ठ पत्रकार गुलाब कोठारी को डी. लिट की उपाधि प्रदान करते कुलाधिपति एच सी पारीक व कुलपति एस.एस. सारंगदेवोत व अन्य।

उदयपुर। पद्मभूषण से सम्मानित डॉ. सत्यव्रत शास्त्री ने कहा कि हर शिक्षण संस्था छात्र के लिए माता समान होती है। माता दूध पिलाकर बच्चे को बड़ा करती है, उसी तरह शिक्षण संस्था ज्ञान के दूध से उसे समृद्ध और विवेकी बनाती है। उसका ध्यान रखना, उसका मान बढ़ाना विद्यार्थी का कर्त्तव्य है। वे यहां जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के नवें दीक्षान्त समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे।

दीक्षांत समारोह में डीलिट् की उपाधि से सम्मानित राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक गुलाब कोठारी ने कहा कि ज्ञान अर्जन की कोई सीमा, कोई छोर नहीं है। कहते भी हैं कि जीव 84 लाख योनियों में घूम-घूम कर कोशिश करता है कि वह उस ज्ञान को पकड़ सके जिसके सहारे जन्म-जन्मांतर के चक्र से बाहर निकलना संभव हो। इसी स्थिति को आत्मज्ञान कहा जाएगा। उन्होंने कहा कि जब हमें यह ज्ञान हो जाएगा तो उस दिन से जीवन के उद्देश्य की यात्रा भी शुरू हो जाएगी। उन्होंने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर चिंता जताते हुए कहा कि स्कूल व कॉलेज की शिक्षा में शब्द ब्रह्म की साधना की अवधारणा समाप्त हो गई। आज जिसे हम डिग्रियां कह रहे हैं, वह जीवन में उपयोगी कहां है सिवाय नौकरी पाने के। कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि आज उच्च शिक्षा में शिक्षा पद्धति की जो बेड़ियां हैं, उन्हें तोड़ना चाहिए। हम जनता की शिक्षा के लिए जनता के पास जाना चाहते हैं। कुलाधिपति एचसी पारख ने कहा कि उच्च शिक्षा की दिशा में विद्यापीठ नए आयाम स्थापित कर रहा है। इसी क्रम में हमने कन्या महाविद्यालय शुरू करने की पहल की है ताकि बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन एवं बढ़ावा मिल सके। मंच पर कुलाध्यक्ष देवेन्द्र जौहर, कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर, रजिस्ट्रार आर पी नारायणीवाल तथा बालकवि वैरागी भी मौजूद थे। संचालन धीरज प्रकाश जोशी ने किया।

इन्हें मिली डिग्रियां

समारोह में 130 छात्र-छात्राओं को पीएचडी की उपाधि से नवाजा गया, जबकि 84 को गोल्ड मेडल प्रदान किए गए, इसमें 62 छात्राओं ने गोल्ड मडल पर कब्जा जमाया। वाणिज्य संकाय से 7, कम्प्यूटर साइंस से 12, शिक्षा संकाय से 29, मानविकी संकाय से 11 व सामाजिक विज्ञान संकाय से 52 विद्यार्थियों को पीएचडी की उपाधि से नवाजा गया।

'सेवापथ नमन' का विमोचन

पुस्तक का विमोचन करते वेद व्यास, जीसी कानूनगो, माया कुंभट, क्षितिज कुंभट व परिवार के सदस्य।

उदयपुर। वर्तमान में ईमानदार सेवाभावी लोगों की आवश्यकता है। सेवा ही जीवन का मूल अर्थ है और इस मूल अर्थ को लेकर ही राजेन्द्रमल कुंभट ने अपना जीवन जीया जो आज हमारे लिए आदर्श है। ये विचार राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष वेद व्यास ने सिटीजन सोसायटी की ओर से समाजसेवी स्व. राजेन्द्रमल कुंभट के सेवा कार्यों पर आधारित स्मृति पुस्तक 'सेवापथ नमन' के विमोचन समारोह के अध्यक्षीय उद्‌बोधन में व्यक्त किये। उन्होंने राजेन्द्र मल कुंभट के जीवट व्यक्तित्व एवं उनके विद्यार्थी जीवन से ही सेवा के प्रति समर्पित प्रसंगों का उल्लेख किया। मुख्य अतिथि कैलाश भण्डारी थे। विशिष्ट अतिथि घेवरचंद कानूनगो ने कुंभट की सेवाओं का स्मरण करते हुए कहा कि उनके मन में सदैव अपने शहर के लिए बेहतर से बेहतर करने का भाव था। वे बीमारी की अवस्था में भी सदैव शहर के विकास को लेकर चिंतित रहते थे। प्रकाश सराफ ने कहा कि उनके व्यक्तित्व की यह विशेषता थी कि वे अत्यन्त निडर और दूसरों के लिए सदैव जोखिम लेने वाले व्यक्ति थे। अतिथियों का स्वागत स्व. कुंभट की धर्मपत्नी माया कुंभट व पुत्र क्षितिज ने किया। अक्षत व श्रेया कुंभट ने कविता पाठ किया। समारोह का संचालन डॉ. प्रज्ञा कुंभट ने व धन्यवाद ज्ञापन सिटीजन सोसायटी के के. एस. मोगरा ने किया।

एयरपोर्ट पर विजय स्तंभ की प्रतिकृति

प्रतिकृति के अनावरण के समय पुनीत इस्सर, मदन पालीवाल, प्रकाश पुरोहित, कुलदीप सिंह व अन्य।

उदयपुर। महाराणा प्रताप एयरपोर्ट पर चित्तौड़गढ़ के विजय स्तंभ की अनुकृति का 12 मार्च को उद्‌घाटन हुआ। इसका निर्माण कराने वाले मिराज ग्रुप के चेयरमैन मदनलाल पालीवाल ने घोषणा की कि जल्द ही चार क्रांतिकारियों भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चन्द्र बोस और सरदार वल्लभ भाई पटेल की आदमकद प्रतिमाएं भी यहां लगाई जाएंगी। 30 फीट और 18 मीटर क्षेत्र में फैले स्तंभ की प्रतिकृति का फिल्म अभिनेता पुनीत इस्सर ने अनावरण किया। एयरपोर्ट डायरेक्टर कुलदीप सिंह ने परिसर में चार महापुरुषों की प्रतिमाएं लगाने की घोषणा का स्वागत किया। सीआईएसएफ के डिप्टी कमांडेंट जीएम अंसारी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन का 36वां वार्षिक अलंकरण समारोह

मेवाड़ में सम्मान पाकर अभिभूत हुई विभूतियां

महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी अरविंदसिंह मेवाड़ से अवार्ड प्राप्त करते प्रोफेसर जॉन स्ट्रेटन हावले, सुहासिनी हैदर, डॉ. ई श्रीधरन एवं गफ्फार भाई कुरैशी।

शक्ति, मति और भक्ति की पावन मेवाड़ धरा 11 मार्च को एक बार फिर उस समय धन्य हो गई, जब उसने विदेश, देश और अंचल के विद्वानों को सम्मानित कर अपनी परम्परा का परचम फहराया। साक्षी बना सिटी पैलेस का माणक चौक। अवसर था – महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन के 36वें अलंकरण समर्पण समारोह का। विद्वानों, कलाकारों, खिलाड़ियों, जांबाजों और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्री अरविन्द सिंह मेवाड़ ने कहा कि फाउण्डेशन को दुनियाभर के गुणीजनों के सम्मान में अपनी आस्था का दीपक जलाए रखने में ही परम सुख का अनुभव होता है। इस गरिमापूर्ण समारोह की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध कवि एवं पूर्व सांसद बालकवि बैरागी ने की। फाउण्डेशन के ट्रस्टी लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने आयोजन के समापन पर धन्यवाद ज्ञापित किया। संयोजक डॉ. मयंक गुप्ता के अनुसार संचालन रूपा चक्रवर्ती व गोपाल सोनी ने किया। कवि पं. नरेन्द्र मिश्र ने मेवाड़ की वीरता और त्याग को अपनी कविताओं में व्यक्त किया। सम्मानित होने वाले विद्वानों व खिलाड़ियों ने कहा कि मेवाड़ की धरती पर सम्मान पाना उनके लिए ही गौरव की बात है।

इन्हें मिला सम्मान

अमेरिका की कोलम्बिया युनिवरसिटी के प्रोफेसर जॉन स्ट्रेटन हावले को अन्तरराष्ट्रीय कर्नल जेम्स टॉड सम्मान प्रदान किया गया। प्रो. हावले ने महाराणा अमर सिंह द्वितीय के समय सूरदास पर बनी मेवाड़ी चित्रशैली की पेन्टिंग्स का गहन अध्ययन कर उसे अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया है। प्रतिवर्ष दिए जाने वाले कर्नल जेम्स टॉड अलंकरण के तहत दो लाख रुपये की राशि, तोरण, शॉल एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया। पत्रकारिता के क्षेत्र में द हिन्दू की राजनयिक संपादक के रूप में अपनी अलग पहचान बनाने वाली सुहासिनी हैदर को राष्ट्रीय स्तर का हल्दीघाटी सम्मान, भारत के 'मेट्रो मेन' के नाम से प्रख्यात सिविल इंजीनियर डॉ. ई. श्रीधरन को हकीम खां सूर अलंकरण, पर्यावरण के क्षेत्र में दिया जाने वाला महाराणा उदयसिंह सम्मान गुजरात के हर्बल मेन गफ्फारभाई कुरैशी को प्रदान किया गया। जान जोखिम में डालते हुए 50 से अधिक यात्रियों की जीवन रक्षा करने वाले वलसाड गुजरात के बस ड्राइवर सलीम गफूर शेख एवं हर्ष देसाई को पन्नाधाय सम्मान से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय स्तर पर दिये जाने वाले उक्त चारों अलंकरणों के तहत प्रत्येक विभूति को एक लाख रु. नकद, तोरण, शॉल एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किए गए। फाउण्डेशन द्वारा उपरोक्त अलंकरणों के अलावा राज्य स्तर पर दिये जाने वाले अलंकरणों के अन्तर्गत 'महाराणा मेवाड़ सम्मान' मुम्बई के आबिद सूरती, नई दिल्ली की रसप्रीत सिद्धू एवं पद्मभूषण सत्यव्रत शास्त्री को प्रदान किया गया। ज्योतिष, वेद विज्ञान एवं कर्मकाण्ड में

महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन के वार्षिक अलंकरण समारोह में (बाएं से) हर्ष देसाई, सलीम गफ्फुर, संदीप जोशी, चन्द्रकांत पुरोहित, रसप्रित सिन्धु, आबिद सुरती, सत्यव्रत शास्त्री, देवकिशन पुरोहित, निशांत मलिक, प्रशांत मलिक, वर्दीबाई, हिमांशु लांबा, महिर सोनी व कोटा के मकबरा थाने को सर्वश्रेष्ठ थाने का सम्मान प्राप्त करते।

... तब खूब बजी तालियां

महाराणा अमरसिंह(द्वितीय) के समय में सूरदास पर बनी मेवाड़ी चित्रशैली पर अध्ययन कर उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पुस्तक की पहचान देने वाले कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रो. हावले ने सम्मान के बाद मंच पर हिन्दी बोलकर आश्चर्यचकित कर दिया। तब पाण्डाल देर तक तालियों से गूंजता रहा। महाराणा मेवाड़ अलंकरण से नवाजे गए संस्कृत भाषा के विद्वान प्रो. सत्यव्रत शास्त्री के बारे में मंच से जैसे ही यह कहा गया उम्र के 88वें पड़ाव पर प्रो. शास्त्री का यह 100वां पुरस्कार है, तब भी लोगों ने उनके सम्मान में खड़े होकर खूब तालियां बजाई। प्रो. शास्त्री भी खुद को रोक नहीं सके और अपनी सीट से पांव उठकर दर्शकों का सम्मान स्वीकार किया। इसी तरह अमरनाथ यात्रि यों को आतकियों से बचाने वाले बस ड्राइवर सलीम गफूर शेख और हर्ष देसाई का भी उसी अंदाज में लोगों ने खड़े होकर तालियों की गड़गड़ाहट से सम्मान किया। सम्मान के दौरान इनके आंसू छलक पडे। उम्र के 85वें वर्ष में मेट्रो के लिए कर्मशील डॉ. ई. धरन की उपलब्धियों पर भी खूब तालियां बजी।

श्रेष्ठ योगदान के लिये खेरवाड़ा निवासी डॉ. संदीप जोशी एवं उदयपुर के पं.(डॉ.) चन्द्रकांत पुरोहित को 'महर्षि हारित राशि सम्मान' प्रदान किया गया। भारतीय संस्कृति, साहित्य व इतिहास के खेत्र में दिये जाने वाला 'महाराणा कुम्भा सम्मान' राजस्थानी भाषा के जाने-माने साहित्यकार देवकिशन राजपुरोहित को अपने भावपूर्ण लेखन हेतु प्रदान किया गया। ललित कला के क्षेत्र में दिया जाने वाला 'महाराणा सज्जन सिंह' लोककला के क्षेत्र में राजस्थान का नाम रोशन करने वाले शाहपुरा(भीलवाड़ा) निवासी अभिषेक जोशी व संगीत के क्षेत्र में 'डागर घराना सम्मन' से भारत के प्रख्यात ध्रुपद गायक प्रशांत एवं निशांत मलिक को प्रदान किया गया। आदिवासी समाज के उत्थान के लिए 'राणा पूंजा सम्मान' आदिवासी परिवारों में स्वास्थ्य, कन्या शिक्षा के प्रति अलख जगाने वाली वरदी बाई को प्रदान किया गया। राज्य के खिलाड़ियों को दिये जाने वाले 'अरावली सम्मान' से उदयपुर के अन्तरराष्ट्रीय शक्तितोलक खिलाड़ी मिहिर सोनी एवं जयपुर के हिमांशु लाम्बा को रोल बॉल खेल में भारत का नाम रोशन करने के लिए दिया गया। राज्यस्तरीय अलंकरणों से सम्मानित होने वाले वाली विभूतियों को इक्यावन हजार एक रु., तोरण, शॉल एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किये गये। राज्य का सर्वश्रेष्ठ पुलिस थाना पुरस्कार पुलिस थाना मकबरा(कोटा) को प्रदान किया गया। महाराणा मेवाड़ विशेष अलंकरण के तहत तोरण, मेवाड़ अधिपति श्री एकलिंगजी के विग्रह से युक्त स्वर्ण पदक प्रशस्ति पत्र, सम्मान, शॉल एवं 25001 की सम्मान राशि प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त भामाशाह अलंकरण से वर्ष 2017 के 23 विद्यार्थियों को 11,001 रुपये की सम्मान राशि, महाराणा राजसिंह अलंकरण से 17 विद्यार्थी को 11,001 रुपये की सम्मान राशि तथा महाराणा फतह सिंह अलंकरण से 76 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को 5001 की सम्मान राशि, पदक और प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

रिपोर्ट : भावना जैन

स्थापना दिवस विशेष

महाराणा उदयसिंह ने 1553 में अक्षय तृतीया के दिन करवाया था उदयपुर का शिलान्यास, शहर तब से आज तक विकास के कदम बढ़ाता बिखेर रहा है अपनी स्वर्णिम आभा

गौरवशाली अतीत की नींव पर खड़ा 'उदयपुर'

सुनील पंडित

कहते हैं कि अक्षय तृतीया के दिन कृति नक्षत्र में उदयपुर के गौरवशाली वैभव की नींव रखी गई। नींव के गर्भ में पहला पत्थर रखा महाराणा उदयसिंह ने। बाद में उन्हीं के नाम से इस शहर का नामकरण हुआ। विक्रम संवत् 1610 ईस्वी सन् 1553 अक्षय तृतीया (15 अप्रैल) का दिन था। माछला मगरा स्थित एकलिंगगढ़ से उदयबाढ़ तोप इस खुशी को धमाके के साथ बयां करने का बेसब्री से इंतजार कर रही थी। तोप में जैसे ही आग लगाई गई इसकी गूंज ने मेवाड़ के इतिहास में नई इबारत लिख दी। तोप की आवाज सुनकर महाराणा ने किले, धनिक वर्ग ने हवेलियों और आम जनता ने घरों की नींव का पत्थर रखा। तब से ये शहर पोल-बावडि़यों, बाग-बगीचों, झीलों और सुरम्य वादियों के नाम से देश-दुनिया में मशहूर होता गया। झीलों और अपणायत के नाम से प्रसिद्ध उदयपुर में समय के साथ बहुत कुछ बदला भी लेकिन बदलाव इसकी हवा को नहीं बदल पाए। शहर ने हाट से लेकर मॉल तक बनते देखे लेकिन इसके गौरवशाली इतिहास और परंपरा के आगे सब बौने साबित हुए। यहां की कला, संस्कृति, परंपरा आज भी सात वार नौ त्यौहार की तरह संजीव है। महाराणा उदयसिंह के बसाए इस नगर का असल विकास मुगल मेवाड़ संधि के दौरे में माना जाता है। केवड़ा की नाल, सोमेश्वर नाल, फुलवारी की नाल, चीरवा और देबारी का घाटा जैसे प्राकृतिक रास्तों के बीच बसे इस शहर को अपनी अनुपम विशेषताओं के कारण ही पूर्व का वेनिस, राजस्थान का कश्मीर कहा जाता है। पानी और पहाड़ों के बीच प्राकृतिक सौंदर्य और संसाधनों से लकदक इस धरा को विश्व के सबसे सुंदर शहर का खिताब भी मिला। पर्यटकों की रम्यस्थली उदयपुर का पूर्व कालिक सौंदर्य हालाकि बहुत कुछ लूट चुका है। इसके चारों ओर स्थित अरावली श्रृंखलाएं चट्टानी रेगिस्तान बन गए है। ऐतिहासिक शहर कोट लगभग ध्वस्त हो चुका है। नगर से सटी झीलों के कैचमेंट अतिक्रमण की चपेट में है। पुराने शहर के अंदर और नई विकसित आवासीय कॉलोनियों में अव्यवस्थित निर्माण और अतिक्रमण तथा वर्षों पूर्व एवं ऐतिहासिक महत्व की इमारतों को ध्वस्त करने से उदयपुर बुजुर्गों के लिए बेढंगा और विकृत हो चुका है। लेकिन फिर भी उदयपुर तो उदयपुर ही है। उदयपुर के स्थापना दिवस पर इससे जुड़ी कुछ रोचक जानकारियां।

शेष अगले पृष्ठ पर

प्राकृतिक दृष्टि से सुरक्षित शहर

महाराणा उदयसिंह बाहरी आक्रमणों से चिंतित थे। चित्तौड़ उस समय सुरक्षा की दृष्टि से अनुपयुक्त था। अल्लाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय इसका पतन हो चुका था। भविष्य के आक्रमणों की आशंका को ध्यान में रखकर महाराणा ऐसे स्थान की खोज में थे जो प्राकृतिक दृष्टि से सुरक्षित हो। उनका सोचना था कि पहाड़ियों से घिरे स्थान में शक्ति का संचय किया जाए तो सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त होगा। इसी आशा से उन्होंने अरावली पर्वत मालाओं से गिरे गिर्वा के प्रदेश में नई राजधानी बनाने का निर्णय लिया।

आकस्मिक घटना नहीं थी राजधानी बदलना

'उदयपुर' को मेवाड़ की राजधानी के रूप में स्थापित करना कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। ये महाराणा उदयसिंह की दूरदृष्टि और सूझबूझ थी। उदयपुर के निर्माण के समय ही उन्होंने भविष्य के आक्रमण की कल्पना कर ली थी। उन्होंने तय कर लिया कि चित्तौड़ के साथ वह मेवाड़ को संकट में पड़ने नहीं देंगे। ऐसे में उन्होंने उदयपुर जैसे सुरक्षित स्थान को प्रशासन का नया केंद्र बनाया। नगर की सुरक्षा के लिए इसके चारों ओर मजबूत चारदीवारी बनवाई गई थी। जिसके 11 भव्य द्वार थे। सूरजपोल शहर का मुख्य द्वार था। नई राजधानी की स्थापना से पूर्व सलाहकारों की चित्तौड़ में हुई उच्चस्तरीय बैठक में निर्णय लिया गया कि राणा अपने परिवार, प्रमुख योद्धा व खजाने सहित पश्चिम प्रदेश की पहाडियों में सुरक्षित हो जाएं और चित्तौड़ दुर्ग का भार जयमल राठौड़ और पत्ता चुंडावत को सौंपा जाए। यह निर्णय सरदारों के लिए दुखद अवश्य था परंतु दूरदृष्टि से सामयिक और समरनीति के अनूकूल था।

स्थापना का सटीक प्रमाण

उदयपुर की स्थापना तिथि को लेकर लोगों के मन में कई संशय थे। इतिहासकारों, संस्कृतिकर्मियों तथा प्रबुद्धजनों ने कई बार स्थापना तिथि को लेकर विचार मंथन किया। पारिस्थितिक एवं ऐतिहासिक साक्ष्यों के साथ ही भारतीय स्थापत्य विज्ञान से संबंद्ध विभिन्न ग्रंथों के तथ्य इस बात की ओर इंगित करते है कि महाराणा उदयसिंह ने अक्षय तृतीया के दिन ही उदयपुर का शिलान्यास किया था। महाराणा उदयसिंह मेवाड़ की तत्कालीन राजधानी चित्तौडगढ़ से अपने कुल भैरव को आमंत्रित कर यहां लेकर आए, जहां वर्तमान में धानमंडी स्कूल है। धानमंडी स्कूल में स्थापित गणेश प्रतिमा का प्रतिष्ठोत्सव अक्षय तृतीया के दिन ही मनाया जाता है। जो उदयपुर की स्थापना का सटीक प्रमाण है।

स्थापना का उत्सव 'उदयोत्सव'

संस्कृतिकर्मी एवं लोक गायक चंद्र गंधर्व की ओर से स्थापित मेवाड़ मंच द्वारा कई सालों तक उदयपुर का स्थापना उत्सव 'उदयोत्सव' के नाम से मनाया जाता रहा। स्वर्गीय मास्टर बलवंत सिंह मेहता, पंडित जनार्दनराय नागर, डॉ. गोपीनाथ शर्मा, पं. डॉ. राजशेखर व्यास, एडवोकेट अक्षय सिंह देवपुरा के अलावा एडवोकेट स्वरूप सिंह चुंडावत, ब्रिगेडियर जसवंत सिंह, डॉ. औंकार सिंह राठौड़, पं. शशि शेखर व्यास, वरिष्ठ पत्रकार विष्णु शर्मा 'हितैषी', पं. ललितशेखर पंड्या, देवकर्ण सिंह राठौड़, वैद्य अंबालाल पंड्या, गणेशलाल छाप्या, वैद्य राधागोविंद आचार्य जैसे साहित्य, संस्कृति, इतिहास और पुरातत्व को गहराई से जानने वाले निष्णात विद्वानों की मांग पर सन् 1993 में तत्कालीन कलेक्टर ने उदयपुर के स्थापना दिवस की तिथि अक्षय तृतीया वि. सं. 1610 को ही प्रशासनिक स्तर पर मान्यता दी। 'उदयोत्सव' कार्यक्रम में सैकड़ों शहरवासियों की भागीदारी रही। इसके बाद फिर एक बार कुछ लोगों ने स्थापना दिवस को लेकर भ्रांतियां फैलाई तो भंवर सेठ के सानिध्य में उदयपुर विचार मंच ने 9 नवंबर 2001 में प्रयास शुरू किए और एक समिति का गठन किया। इस समिति में अस्थल मंदिर के महंत व मेवाड़ महामंडलेश्वर मुरलीमनोहर शास्त्री को अध्यक्ष तथा वरिष्ठ अधिवक्ता अक्षय सिंह देवपुरा एवं दयालचंद सोनी को सदस्य मनोनीत किया। 4 मार्च को हुई बैठक में पं. निरंजन भट्ट, निदेशक, ज्योतिष महाविद्यालय, उदयपुर ने अक्षय तृतीया वि.सं 1610 की जन्म कुंडली पर प्रस्तुत मत का अवलोकन किया। इसके बाद सर्व सहमति से वैशाख शुक्ला तृतीया यानी अक्षय तृतीया को ही उदयपुर स्थापना दिवस मनाने की रवायत शुरू हुई।

स्थल जो लुभाते हैं देश-दुनिया को

सिटी पैलेस : उदयपुर के इतिहास व मेवाड़ के सूर्यवंशी महाराणाओं की आन-बान-शान का प्रतीक ये महल उस दौर की तमाम अनमोल विरासत को अपने में संजोये हुए है। सिटी पैलेस वास्तव में चार बड़े और कुछ छोटे महलों का एक समूह है, जो अलग-अलग समय में अलग-अलग महाराणाओं द्वारा निर्मित हैं। सिटी पैलेस में प्रवेश के लिए दो द्वार हैं। पहला द्वार बड़ी पोल कहलाता है और दूसरा त्रिपोलिया गेट। इसमें दीवारों पर राणा प्रताप द्वारा लड़े गए युद्धों के चित्र बने है। मोर चौक पर कांच की टाइल्स की कला का अच्छा नमूना देखा जा सकता है। यहां कांच की नृत्यरत मयूर आकृति कला का अद्‌भुत उदाहरण है।

पिछोला झील : उदयपुर शहर के सौंदर्य में पिछोला झील चार चांद लगाती है। सिटी पैलेस के ठीक पीछे पसरी इस झील का सौंदर्य सिटी पैलेस से ही नजर आता है। करीब चार किमी लंबी इस झील का नाम इससे सटे ब्राह्मणों के पिछोला गांव के आधार पर पड़ा।

जगनिवास महल : जगनिवास महल पिछोला झील के बीच स्थित है। इसे 1730 में महाराणा जगत सिंह ने बनवाया था। इसे वह अपने ग्रीष्म निवास के रूप में प्रयोग करते थे। पानी पर तैरता प्रतीत होता यह श्वेत महल विदेशी सैलानियों के आकर्षण का केंद्र है।

मोती मगरी : फतहसागर के सामने की इस पहाड़ी पर मेवाड़ के महान योद्धा महाराणा प्रताप का स्मारक है। मेवाड़ की बागडोर संभालने के बाद अपनी मृत्यु तक उन्होंने मुगालों से कई युद्ध लड़े, लेकिन हार नहीं मानी इनमें हल्दीघाटी का युद्ध सबसे ज्यादा उल्लेखनीय है। मोती मगरी स्मारक महाराणा फतह सिंह ने बनवाया था। यहां महाराणा प्रताप की अश्वारूढ़ प्रतिमा स्थापित है। इसके अलावा हकीम खान सूर तथा भामाशाह की प्रतिमाएं भी पर्यटकों को उनकी वीरता व दानशीलता की यादें दिलाती हैं।

महासतिया : यहां मेवाड़ के पूर्व महाराणाओं के छतरीनुमा स्मारक बने हैं। हर स्मारक के साथ एक अलग गाथा जुड़ी है। यहीं समीप आहाड़ क्षेत्र की प्राचीन सभ्यता और विरासत को दर्शाने वाला एक समृद्ध संग्रहालय भी है।

सहेलियों की बाड़ी : ये स्थल उदयपुर के प्रसिद्ध रमणीय स्थानों में शुमार है। यह राजपरिवार की स्त्रियों के आमोद-प्रमोद के लिए बनवाई गई एक शानदार वाटिका है। ये स्थान गर्मी में शीतलता लुटाता है। सुंदर बगीचों के बीच बनी छतरियों के किनारों पर फव्वारों की ठंडक पर्यटकों को सुहावनी लगती है।

बागोर की हवेली : पिछोला झील के किनारे गणगौर घाट पर बागोर की हवेली है। बागौर की हवेली संग्रहालय के रूप में पर्यटकों पर खासा प्रभाव छोड़ती है। हवेली के 138 कक्ष पर्यटकों को मेवाड़ की हवेलियों का वैभव दर्शाते हैं। यहां मेवाड़ शैली के 200 वर्ष पुराने भित्तिचित्र तथा त्रिपोलिया के ऊपर बने महलनुमा कक्ष में पच्चीकारी का काम आश्चर्यचकित करता है। इस समय यहां पश्चिम सांस्कृतिक केन्द्र का कार्यालय भी है।

जगदीश मंदिर : लगभग 350 वर्ष पुराना जगदीश मंदिर उदयपुर का सबसे बड़ा और भव्य मंदिर है। यह सिटी पैलेस के नजदीक है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु की प्रतिमा सुशोभित है। मंदिर प्रांगण में विष्णुवाहन गरूड़ की प्रतिमा भी स्थापित है। मंदिर की दीवारों पर बनी संगमरमर की कलात्मक प्रतिमाएं मंदिर को और शोभायमान बनाती हैं।

मेवाड़ के आराध्य : उदयपुर से लगभग 22 किमी दूर प्रसिद्ध एकलिंग नाथ का मंदिर स्थित है। ये मंदिर एक ऊंची चारदीवारी से घिरा है। इसके अंदर छोटे-छोटे 108 मंदिर हैं। मुख्य मंदिर के गर्भगृह में भगवान शिव की चतुर्मुखी काले संगमरमर की प्रतिमा विराजमान है। यह मेवाड़ के आराध्य देव और शासक हैं। महाराणा ने हमेशा अपने को मेवाड़ का दीवान ही कहा।

N.I.S.

NOBLE INTERNATIONAL SCHOOL

An English Medium Co-educational School

Points of Distinction

1. 100% Excellent result in X Board Exams with Distinction.
2. Every year 5-8 students are selected for "GARGI AWARD".
3. Proficient teachers from English medium background.
4. C.C.E. exam pattern.
5. Magnificent infrastructure with airy & green environment.
6. Well versed Computer lab & library.
7. Enabling child to speak fluent English by providing an English speaking environment.
8. Daily home work classes.
9. Regular workshops for Drama, Poetry, Story writing, Music, Dance, Fine Arts and craft to unfold the creative aspect of the student.
10. Psychologically designed personality enhancement programs.
11. Emphasis on mental & physical health through yoga, meditation and sports on regular basis.
12. Monthly parents teachers meeting.
13. Regular medical checkups.
14. Safe & secure transportation facilities.

ADMISSIONS OPEN

Playgroup to Class 10

Special Discount For girl Child

2, SAGAR DARSHAN, RANI ROAD, UDAIPUR (Raj.)

FOR ADMISSIONS CONTACT: 0294-2430930 **Email id :** nisudr2016@gmail.com

VISIT: www.nisudaipur.com

भाजपा का कर्नाटक विजय अभियान, लेफ्ट का वजूद खत्म, कांग्रेस फिर चूकी

पुराने प्रतिमान टूटने का दौर

सिफर से शिखर का सफर : पूर्वात्तर के तीन राज्यों से आए परिणामों ने राजनीति की दशा व दिशा बदली

–मोहन गौड़

नॉर्थ ईस्ट के चुनाव परिणाम से तीन चीजें झलकती हैं। भाजपा का उभार, लेफ्ट का पतन और कांग्रेस की दिशाहीनता। अब भाजपा कर्नाटक विजय अभियान के लिए कूच कर चुकी है। जबकि लेफ्ट संजीवनी तलाश रहा है और कांग्रेस में फिर दिशाहीनता की स्थिति है। त्रिपुरा की 60 सदस्यीय विधानसभा में पिछले 25 सालों यानी साल 1993 से मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के नेतृत्व वाले वाम मोर्चा का बहुमत था। यहां 20 साल से एक ईमानदार, नेकनीयत माणिक सरकार ही मुख्यमंत्री थे। सवाल यह है कि भाजपा देश के सबसे गरीब और ईमानदार मुख्यमंत्री की सरकार को उखाड़ फेंकने में कैसे कामयाब हुई? कैसे मतदाताओं को अपने पक्ष में करने के लिए उसने समीकरण जमाए? इसकी बड़ी वजह माणिक सरकार की ईमानदारी की आड़ में निचले स्तर पर फैला भ्रष्टाचार। दरअसल माणिक तो ईमानदार थे लेकिन सरकार में निचले स्तर पर भ्रष्टाचार को कंट्रोल नहीं कर पाए। और जब उन्हें लगा कि इसे कंट्रोल करना चाहिए तब तक भ्रष्टाचार पूरी तरह पांव पसार चुका था। ये भी कह सकते हैं कि नासूर बने घाव के लिए माणिक सरकार ने जैसे ही दवा की वह उनके लिए ही घातक बन गई। 5 साल पूर्व भाजपा ने 50 उम्मीदवार मैदान में उतारे थे, उनमें से 49 की जमानत जब्त हो गई थी। तब से ही भाजपा को यहां जमानत जब्त पार्टी के तौर पर ही देखा जाता रहा। लेकिन इस बार भाजपा ने सब कुछ उलट कर रख दिया। उसने चुनाव को चुनौती मानते हुए नाथ संप्रदाय के वोट बटोरने के लिए योगी आदित्यनाथ को भी बुला लिया। उसके रणनीतिकारों की बारीक सर्वे में सामने आया कि नाथ संप्रदाय के अनुयायी भी तस्वीर बदल सकते हैं। कांग्रेस की एप्रोच का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि ऐसे महत्वपूर्ण मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष की गैर मौजूदगी में पार्टी का सामना एक ऐसे दल से था जिसने क्षेत्रीय परिस्थितियों का बेहतर आकलन किया, फूलप्रूफ प्लानिंग की, सही गठबंधन किए, अथक परिश्रम और विजय के प्रति अर्जुन दृष्टि रखकर काम किया। इस सबके साथ उनके पास मोदी का चेहरा था जिसमें लोगों को उम्मीद की झलक दिखाई दी। इधर, चुनाव परिणाम के बाद भी बजाय आत्मचिंतन के लेफ्ट नेताओं ने आरोप लगा दिया कि धन बल और अनैतिक जरिए भाजपा ने त्रिपुरा में जीत हासिल की है। त्रिपुरा में भाजपा की जीत को एनकाउंटर पॉलिटिक्स का नाम देने वाली लेफ्ट अब भी हकीकत से रूबरू होने को तैयार नहीं है। लेफ्ट को ये स्वीकार करना होगा कि सैद्धांतिक जड़ता से बदले समय में लड़ाई नहीं जीती जा सकती। कुल मिलाकर पूर्वात्तर के चुनाव परिणाम माकपा नेतृत्व वाले वाममोर्चे को धक्का लगाने वाले और कांग्रेस के लिए सन्नीपात का कारण है। वाममोर्चा का 25 साल का गढ़ ध्वस्त हुआ तो कांग्रेस त्रिपुरा और नागालैंड में साफ हो गई। मेघालय में हालांकि वह सबसे बड़ी पार्टी अवश्य बनी है, पर सत्ता से दूर रही। शेष दलों की सीटें उससे काफी ज्यादा थीं। इस कारण वहां भी राजग सरकार का रास्ता प्रशस्त हो गया। नागालैंड के दोनों प्रमुख समूह भाजपा के साथ जाने को तैयार थे। यह बात अलग है कि भाजपा ने नेशनल डेमाक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी के साथ गठबंधन किया।

त्रिपुरा की जीत शाह की 'गुरुदक्षिणा'

ये बात पिछले साल की है। बीजेपी महासचिवों की एक बैठक में कुछ लोग त्रिपुरा चुनाव को लेकर ज्यादा उत्साहित नजर नहीं आ रहे थे। अमित शाह ने साफ तौर पर कह दिया – 'भले त्रिपुरा छोटा राज्य है लेकिन भाजपा के लिए बहुत महत्वपूर्ण' इसलिए है कि ये जीत न सिर्फ चुनावी जीत होगी,

बल्कि ये वैचारिक जीत भी साबित होगी। जिस त्रिपुरा में बीजेपी की हिस्सेदारी सिफर रही, उसके बारे में अमित शाह साल भर पहले ही आश्वस्त नजर आ रहे थे। एक दिन शाह ने संघ के सीनियर नेताओं से भी कहा था कि विजयादशमी पर दी जाने वाली गुरु-दक्षिणा वे 'अगले साल' यानी 2018 में समर्पित करेंगे। असल में ये गुरुदक्षिणा त्रिपुरा में बीजेपी की जीत थी। अमित शाह ने त्रिपुरा के संदर्भ में कथनी को बड़ी ही संजीदगी से करनी में तब्दील कर दिया है।

'नाथ' ने कराई चुनावी वैतरणी पार

त्रिपुरा में भी एक वक्त ऐसा आया जब बीजेपी को सत्ता करीब आ हाथ से फिसलती नजर आई। लेकिन ऐन वक्त अमित शाह ने ट्रंप कार्ड चल दिया – योगी आदित्यनाथ। त्रिपुरा में लेफ्ट के 25 साल पुराने चटख लाल रंग पर भगवा रंग चढ़ाने में अमित शाह का ट्रंप कार्ड रहे यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। त्रिपुरा में योगी आदित्यनाथ ने 7 जगह चुनाव प्रचार किया और उनमें से 5 पर बीजेपी ने भगवा फहराया है। ये इलाके त्रिपुरा में नाथ संप्रदाय का वर्चस्व रखते हैं। त्रिपुरा के इस हिंदू वोटबैंक पर बीजेपी की नजर पहले ही टिकी थी जहां तकरीबन 35 फीसदी आबादी नाथ संप्रदाय की है। योगी आदित्यनाथ पूरे देश में नाथ संप्रदाय के प्रमुख हैं। योगी आदित्यनाथ इससे पहले बीजेपी के लिए गुजरात और हिमाचल प्रदेश चुनावों में भी प्रचार कर चुके हैं लेकिन त्रिपुरा में ही वो सबसे बड़े स्टार साबित हुए। योगी नाथ संप्रदाय की गोरक्षनाथ पीठ के महंत हैं। त्रिपुरा में गोरक्षनाथ के दो मंदिर हैं, एक अगरतला में और दूसरा धर्मनगर में। त्रिपुरा में नाथ संप्रदाय को मानने वाले ओबीसी कोटे में आते हैं, लेकिन उन्हें आरक्षण का फायदा अब तक नहीं मिल पाया है। एससी और एसटी को मिल रहे 48 फीसदी आरक्षण के कारण माणिक की सरकार अब तक हाथ खड़े करती देती रही है। फिर पीएम मोदी ने समझाया कि त्रिपुरा के लोगों को 'माणिक' सूट नहीं कर रहा, इसलिए उन्हें 'हीरा' पहनना चाहिए। दरअसल 'हीरा' के एच का अर्थ हाइवे, ई का ईवे, आर का रेलवे और ए का अर्थ एयरवे था। माना जा रहा है कि लोगों ने मोदी की बात मान ली।

कर्नाटक चुनाव पर भी जीत का असर

पूर्वोत्तर राज्यों के चुनाव नतीजों का असर आने वाले समय में कर्नाटक, केरल, बंगाल और ओडिशा के विधानसभा चुनावों पर निश्चित रूप से पड़ेगा। हालांकि इस बात को विपक्ष मानने को तैयार नहीं है। चुनाव परिणाम के बाद कर्नाटक में कांग्रेस हतोत्साहित होती दिख रही थी, किन्तु हाल के कुछ लोकसभा सीटों व विधानसभा उपचुनावों में उसकी जीत ने उसमें उत्साह बढ़ा दिया है। जिस तरह पूर्वोत्तर की जनता मोदी के साथ खड़ी हुई है उसे संभावना बन रही है कि कर्नाटक में भी उलटफेर संभव है। हालांकि पूर्वोत्तर और कर्नाटक की राजनीति में अंतर है। फिर भी पूर्वोत्तर चुनाव परिणाम का असर तो पड़ेगा ही। इस चुनाव परिणाम ने जहां कांग्रेस के मनोबल को तोड़ा है वही बीजेपी के मनोबल को और मजबूत किया है। सबसे बड़ी बात यह है कि अगर कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस अपना वर्तमान स्टेटस कायम नहीं रख पाई तो उसकी राष्ट्रीय छवि पर असर पड़ेगा। इसका प्रभाव मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में होने वाले चुनावों में भी देखने को मिल सकता है। इसलिए पूर्वोत्तर का चुनाव जहां कर्नाटक को प्रभावित करता दिखता है ठीक उसी तरह से कर्नाटक के चुनाव परिणाम अगले साल के तीन बड़े राज्यों के चुनाव को प्रभावित करेंगे। गौरतलब है कि कर्नाटक में ईसाइयों की संख्या 3 फीसदी से ज्यादा है। पिछले कुछ समय से कांग्रेस के नेता बीजेपी पर ये आरोप लगा रहे थे कि वो ईसाइयों का ख्याल नहीं रखते। लेकिन अब उत्तर-पूर्व में जीत के बाद कांग्रेस, बीजेपी से इस मामले में फिलहाल सवाल नहीं कर सकत। दूसरा ये कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एक बार फिर बड़े नेता के तौर पर उभरे हैं और कर्नाटक के चुनाव में भी उनकी छवि का अहम रोल रहने वाला है।

पूर्वात्तर की सत्ता अब इनके हाथ में

त्रिपुरा : बिप्लब देब बने सीएम

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की त्रिपुरा इकाई के अध्यक्ष बिपल्ब कुमार देब राज्य के त्रिपुरा के नए मुख्यमंत्री बने। साथ ही पार्टी के जनजातीय नेता जिष्णु देबबर्मा को उप मुख्यमंत्री बनाया गया। यहां भाजपा ने 60 सदस्यीय विधानसभा में 35 सीटें हासिल की वहीं जनजातीय पार्टी आईपीएफटी ने आठ सीटों पर कब्जा जमाया है। माकपा ने 16 सीटें जीती हैं जबकि कांग्रेस अपना खाता खोलने में नाकाम रही।

मेघालय : कॉनराड संगमा बने सीएम

नेशनल पीपल्स पार्टी (एनपीपी) प्रमुख कोनराड संगमा ने मेघालय के 12वें मुख्यमंत्री पद के रूप में शपथ ले ली है। शपथ ग्रहण समारोह में केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह और बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह भी मौजूद रहे। सीएम संगमा के अलावा 6 अन्य विधायकों को भी मंत्री पद की शपथ दिलाई गई। 6 मंत्रियों में एनपीपी के दो (प्रिसटन तिनसांग और जेम्स संगमा) और बीजेपी के एक (एएल हेक) शामिल हैं। कॉनराड संगमा प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और लोकसभा अध्यक्ष रहे पीए संगमा के बेटे है। वे 2008 में सबसे युवा वित्त मंत्री भी बने। वर्ष 2009 से वर्ष 2013 तक कोनराड संगमा मेघालय विधानसभा में विपक्ष के नेता रहे।

नागालैंड : नेफ्यू रियो बने सीएम

नागालैंड के राज्यपाल पीबी आचार्य ने एनडीपीपी के नेता नेफ्यू रियो को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। पूर्वोत्तर राज्य के मुख्यमंत्री के तौर पर रियो का यह चौथा कार्यकाल है। बीजेपी के साथ गठबंधन में रियो राज्य में पीपुल्स डेमोक्रेटिक एलायंस सरकार का नेतृत्व कर रहे हैं। राज्यपाल ने बीजेपी के वाई पैटन को उपमुख्यमंत्री और दस अन्य मंत्रियों को भी पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। 10 मंत्रियों में से पांच बीजेपी से, तीन नेशनलिस्ट डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी (एनडीपीपी) से, एक निर्दलीय और एक जदयू विधायक है।

पसीने से परेशान तो करें उज्जायी प्राणायाम

पसीना आना अच्छे स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है, जब पसीना बहुत ज्यादा या बहुत कम आए तो यह बीमारी का संकेत है। अगर आप भी अधिक या कम पसीने की समस्या से परेशान हैं तो योग या प्राणायाम की सहायता से इस पर काबू पा सकते हैं।

पसीना आना अच्छे स्वास्थ्य की निशानी है। पसीने के रूप में शरीर के विषाक्त तत्व बाहर निकलते हैं, जिससे शरीर विषमुक्त होकर स्वस्थ होता है। किन्तु, जब पसीना आवश्यकता से कम या अधिक बाहर निकलने लगता है तो वह शरीर में अनेक रोग एवं समस्याओं के उत्पन्न होने का कारण बनता है। पसीना अधिक बाहर निकलने से शरीर के अनेक पोषक तत्व भी बाहर निकलने लगते हैं। यह अंत:श्रावी ग्रंथि के असंतुलन के कारण होता है। योग से इसका सहज समाधान संभव है।

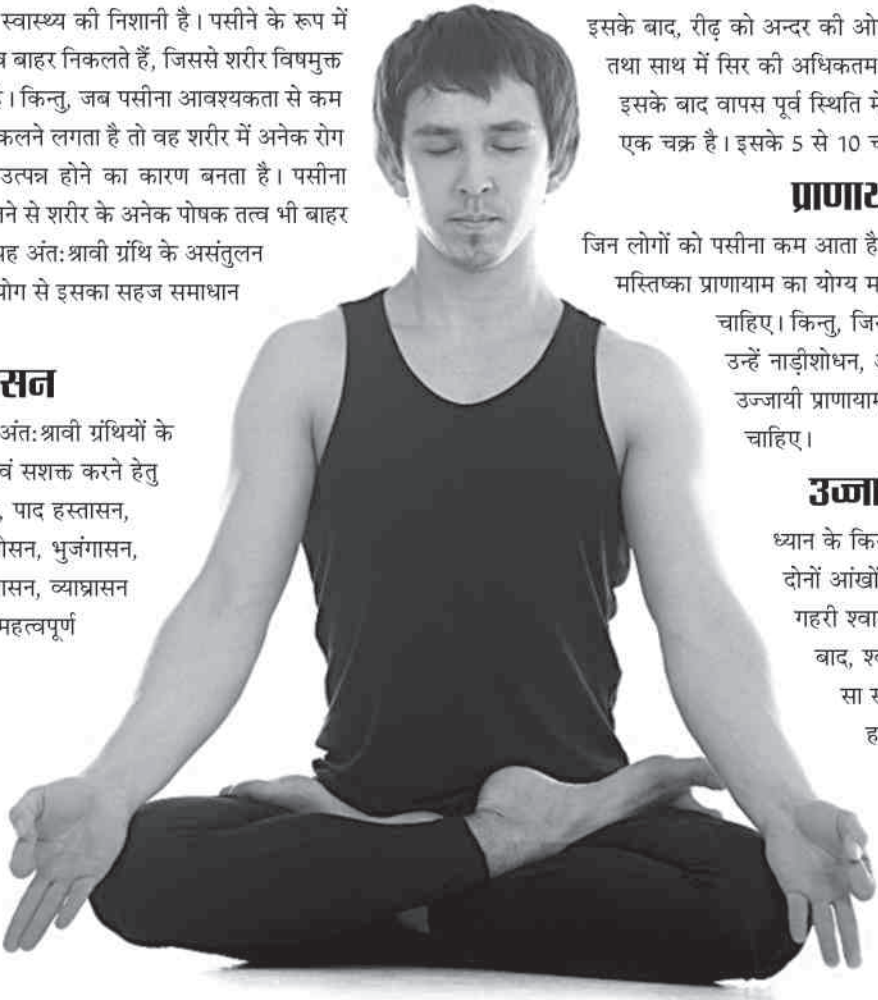

आसन

पाचन प्रणाली तथा अंत:श्रावी ग्रंथियों के श्राव को संतुलित एवं सशक्त करने हेतु सर्वांगासन, हलासन, पाद हस्तासन, त्रिकोणासन, राजपतोसन, भुजंगासन, धनुरासन, मार्जरि आसन, व्याघ्रासन आदि आसन बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

मार्जरि आसन

घुटने के बल जमीन पर खड़े हो जाइए। इसके पश्चात्, आगे झुकते हुए दोनों हाथों को जमीन पर सीधा रखिए। दोनों हाथों के मध्य एक से डेढ़ फीट का अन्तर तथा इसी प्रकार दोनों घुटनों के बीच भी इतना ही अन्तर रखिए।

अब रीढ़ को बिल्ली की भांति ऊपर की ओर दबाइए, साथ में सिर को आगे की ओर इतना झुकाइए कि ठुड्डी आगे कंठकूप से सट जाए।

इसके बाद, रीढ़ को अन्दर की ओर(बिल्ली की भांति) दबाइए तथा साथ में सिर की अधिकतम पीछे की ओर झुकाइए। इसके बाद वापस पूर्व स्थिति में आइए। यह आसन का एक चक्र है। इसके 5 से 10 चक्रों का अभ्यास कीजिए।

प्राणायाम

जिन लोगों को पसीना कम आता है उन्हें कपाल भाति तथा मस्तिष्का प्राणायाम का योग्य मार्गदर्शन में अभ्यास करना चाहिए। किन्तु, जिन्हें पसीना अधिक आता है, उन्हें नाड़ीशोधन, अनुलोम विलोम पर उज्जायी प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए।

उज्जायी प्राणायाम

ध्यान के किसी भी आसन में बैठ जाएं। दोनों आंखों को ढीली बन्द कर दस गहरी श्वास-प्रश्वास लीजिए। इसके बाद, श्वास नली को हल्का सा संकुचित करते हुए एक हल्के खर्राटे के साथ नासिका से एक गहरी श्वास अन्दर लीजिए। इसी प्रकार, एक गहरी श्वास नासिका द्वारा खर्राटे के साथ बाहर निकालिए। यह उज्जायी प्राणायाम की एक आवृत्ति है। इसकी 15-20 आवृत्ति का प्रारम्भ में अभ्यास कीजिए। धीरे-धीरे आवृत्ति संख्या बढ़ाते जाएं।

- कौशल कुमार

अपनाएं हल्का, संतुलित आहार

सादा, संतुलित तथा हल्का आहार लेना सर्वोत्तम है। मांसाहार, गरिष्ठ तथा तले-भुने एवं मसालेदार भोज्य पदार्थ के सेवन से बचना चाहिए। फलों में अनार, संतरा, अंगूर, अमरुद तथा अन्य मौसमी फलों का सेवन करना चाहिए। हरी सब्जी-बथुआ, पालक, परव, तोरई, लौकी तथा कद्दू आदि का पर्याप्त सेवन करना चाहिए।

इन बातों का ध्यान रखें

नहाते समय शरीर के अंगों को तौलिये से अच्छी तरह रगड़-रगड़ कर नहाना चाहिए। पर्याप्त विश्राम एवं 7-8 घंटे की नींद लेनी चाहिए।

मानव सेवा में समर्पित

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान

एक बार अवश्य पधारें–मान्यवर !

पू. कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष

नि:शुल्क दिव्यांग ऑपरेशन

नि:शुल्क केलिपर्स

नि:शुल्क कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण

नि:शुल्क फिजियोथेरेपी

नि:शुल्क भोजन

नि:शुल्क कम्प्यूटर हार्डवेयर प्रशिक्षण

नि:शुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण

नि:शुल्क मोबाइल रिपेयरिंग प्रशिक्षण

नि:शुल्क इलेक्ट्रीकल प्रशिक्षण

नि:शुल्क सिलाई प्रशिक्षण

नि:शुल्क हस्तशिल्प प्रशिक्षण

नि:शुल्क दिव्यांग विवाह

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सेवाधाम सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002

Tel.+91-294-6622222, Mobile: +919649499999
Web: www.narayanseva.org
E-mail: info@narayanseva.org

पौधों पर खास नज़र की दरकार

ऐसे तो घर के गार्डन में लगे पौधे हर मौसम में देखभाल मांगते हैं, पर गर्मियों में इनको खास देखभाल चाहिए। हर पौधे की ज़रूरत को जानना-समझना होगा। प्रस्तुत है, इस सम्बन्ध में कुछ आवश्यक जानकारी।

गर्मियों में बागवानी कोई आसान काम नहीं है। इसे एक चुनौती के रूप में लिया जाना चाहिए। इस मौसम में अगर आपने एक भी दिन अपने पौधे की देखभाल नहीं की तो दूसरे दिन शायद ही आपका पौधा सही मिले। जैसे-जैसे वातावरण में गर्मी बढ़ रही है, वैसे-वैसे सब चीजें सूख सी रही हैं। ऐसे में घर में लगे पौधे भी गर्मी के प्रकोप का शिकार बन रहे हैं। यही कारण है कि बगीचे से प्रेम करने वालों की चिन्ता बढ़ती जा रही है। पौधे पूरी गर्मी हरे-भरे बने रहें और आपकी मेहनत सफल हो जाए, इसके लिए करने होंगे कुछ अहम उपाय।

जानें पौधों की जरूरत

गर्मी में अगर आपको पौधों की सही देखभाल करनी है तो पहले हर पौधे की जरूरतों को जानें। सबसे पहले अपने बगीचे की पहचान कर लें। किस पौधे को पानी की कितनी जरूरत है और कौन सा पौधा किस जगह पनपेगा, यह जानना भी जरूरी है। पेड़ लगाने की जगह, पानी का कनेक्शन, पौधे की खूबी आदि के बारे में जान लें।

न होने दें पानी की कमी

गर्मी के समय वातावरण पौधों से सारी नमी खींच लेता है। पौधों की जड़ों में पानी सूख जाता है और इससे उन्हें जितना पोषण मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पाता। लगातार पानी डालने से पौधे हमेशा फ्रेश रहेंगे, लेकिन पौधों में पानी उनकी जरूरत के हिसाब से ही डालें। गर्मी के सीजन में पौधों में पानी उस समय डालें, जब धूप ना हो। यानी सुबह सूरज निकलने से पहले और शाम को सूरज डूबने के बाद।

पौधों को रखें सही स्थान पर

कुछ पौधे ऐसे होते हैं, जो सूरज की तेज धूप नहीं सह सकते। इन पौधों को बचाने के लिए शेड का प्रयोग करें या फिर उन पौधों को कम धूप वाली जगह रख दें। अपने बगीचे में पौधों को इस प्रकार व्यवस्थित कर सकते हैं कि उन पर दोपहर की तेज धूप कम से कम पड़े।

गर्मियों में उगाएं

- बोगनवेलिया, हैबिस्कस, रात की रानी, चमेली, मोतिया, मोगरा, मोरपंख, फाइकस, गेंदा आदि आप गर्मियों में उगा सकते हैं।
- स्नेक प्लांट को आप घर के अन्दर गमले में या बाहर बगीचे में कहीं भी लगा सकते हैं। स्नेह प्लांट घर के अंदर लगाने पर हवा को स्वच्छ करने में सहायक होता है।
- टिलैंडसिया पर एयर प्लांट दिखने में अलग तरह के होते हैं। ये मिट्टी की बजाय हवा से पोषक तत्व और नमी लेते हैं। ये पौधे अगर एक हफ्ते में 30 मिनट के लिए भीगे रहते हैं तो भी ये बढ़िया चलेंगे।
- इसी तरह डेजर्ट रोज गर्म इलाकों का पौधा है, जो कम पानी और कम धूप में आराम से चल जाता है।
- पोनीटेल पाम पोनीटेल चोटी से निकले बालों जैसा लगता है। इसे गर्मी में हफ्ते में एक दो बार और जाड़ों के महीने में एक बार पानी की जरूरत पड़ती है।
- मनी प्लांट में कम पानी चाहिए।

खाद भी जरूरी

गर्मी के सीजन में आप अपने पौधों में रासायनिक खाद ना डालें तो ज्यादा बेहतर है। गर्मियों में आप जैविक खाद या गोबर खाद पौधों में महीने दो बार डाल सकते हैं। लगभग 20-50 ग्राम प्रति पौधा खाद आप डाल सकते हैं।

कीट नियंत्रण

गर्मियों के दिनों में बगीचे और पेड़-पौधों को कीट से दूर रखने के लिये प्राकृतिक कीटनाशक का प्रयोग करना सही रहेगा।

संरक्षण

- पौधों को सूखने से बचाने के लिये आप अपने बगीचे को ग्रीननेट से कवर कर सकते हैं। यह बाजार में आसानी से और सामान्य कीमतों पर उपलब्ध है।
- पौधों की सूखी टहनियां या सूखा भाग तुरन्त काट देना चाहिये।
- पौधों पर फूल खिलने के बाद बड को काट दें, ताकि पौधों की ऊर्जा बढ़त में काम आए।

– शिवनिका

TALENT ACADEMY SR. SEC. SCHOOL

Since 2000

(English & Hindi Medium)

Nursery to XII (Com.)

ADMISSION OPEN

Contact Time: 7.30 am to 1.00 pm

TALENT INTERNATIONAL SCHOOL

(NURSERY TO VIII) English Medium

Special Features

- Play Way Teaching & Audio Visual Aid.
- CCE Pattern & Smart Classes.
- Computer Education
- CCTV Camera in School Campus
- Garden and Playground
- Qualified & Experienced Staff.
- Individual Attention
- School Bus Facilities
- SMS Facilities
- Best Education in Minimum Fees
- Successfully Running With Commerce Streams
- Best Board Result
- Water Cooler

Behind Petrol Pump, Pula, Udaipur (Raj.) Tel 0294-800161
Mobile : 9828553618 Email: talentinstitution@gmail.com
Website : www.talentinstitution.com

श्री Ψ

Shankar Lal 9414160690
Jyoti Prakash 9414161690
Chetan Prakash 9413287064

Jyoti Stores

(A Leading Merchant in Ayurvedic Medicines)

ज्योति स्टोर्स

Out side Delhi Gate, UDAIPUR - 313 001 (Raj.)

Ph. : 2420016 (S), 2415690 (R)

Factory : Jhamar Kotra Main Road, EKLINGPURA, Udaipur, Ph. : 2650460

E-mail : jagritiherbs@yahoo.co.in, Website : www.jagritiayurved.com

ऐसा हो शयन कक्ष जो दे खुशियां

हर व्यक्ति की इच्छा रहती है कि घर-परिवार में खुशहाली और उन्नति के अवसर सदैव सुलभ हों। जीवन में भागम-भाग और व्यस्तता के बीच इंसान उस वास्तु विज्ञान से प्रायः अनभिज्ञ रहता है, जो उसे सहजता से आनंद, खुशहाली और उन्नति के सुनहरे अवसर उपलब्ध करा सकता है। काम धन्धे और व्यस्तता के बाद सभी सुकून भरे क्षणों की तलाश में रात के पहले पहर में शयनकक्ष की ओर पहुंचते हैं, लेकिन बेडरूम वास्तु अनुरूप नहीं होने से जीवन की मधुर धुन सुनने और थकान से मुक्ति दिलाने वाले क्षण प्राप्त नहीं हो पाते। इसके कारगर उपाय बता रहे हैं प्रसिद्ध वास्तुशास्त्री **डॉ. ज्योतिवर्धन साहनी।**

- सोते समय हमारा सिर उत्तर दिशा में नहीं होना चाहिए, नहीं तो नींद में बाधा रहती है। दक्षिण में सिर करके सोने से अच्छी नींद आती है। पश्चिम और पूर्व दिशा में भी सिर करके सोना अच्छा माना गया है। सोते समय हमारे ऊपर बीम/दुछत्ती आदि स्थायी भार नहीं होने चाहिए।
- बेड के बॉक्स में धातु के बर्तन, पुरानी घड़ियां, टूटे फोन, इलेक्ट्रिक या इलेक्ट्रॉनिक या चुम्बकीय सामान नहीं होना चाहिए, वरना कई तरह की शारीरिक पीड़ाओं से परेशान रहेंगे।
- सोते समय बेड किसी दर्पण में न दिखे, वरना आधा शरीर दर्पण में दिखना शारीरिक व्याधि लाता है। यदि मजबूरी में दर्पण बेड के सामने आता है और हटा नहीं सकते तो रात को उसे कपडे से ढंककर सोएं।

- बेडरूम में पार्टी वगैरह नहीं करनी चाहिए, वरना शयनकक्ष में नकरात्मक ऊर्जा एकत्र होकर आपस में क्लेश की स्थिति उत्पन्न कराती है।
- विवाहित लोगों के शयन कक्ष में पूजा स्थान अथवा छोटा सा मंदिर नहीं बनाना चाहिए। भगवान की कोई बड़ी मूर्ति या तस्वीर भी नहीं लगानी चाहिए। यदि जगह की तंगी की वजह से पूजा स्थान कमरे में बनाना भी पड़े तो सुबह-शाम पूजा करके पर्दा लगाकर उसको बंद रखें।
- बेडरूम में हिंसक जानवरों की तस्वीर न लगाएं। दरवाजे से थोड़ा हटाकर ही बेड लगाएं। कमरे में वॉशबेसिन, एक्वेरियम या नदी/समुद्र की तस्वीरें नहीं होनी चाहिए। पेड़-पौधे भी बेडरूम में न लगाएं। हां, रोजाना ताजा फूलों का गुलदस्ता रख सकते हैं। टीवी या लैपटॉप आदि इलेक्ट्रोनिक सामान को ढककर ही सोना चाहिए, वरना नींद में खलल पड़ती है।
- नवविवाहित जोड़े को ईशान(उत्तर-पूर्व) या आग्नेय(दक्षिण-पूर्व) कमरे में नहीं सोना चाहिए, वरना रिश्तों में प्रगाढ़ता आने में बाधा उत्पन्न हो सकती है।
- बच्चों व युवाओं को पूर्व, ईशान व उत्तर दिशा के कमरों में सोना चाहिए। घर के वयस्क और वृद्ध लोगों का पश्चिम व दक्षिण के कमरों में सोना अच्छे परिणाम देता है। मेहमानों के लिए वायव्य (उत्तर-पश्चिम) का कमरा वास्तु अनुरूप शुभ है।
- विवाह योग्य कन्याओं को वायव्य या आग्नेय दिशा का कमरा अच्छे परिणाम देता है। इससे समय पर व सही वर की प्राप्ति होती है।
- रद्दी कबाड़, भारी फर्नीचर व खराब हो चुकी वस्तुओं को शयनकक्ष में भूलकर भी नहीं रखें, इनसे सकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाती है।
- हफ्ते में दो बार बेडरूम में नमक के घोल से पोंछा लगाना अच्छा माना गया है। कांच के कटोरे में समुद्री नमक भरकर बेडरूम में रखें व हर महीने उसे बदलते रहें तो नकारात्मक ऊर्जा नष्ट होती रहेगी।
- अच्छे संबंधों के लिए दिशा अनुसार हल्के रंगों का प्रयोग दीवारों और फर्नीचर पर करें। बेडरूम में काला फर्नीचर और गहरे रंग की दीवारें अकेलेपन की ओर धकेलती हैं।

0294-2522108 (ऑफिस)
0294-2416281 (निवास)
भंवरलाल खटीक
एम.डी.
94141-67281
हेमेन्द्र खटीक
डायरेक्टर
9887111453
धर्मेश खटीक
डायरेक्टर
9829511888
प्रगति रियल मार्ट प्राइवेट लिमिटेड
भंवर सेवा संस्थान
स्व. सुशीला देवी खटीक चेरिटेबल ट्रस्ट
7, गुलाबेश्वर मार्ग, गली नम्बर 5, हाथीपोल, उदयपुर (राज.)

सेहत से भरपूर खुराक : शहद

शहद हमें छोटी-बड़ी कई बीमारियों से बचाता है। यह आयरन, कैल्शियम, फॉस्फेट, सोडियम, क्लोरिन, पोटेशियम और मैग्नीशियम का एक बेहतरीन स्रोत है। यही वजह है कि विशेषज्ञ प्राकृतिक मिठास के लिए शहद को सबसे उचित स्रोत मानते हैं। आइये जानें शहद के क्या-क्या हैं फायदे।

शहद में विटामिन, मिनरल्स, एंजाइम्स होते हैं, जो शरीर को बैक्टीरिया से बचाते हैं और हमारी रोग-प्रतिरोधी क्षमता में इजाफा करते हैं। इससे कोल्ड व फ्लू के लक्षण जैसे कफ, गले के दर्द में आराम मिलता है। रोग-प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाने के लिए हर दिन एक गिलास गर्म पानी में 1-2 टेबल स्पून शहद मिला कर पिएं। ज्यादा फायदे के लिए ताजे नींबू का रस और थोड़ी दालचीनी मिला कर पिएं।

वजन घटाए

हर सुबह खाली पेट एक गिलास गर्म पानी में ताजे नींबू का रस और शहद डाल कर पिएं तो शरीर डीटॉक्स होता है। नियमित तौर पर इसे पीने से लिवर के अलावा पूरे शरीर से विषैले पदार्थ बाहर तो निकलते ही हैं, अनावश्यक चर्बी भी शरीर से बाहर निकल जाती है।

दिल से बीमारियां रहती हैं दूर

विशेषज्ञों के मुताबिक शहद और दालचीनी का मिश्रण हृदय की धमनियों व नसों में नई ऊर्जा भरता है और खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा 10 फीसदी तक कम कर देता है। इस मिश्रण का रोजाना सेवन करने से दिल के दौरे का खतरा कम होता है। एक-दो टेबल स्पून शहद व एक-तिहाई टेबल स्पून दालचीनी को चीनी गर्म पानी में मिला कर पिएं।

बदहजमी में मिले आराम

यह एसिडिटी में राहत देता है, खाना हजम करने में मदद करता है और पेट में गैस नहीं बनने देता। गरिष्ठ भोजन करने से पहले अगर एक या दो चम्मच शहद खा लिया जाए तो खाना आसानी से पच जाता है। अगर आप पहले ही गरिष्ठ भोजन कर चुके हैं तो गर्म पानी में नींबू और शहद डालकर पिएं।

ऊर्जा में बढ़ोतरी के लिए

शहद में पाई जाने वाली प्राकृतिक मिठास शरीर में कैलोरी व ऊर्जा का बेहतर स्रोत है, इसलिए चीनी की जगह शहद का इस्तेमाल करना अच्छा है।

-डॉ. शोभालाल औदिच्य

और भी हैं खूबियां

- यह रूखी त्वचा के लिए एक बेहतरीन मॉइस्चराइजर है। त्वचा पर 30 मिनट तक शहद लगाए रखें व धो लें।
- दिन भर की थकावट के बाद शरीर को आराम देने के लिए शहद की कुछ बूंदें पानी में मिला कर नहा लें।
- इसे फेस मास्क की तरह भी लगा सकते हैं। शहद में दो चम्मच दूध मिला कर चेहरे पर लगाएं व 10 मिनट छोड़ दें। फिर धो लें।
- शहद बालों में नमी प्रदान करने के साथ स्कैल्प को भी साफ बनाए रखता है। इसके लिए शैम्पू में एक चम्मच शहद मिला कर बाल धो लें।

Rajesh Sahu
94147-18315

Kamlesh Sahu
77374-15558

हारे का सहारा बाबा श्याम हमारा

श्री श्याम कलेक्शन

रेडीमेड कपड़ों के होलसेल व रिटेल व्यापारी

भाग्य उदय प्रोपर्टीज

प्लॉट, मकान, दुकान, कृषि भूमि आदि क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें ।

4, पुलिस थाना रोड़ कार्नर, धानमण्डी, उदयपुर (राज.)

Aashirwad Minerals & Marbles

Mfg. of Soap Stone Powder (Talc Powder), Calcium Carbonate Powder
China Clay Powder, Silica Powder & Dolomite Powder

Office :
E-93, Pratap Nagar,
Udaipur - 313001 (Raj.) INDIA

Factory :
Jyoti Mineral Industries
Plot No. G-1-80, IID Centre
RIICO Ind. Area, Kaladwas, Udaipur (Raj.)

Telefax : 0294-2490194 | E-mail : ashirwadtalc@yahoo.com | www.ashirwadminerals.com

चायवाला कमाता है 12 लाख मासिक

पुणे। देश में करोड़ों लोग चाय की दुकानें चलाते हैं। जिनमें से कुछ जनों की आमदनी इतनी भी नहीं है कि अपना घर भी चला पाएं। लेकिन कुछ चायवाले तो लाखों में कमा लेते हैं। ऐसा ही एक चाय वाला है जिसकी आमदनी महीने के 12 लाख रुपए है। महाराष्ट्र के नवनाथ येवले चाय बेचकर महीने के करीब 12 लाख रुपए कमा लेते हैं। नवनाथ के अनुसार 2011 में उन्हें चाय ब्रेड बेचने का आइडिया आया। जिसके बाद उन्होंने येवले टी हाउस शुरू किया और धीरे-धीरे उनकी चाय के स्वाद ने लोगों को दीवाना बना दिया। आज ये आलम है कि उनके टी स्टॉल में रोज हजारों कप चाय बिकती है। येवले ने बताया कि शहर में उनके दो आउटलेट हैं। एक दिन में वो करीब चार हजार से ज्यादा चाय बेचते हैं और हर आउटलेट पर करीब 12 लोग काम करते हैं। येवले कहते हैं कि अब वे अपनी चाय को अंतरराष्ट्रीय ब्रांड बनाना चाहते हैं।

किनारा

कोहली नहीं कहेंगे 'मेरा अपना बैंक'!

अपनी इमेज को लेकर हमेशा संजीदा रहने वाले टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली पीएनबी के साथ चल रहे करार को आगे नहीं बढ़ाने के मूड में है। वे नीरव मोदी घोटाले में फंसी पीएनबी के ब्रैंड एंबेसडर तौर पर अपना करार तोड़ सकते हैं, हालांकि बैंक की ओर से स्पष्ट किया गया था कि कोहली अब भी उनके ब्रैंड एंबेसडर हैं। जबकि कोहली के मैनेजर ने बताया कि अभी तक इस कॉन्ट्रैक्ट को आगे बढ़ाने के लिए कोई बात नहीं की गई है यानी स्पष्ट है कि हम इसे आगे नहीं बढ़ा रहे हैं। उनकी ओर से यह करार नहीं तोड़ने की बात भी कोहली के मैनेजर ने कही। पिछले दिन कोहली ने कंपनी के साथ अपना करार यह कहकर खत्म कर दिया था कि जिस चीज को वह खुद इस्तेमाल नहीं करते, उसका प्रचार नहीं कर सकते हैं।

चूक

विधानसभा में तमंचा

राजस्थान विधानसभा में गत दिनों बसपा विधायक मनोज न्यांगली तमंचे के साथ पहुंच गए। वे 2 घंटे चली बहस में शामिल भी हुए लेकिन जैसे ही कैमरे में पिस्टल नजर आई मामला खुल गया। विधानसभा जैसे अत्यन्त सख्त सुरक्षात्मक स्थान पर विधायक के पिस्टल के साथ आने के बाद मामले ने तूल पकड़ा। इससे मामले में सुरक्षाकर्मियों का कहना था कि हम वीआईपी को नाराज नहीं करना चाहते थे। बाद में सुरक्षा के और पुख्ता इंतजाम किए गए।

दुर्लभ

'एमके गांधी' वाली तस्वीर 27 लाख में नीलाम

महात्मा गांधी के हस्ताक्षर वाली एक दुर्लभ तस्वीर अमेरिका में 41,806 डॉलर यानी 27 लाख 22 हजार 615 रुपए में नीलाम हुई। इस तस्वीर में गांधी, पं. मदन मोहन मालवीय के साथ दिख रहे हैं। बोस्टन स्थित आरआर ऑक्शन के मुताबिक, यह तस्वीर लंदन में सितंबर, 1931 में दूसरे गोलमेज सम्मेलन के बाद ली गई थी। इस दुर्लभ तस्वीर पर फाउंटेन पेन से महात्मा गांधी ने 'एमके गांधी' लिखकर अपने हस्ताक्षर किए हैं। आरआर ऑक्शन के अनुसार यह तस्वीर उस वक्त की है जब गांधी अपने दायें हाथ के अंगूठे में पीड़ा से गुजर रहे थे। 17 फरवरी से शुरू हुई 'फाइन ऑटोग्राफ्स एंड आर्टिफैक्ट्स' नीलामी 7 मार्च को संपन्न हुई।

गड़बड़ी

तो फिर हमारा क्या होगा?

राजस्थान की जनता को आजकल प्राइवेट हॉस्पिटलों से डर लगने लगा है। दरअसल ये तब हुआ है जब राज्यपाल को एसएमएस हॉस्पिटल में स्वाइन फ्लू का रोगी बताया। दिल्ली में इसकी रिपोर्ट नेगेटिव आई। इसके बाद गठित बोर्ड ने जांच कर एसएमएस की रिपोर्ट को सही बताया। राज्यपाल के साथ हुई लापरवाही से प्राइवेट हॉस्पिटलों में जाने से लोग कतराने लगे हैं। कई जगह लोग इस घटना का हवाला देकर प्राइवेट हॉस्पिटलों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान खड़े करने लगे हैं।

बहस

न्यूरोसर्जन पागलों का डॉक्टर नहीं होता

बात पिछले दिनों विधानसभा की है। भूतों को लेकर यहां चर्चा हो रही थी। विधायकों ने इसके लिए तंत्रमंत्र से लेकर झाड़फूंक तक के सुझाव दे डाले। यानी मामला भूतों से पागलों पर शिफ्ट हो गया। इसी दौरान रामगढ़ के विधायक ज्ञानदेव आहूजा ने पागलों के इलाज के लिए न्यूरोसर्जन लगाने की मांग की। ये सुनते ही विधानसभा में हंसी के ठहाके लगने लगे। जवाब में स्वास्थ्य मंत्री कालीचरण सर्राफ ने समझाया कि न्यूरोसर्जन पागलों का नहीं बल्कि दिमाग के ऑपरेशन का डॉक्टर होता है। बाद में इस मसले पर आहूजा की जमकर कांग्रेस और भाजपा ने क्लास ली।

पी.आई.एम.एस. हॉस्पिटल, उमरड़ा, उदयपुर

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

बाल एवं शिशु शल्य रोग विभाग

डॉ. प्रवीण झंवर

एम.एस. (जनरल सर्जरी)
एम.सी.एच. (पिडियाट्रिक सर्जरी)
From Lady Harding Medical College & Kalawati Saran Children Hospital, New Delhi
बाल शल्य चिकित्सक

नवजात शिशु के ऑपरेशन

+ भोजन नली व श्वास नली का जुड़ा होना (TEF)
+ पेशाब के रास्ते जन्म से रूकावट (PUV)
+ आँतो का पूरा ना बनना (Intestinal Atresia)
+ लेट्रिंग का रास्ता नहीं बनना (Imperforate Anus/Anorectal Malformation)
+ लीवर, पेट व पेशाब संबंधी
+ गर्भ में बच्चे के विकार सम्बंधी काउंसलिंग (Fetal Counseling)

बच्चों के पेट के ऑपरेशन

+ अपेंडिक्स
+ आँतो में रूकावट
+ हर्निया, हाइड्रोसील
+ अण्डकोषो का नीचे ना होना
+ पीलिया के सर्जिकल कारण (Choledochal Cyst, EHBA)

बच्चों के गुर्दे/पेशाब संबधी इलाज

+ गुर्दो में रूकावट + पाइलोप्लास्टी + पेशाब में रूकावट + पथरी + हाइपोस्पेडियास, एपीस्पेडियास (लिंग में विकार)

ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का नि:शुल्क उपचार

कैशलेस सुविधा | तुरन्त भर्ती एवं जाँच | तुरन्त उपचार | नि:शुल्क दवाईयाँ

सेवाओं में विस्तार के साथ निम्न इंश्योरेन्स कम्पनियों हेतू टी.पी.ए. विपुल मेड कोर्प द्वारा अधिकृत संस्थान

नेशनल इंश्योरेन्स National Insurance
IFFCO-TOKIO GENERAL INSURANCE
Apollo Munich HEALTH INSURANCE
bharti AXA general insurance
Universal Sompo General Insurance Co. Ltd.
RELIANCE General Insurance
HDFC ERGO
Max Bupa Health Insurance
ICICI Lombard

साई तिरूपति यूनिवर्सिटी
उदयपुर

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज	MBBS	0294-3010000, 9587890082
वेन्केटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग	B.Sc., M.Sc.	0294-3010015, 9587890063
वेन्केटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग	GNM	0294-3010015, 9587890063
वेन्केटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी	D. Pharma	0294-3010015, 9587890082

अम्बुआ रोड, ग्राम-उमरड़ा, तहसील: गीर्वा, उदयपुर (राज.)
+91-294-3010000, +91-9587890122, +91-8696440666

कैंसर से कम, थेरेपी से ज्यादा मर रहे हैं मरीज

कैंसर की चिकित्सा को लेकर एक चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है। एक रिसर्च में पता चला है कि कुछ अस्पतालों में कैंसर की दवाएं ही 50 प्रतिशत मरीजों की जान ले रही हैं। रिसर्च में इस बात की भी हिदायत दी गई है कि लोगों को कीमोथेरेपी के खतरों भी समझना चाहिए। रिसर्च में उन मरीजों पर गौर किया गया जिन्होंने 30 दिन के अंदर-अंदर कीमोथेरेपी ली। ताज्जुब की बात है कि जो मरीज मरे उसका कारण बीमारी के बाद ली जाने वाली देवाओं को बताया गया है न कि कैंसर को। द टेलीग्राफ की रिपोर्ट के मुताबिक, पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड और कैंसर रिसर्च यूके ने समूचे इंग्लैंड में फेफड़े के कैंसर के 8.4 प्रतिशत और स्तन कैंसर के 2.4 प्रतिशत मरीजों पर अध्ययन किया जो इलाज के एक माह के अंदर चल बसे थे। किसी-किसी अस्पताल में तो मरीजों की मौत का आंकड़ा कुछ ज्यादा ही निकला। मिल्टन किंस अस्पताल में फेफड़े के कैंसर से मौत का प्रतिशत 50.9 दर्ज किया गया। कैंब्रिज यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल में हर पांच में से एक मरीज की मौत हो गई जो स्तन कैंसर के इलाज में दर्द निवारक थेरेपी ले रहे थे।

...जबकि कीमोथेरेपी का है बड़ा रोल

पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड के डॉ. जेम रैशबाश ने बताया, कैंसर के इलाज में कीमोथेरेपी अहम रोल अदा करता है। पिछले चार दशक में अगर कैंसर रोगियों में कुछ सुधार हुआ है, तो इसके पीछे कीमोथेरेपी का हाथ है। जिन अस्पतालों में मौत का आंकड़ा ज्यादा मिला है उनसे यह रिपोर्ट साझा की गई है उन्हें इस पर गंभीरता से विचार करने को कहा गया है। स्टडी में स्तन कैंसर से पीड़ित 23 हजार महिलाओं और फेफड़े के कैंसर से जूझने वाले 9634 मरीजों पर गौर किया गया जिन्होंने 2014 में कीमोथेरेपी ली थी। इनमें 1,383 मरीजों की 30 दिन के अंदर मौत हो गई।

क्या है कीमोथेरेपी का घाटा

कीमोथेरेपी शरीर के लिए जहर का काम करता है क्योंकि इसकी किरणें स्वस्थ और कैंसरयुक्त कोशिकाओं में अंतर नहीं कर पातीं। रिसर्चरों ने यह भी पाया कि कीमोथेरेपी का असर उम्रदराज और बिगड़ी सेहत के लोगों में अलग-अलग पाया गया। स्टडी में डॉक्टरों को सलाह दी गई है कि वे इलाज करते वक्त इस बात का खयाल रखें कि फायदे से ज्यादा नुकसान न हो जाए।

डिमेंशिया

सिर की चोट से याददाश्त कम होने का खतरा

लंदन। एक ताजा अध्ययन में सामने आया है कि याददाश्त कमजोर पड़ने से जुड़ी गंभीर बीमारी डिमेंशिया की बड़ी वजह सलों पहले सिर में लगी चोट भी हो सकती है। वैज्ञानिकों ने एक विस्तृत अध्ययन के आधार पर कहा है कि अगर आपको कभी सिर में गंभीर चोट लगी हो तो उसका असर 30 साल बाद डिमेंशिया बीमीर के रूप में देखा जा सकता है। चोट जितनी गंभीर होगी डिमेंशिया का इलाज उतना ही मुश्किल होगा। स्वीडन की ऊमिया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अनुसार आम लोगों के मुकाबले, डिमेंशिया बीमारी छह गुना ज्यादा उन लोगों को होती है जिन्हें कभी सिर में गहरी चोट आई हो। ये नतीजे स्वीडन में रहने वाले करीब दस लाख लोगों पर किए गए अध्ययन के बाद सामने आए हैं। जिन्हें देखते हुए कई संस्थानों ने फुटबॉल, रग्बी, मुक्केबाजी के खिलाड़ियों को लगने वाली गंभीर चोटों को लेकर चिंता जताई है।

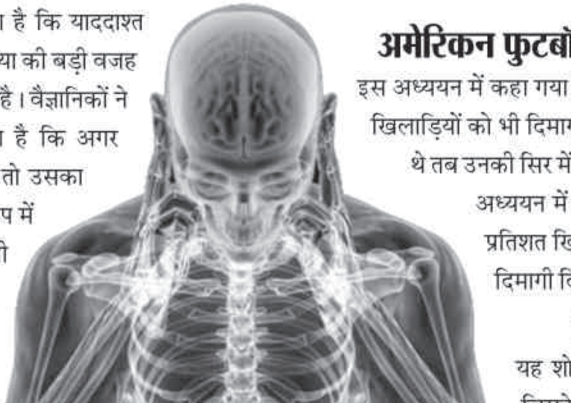

अमेरिकन फुटबॉल खेलने वालों को खतरा

इस अध्ययन में कहा गया है कि अमेरिकन फुटबॉल खेलने वाले पूर्व खिलाड़ियों को भी दिमाग से जुड़ी दिक्कतें हुईं, क्योंकि जब वे खेलते थे तब उनकी सिर में चोटें आई थीं। शोधकर्ताओं ने अध्ययन में यह भी बताया कि ये गेम खेलने वाले 99 प्रतिशत खिलाड़ियों को आगे चलकर डिमेंशिया जैसी दिमागी दिक्कतें आती हैं।

10 लाख लोगों पर शोध

यह शोध 1964 से लेकर 2012 तक किया गया, जिसके सभी नतीजे मिलाकर पेश किए गए। इसमें से करीब डेढ़ लाख वो लोग थे जिन्हें सड़क दुर्घटना के कारण सिर में गहरी चोटें आई थीं। अध्ययन में यह भी सामने आया कि जिन लोगों को हल्की चोटें आई थीं, उनमें भी डिमेंशिया होने का खतरा दोगुना देखा गया। इसके अलावा, करीब दो लाख सैनिकों ने बताया कि बम फटने से आई चोट के कारण उन्हें याददाश्त कमजोर होने की बीमारी हो गई।

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

लम्बित कार्यों में गति, प्रतिभा निखारने का सुनहरा अवसर, भाग्य सहयोग करेगा। पारिवारिक विवाद संभव, करियर में परिवर्तन भी करना पड़ सकता है। दाम्पत्य जीवन उत्तम, सन्तान पक्ष मध्यम। स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा, सकारात्मकता से कुछ नया कर पायेंगे।

वृषभ

माह का उत्तरार्द्ध अच्छी खबर देगा, कार्य क्षेत्र में विस्तार के योग हैं और नई योजनाएं सफल होंगी। आय पक्ष सुदृढ़ रहेगा। समय पर कार्यों को पूरा कीजिए जिससे लाभ में रहेंगे किन्तु निकटवर्ती लोगों से सावधान भी ज़रूरी है।

मिथुन

राशि स्वामी का नीच में स्थित होना परिस्थितियों को प्रतिकूल बनाएगा। विरोधियों से हानि की सम्भावना, परन्तु कार्य क्षेत्र में अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। शंकाओं एवं भ्रम से ग्रसित हो सकते हैं, स्वास्थ्य सामान्य, सन्तान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा, शासकीय कार्यों में लाभ।

कर्क

कर्क : दाम्पत्य जीवन में टकराव सम्भव, सेहत में उतार-चढ़ाव, विद्यार्थी वर्ग असन्तुष्ट रहेगा। भाग्य साथ देगा, माह का उत्तरार्द्ध कर्म क्षेत्र को विशेष गति देगा, आय के नये स्रोत भी बनेंगे, सन्तान पक्ष से चिंता संभव किन्तु भाई-बहिनों के सहयोग से कुछ नया कर पायेंगे।

सिंह

अटके हुए कार्यों को गति मिलेगी, विशेष कर राजकीय, शासकीय एवं न्यायिक मामले राहत देंगे। विरोधी हानि पहुंचा सकते हैं। स्वास्थ्य में नरमी के कारण मानसिक परेशानी रहेगी, परिवार में मांगलिक अवसर भी आएगा। सन्तान पक्ष से सन्तुष्टि, समय का लाभ उठाते हुए आगे बढ़ें।

कन्या

पारिवारिक कलह से मन अशान्त रहेगा। कार्यस्थल पर भी कुछ न कुछ समस्याएं पैदा होती रहेंगी। आर्थिक क्षेत्र में किये गये प्रयास सफलता दिलायेंगे, स्थायित्व के कार्यों में ज्यादा ध्यान दें, सन्तान से मनमुटाव, स्वास्थ्य ठीक रहेगा, किसी सज्जन का सम्पर्क आपको नई ऊर्जा देगा।

तुला

अत्यधिक दौड़-धूप से परेशानी होगी, कार्य के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होने से खिन्नता बढ़ेगी। बड़े-बुजुर्ग के मागदर्शन में कार्य करें। विरोधी पक्ष शांत रहेगा, लेन-देन में सावधानी बरतें, आय पक्ष और स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वृश्चिक

सामाजिक मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, परन्तु सामंजस्य में कमी के कारण बनते काम बिगड़ सकते हैं, भावुकता और क्रोध से हानि पहुंच सकती है। भौतिक सुखों में वृद्धि, शासकीय कार्यों में सफलता, सन्तान पक्ष से हर्ष एवं प्रसन्नता, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

धनु

भौतिक सुख में वृद्धि, कार्य क्षेत्र में नयापन एवं उन्नति का समय है, लाभ उठाएं। जोखिम के कामों में भी सफलता प्राप्त होगी, आय पक्ष में भाग्यपूर्ण रूप से सहयोग देगा। सन्तान की ओर से चिन्तामुक्त होंगे, युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य मध्यम, मित्रों का सहयोग रहेगा।

मकर

नई समस्याओं से मानसिक परेशानी बनी रहेगी, व्यर्थ के कार्यों में उलझे रहेंगे, जिससे समय नष्ट होगा। आर्थिक मामलों में विशेष ध्यान देने एवं आगे की योजना तय करें। धार्मिक कार्यों में समय एवं धन व्यय होगा किन्तु कार्य क्षेत्र में सफलता भी मिलेगी। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

कुम्भ

चल रहे कार्य शिथिल हो सकते हैं, कार्य की अधिकता रहेगी, आय पक्ष प्रभावित रहेगा, भाग्य के सहयोग से कुछ अच्छा कर पायेंगे, पैतृक सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। कार्य स्थल पर अच्छा प्रभाव छोड़ेंगे, परन्तु उसका लाभ देर से मिलेगा। सन्तान पक्ष से प्रसन्नता, स्वास्थ्य उत्तम और राजकीय पक्ष लाभप्रद रहेगा।

मीन

कोई पुरानी व्याधि परेशानी कर सकती है, विरोधियों के कारण योजना में परिवर्तन करना पड़ सकता है, कार्य क्षेत्र में भी रूक-रूक कर सफलता मिलेगी, जल्दबाजी हानि पहुंचा सकती है। संतान पक्ष से सामंजस्य ठीक नहीं रहेगा और अर्न्तद्वन्द्व से परेशान रहेंगे। विचारों में परिवर्तन का प्रयास करें, लाभ में ही रहेंगे।

चपलोत, कटारिया सहित 12 को सर्वश्रेष्ठ विधायक का सम्मान

जयपुर। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष शांतिलाल चपलोत व गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया सहित 12 को सर्वश्रेष्ठ विधायक के तौर पर 6 मार्च को विधानसभा में सम्मानित किया गया। शांतिलाल चपलोत को वर्ष 2003-04 के लिए, भरत सिंह को 2007, राजेन्द्र राठौड़ को 2009, गुलाबचंद कटारिया को 2010, अमराराम को 2011, सूर्यकांता व्यास को 2012, राव राजेन्द्र सिंह को 2013, माणिकचंद सुराणा को 2014, जोगाराम पटेल को 2015, गोविन्द सिंह डोटासरा को 2016, बृजेन्द्र सिंह ओला को 2017 और अभिषेक मटोरिया को वर्ष 2018 के लिए सर्वश्रेष्ठ विधायक के रूप में सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष कैलाश मेघवाल ने राज्यपाल कल्याण सिंह का संदेश पढ़ा। चुने गए सर्वश्रेष्ठ विधायकों को विधानसभा अध्यक्ष ने प्रशस्ति पत्र, मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने स्मृति चिन्ह, उपाध्यक्ष राव राजेन्द्र सिंह ने गुलदस्ता, संसदीय कार्यमंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने श्रीफल तथा नेता प्रतिपक्ष रामेश्वर लाल डूडी ने सम्मानित किया। सम्मान लेकर उदयपुर लौटने पर चपलोत का राणा प्रताप नगर स्टेशन पर भैरोसिंह शेखावत मंच ने स्वागत किया। मंच के मांगीलाल जोशी, रोशनलाल जैन, दलपत सुराणा, किरणचन्द लसोड़, प्रकाश दोशी, दिलीप सिंह राठौड़, वीरेन्द्र बापना, अनिल अजमेरा, प्रभुलाल माली, ललित मेनारिया, बार एसोसिएशन अध्यक्ष रामकृपा शर्मा व पूर्व अध्यक्ष भरत जोशी आदि स्वागत करने वालों में शामिल थे।

श्रेष्ठ विधायक का अवार्ड लेते पूर्व विधानसभा अध्यक्ष शांतिलाल चपलोत।

प्रोफेशनल महिलाओं की वॉक

कार्यक्रम में शामिल उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी, निवृत्ति कुमारी मेवाड़, शुभ सिंघवी, पूनम राठौड़ व अन्य।

उदयपुर। विभिन्न क्षेत्रों में अपने कार्यों से मुकाम हासिल करने वाली 100 से अधिक स्थानीय प्रोफेशनल महिलाओं ने गत दिनों फतहसागर पर ग्लोबल वीमन मेन्टर्स फोरम एवं वाईटल वॉयसेस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित वॉक में भाग लेकर सदैव आगे रहने का संकल्प लिया। मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी थी। विशिष्ट अतिथि निवृत्ति कुमारी मेवाड़ ने कहा कि महिलाओं को अपनी शक्ति को पहचान कर आगे बढ़ना चाहिए। फोरम की संस्थापक अध्यक्ष अर्चना सुराना, ख्याति प्राप्त तैराक गौरवी सिंघवी, एसपी रानू शर्मा, पूर्व मेयर रजनी डांगी और भारोत्तोलक माला सुखवाल, कोर कमेटी की सदस्य शुभ सिंघवी ने भी विचार व्यक्त किए।

हिन्दुस्तान जिंक लीडरशिप अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए वर्ल्ड सीएसआर डे एवं राष्ट्रीय चैनल ने सामाजिक सरोकारों के लिए सीएसआर लीडरशिप अवार्ड से सम्मानित किया है। इस अवार्ड के लिए विभिन्न क्षेत्रों से 200 से अधिक कंपनियों में मुकाबला था। ताज लैण्डस, मुम्बई में हुए समारोह में हिन्दुस्तान जिंक की ओर से उप-मुख्य मार्केटिंग ऑफिसर विजय जयराम मूर्ति ने वर्ल्ड सीएसआर डे एवं वर्ल्ड सस्टेनिबिलिटी के फाउण्डर डॉ. आर. एल. भाटिया से यह सम्मान प्राप्त किया। समारोह में हिन्दुस्तान जिंक के मुकुल बेदी ने सीएसआर पर प्रजेन्टेशन भी दिया।

डॉ.आर.एल. भाटिया से सम्मान प्राप्त करते विजय जयराम मूर्ति

जे. के. फैक्ट्री में मनाया सुरक्षा दिवस

कांकरोली। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. में 4 मार्च को 47वां राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस मनाया गया। सुरक्षा ध्वज फहराने के बाद वाईस प्रेसिडेन्ट आर. केडिया ने

कहा कि सुरक्षित कार्य संस्कृति का जीवन के हर क्षेत्र में अपना खास महत्व है। इसे व्यक्तिगत सोच एवं प्राथमिकता में शामिल करना होगा। तभी हम दूसरों के साथ स्वयं की भी सुरक्षा सुनिश्चित कर पाएंगे। सुरक्षा से सम्बन्धित प्रतिस्पर्द्धाओं में श्री अमित जोशी, सुनील वैष्णव, चैनसिंह राठौड़, किशनलाल कुमावत, डूंगरमल, राजेन्द्र सिंह, रामचन्द्र चौधरी, डालचन्द शर्मा, रमेश पालीवाल, सी. पी. शर्मा आदि को पुरस्कार के लिए चयनित एवं सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 2017-18 में सर्वोत्तम सुरक्षा निष्पादन के लिये बीयू-2 को विजेता तथा बीयू-1 को उपविजेता, सुरक्षा में महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिये बीयू-2 एवं बीयू-1 को शील्ड प्रदान की गई एवं कॉन्ट्रेक्टर्स को सुरक्षित कार्य के लिए सम्मानित किया गया। संचालन संजय अग्रवाल एवं नीरज श्रीवास्तव ने किया।

डिजिटल नारी सप्ताह

उदयपुर। फतहपुरा स्थित यूनिवर्सल स्कूल में पिछले दिनों डिजिटल नारी सप्ताह का उद्घाटन विद्यालय की प्रबन्ध निदेशक मोनिका सिंघटवाड़िया ने किया। संदीप सिंघटवाड़िया ने बताया कि डिजिटल नारी कार्यशाला में सुरभि जैन, रोहन शर्मा, ओशी बोहरा, दिव्या पंचाल, श्रेयांश कोठारी की टीम ने महिलाओं को आधुनिक युग में डिजिटलाइज होने पर बल दिया। दुबई से आए अतिथि विजय भाई अदानी, राजकुमार शिव हरे सईद अल हसनी, योगिता शिवहरे भी कार्यक्रम में शामिल हुए। रोटरी मीरा की सचिव कविता बलदेवा, माहेश्वरी महिला प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष एवं रोटरी मीरा की पूर्वाध्यक्ष वंदना मूथा ने गृहिणियों को प्रमाण पत्र दिए। प्रधानाचार्या डॉ. मधु योगी ने महिलाओं के सशक्तिकरण पर चर्चा की। शमशाद बेगम ने धन्यवाद दिया।

कविता धाम के अप्रेल में आयोजन

उदयपुर। आदिनाथ मानव कल्याण समिति द्वारा कविता स्थित सुधर्म विहार में आगामी 22 अप्रेल से दस दिवसीय आयोजन होंगे। समिति अध्यक्ष रणजीत सिंह मेहता ने बताया कि मुनि सुधर्म सागर महाराज के सान्निध्य में 23 अप्रेल को पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा, 24 को शान्तिनाथ जैन भक्तिमण्डल द्वारा पूजा-अर्चना होगी। 25 अप्रेल को महावीर धाम स्थापना दिवस एवं महावीर केवल्य ज्ञान दिवस, 26 को जिन शासन स्थापना दिवस, 27 को आदिनाथ भक्तिमण्डल की ओर से पूजा-अर्चना, 28 को आदिनाथ मानव कल्याण समिति का स्थापना दिवस तथा 29 व 30 अप्रेल को नाकोडाजी की यात्रा के साथ आयोजन सम्पन्न होंगे।

गोलछा क्लिनिक में निःशुल्क कैंसर जांच

एम.सी. जैन चिकित्सा स्टाफ को सम्मानित करते हुए।

उदयपुर। मारवाड़ी युवा मंच, महिला लेकसिटी शाखा, गोलछा पॉली क्लिनिक एवं एसोसिएटेड सोप स्टोन डिस्ट्रीब्यूटर कंपनी के सौजन्य से 27 फरवरी को विशाल निःशुल्क कैंसर जांच परीक्षण शिविर आयोजित किया गया। जिसमें 138 मरीजों की जांच की गई। महिला लेकसिटी शाखा की अध्यक्षा डॉ. प्रियंका जैन, उपाध्यक्षा राजश्री वर्मा, सचिव जया कचरू, मारवाड़ी युवा मंच उदयपुर के सौरभ जैन, महेशआनन्द, सुधीर माहेश्वरी की देखरेख में शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि महापौर चंद्रसिंह कोठारी व विशिष्ट अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष दिनेश भट्ट, पूर्व आईजी टी.सी. डामोर, अनुष्का एकेडमी के डायरेक्टर राजीव सुराणा थे। शिविर में जीबीएच अमेरिकन कैंसर मेमोरियल हॉस्पिटल के डॉ. सुनील गारू, डॉ. रिंकू महावर, डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा, नरेन्द्र गोस्वामी ने सेवाएं दी। शिविर प्रभारी यशवन्त पालीवाल ने व गोलछा क्लिनिक के प्रबंधक एम. सी. जैन ने शिविर समापन पर चिकित्सा स्टाफ एवं कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया।

मोर्चरी बॉक्स व वाहन का लोकार्पण

मोर्चरी वाहन का लोकार्पण करते गृहमंत्री गुलाबचन्द कटरिया। साथ में डॉ. अजय मुर्डिया, डॉ. यशवंत कोठारी, बी. एच. बाफना, डॉ. अनिल कोठारी, डॉ. प्रदीप कुमावत एवं अन्य।

उदयपुर। रोटरी क्लब उदयपुर की ओर से इन्दिरा आईवीएफ के सहयोग से निर्मित मोर्चरी वाहन एवं मोर्चरी बॉक्स का गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने गत दिनों रोटरी बजाज भवन में लोकार्पण किया। इस अवसर पर कटारिया ने इन्दिरा आईवीएफ ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया का पगड़ी, उपरणा और शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। मोक्षरथ एवं मोर्चरी बॉक्स प्रोजेक्ट का संचालन करने वाले डॉ. अनिल कोठारी ने कहा कि शहर में कुछ नया करने की सोच के साथ आज से ठीक 11 वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ यह प्रोजेक्ट आज एक मिशन बन चुका है। डॉ. अजय मुर्डिया की ओर से इस प्रोजेक्ट में किए गए आर्थिक सहयोग के साथ ही रोटरी की ओर से अब शहर में 2 मोक्षरथ एवं 3 मोर्चरी बॉक्स एवं 1 मोर्चरी वाहन उपलब्ध कराए गए हैं।

रियल टाइम मॉनिटरिंग प्रोजेक्ट

प्रोजेक्ट लॉन्च करते हुए गीतांजली ग्रुप के चेयरमैन जे. पी. अग्रवाल ।

उदयपुर। गीतांजली इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नीकल स्टडीज की इनोवेशन लेब ने रियल टाइम एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग प्रोजेक्ट लॉन्च किया। डायरेक्टर डॉ. विकास मिश्र ने बताया कि बोधि नामक प्रोजेक्ट एक प्रकार का सोलर ट्री है जो रियल टाइम एयर की क्वालिटी को मॉनिटर करेगा। साथ ही यह तापमान भी बताएगा। सोलर ट्री का उद्घाटन गीतांजली ग्रुप के चेयरमैन जे. पी. अग्रवाल ने किया। स्मार्ट पीसीओ की तरह काम करने वाले इस सोलर ट्री से एक साथ पांच से अधिक मोबाइल फोन व लेपटॉप चार्ज हो सकेंगे। रात में यह रोशनी प्रदान करता रहेगा। प्रोजेक्ट डॉ. रघुवीर के निर्देशन में कम्प्यूटर इंजीनियरिंग ब्रांच के विद्यार्थी दीपेन्द्र गढ़वाल, मुकुल तातेड़, निर्मल सुथार, भव्य माथुर, गुलशन जमान ने तैयार किया।

विद्यार्थियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

उदयपुर। द स्कॉलर्स एरिना सी. सै. स्कूल के विद्यार्थियों का स्पेल-बी राज्य स्तरीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तरीय परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा। प्राचार्या डॉ. शर्मिला जैन ने बताया कि स्पेल बी इन्टरनेशनल चेन्नई की ओर से आयोजित राज्य स्तरीय परीक्षा में द स्कॉलर्स एरिना स्कूल की देवांगी जैन व करन कुमावत ने राज्य स्तर पर प्रथम पांच विद्यार्थियों में अपना स्थान बनाया। उन्होंने बताया कि परीक्षा में विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों ने अलग-अलग श्रेणी में पदक व प्रमाण पत्र प्राप्त किए जिनमें देवांगी जैन ने 'अचीवमेंट', सोहम सावधवानी ने 'मेरिट प्लस', प्रियल शौर्य, श्वेता कुशवाहा, दिशा पानेरी व विदुषी जैन ने 'मेरिट' स्तर के पदक व प्रमाण पत्र प्राप्त किए।

वंदना को एक्सीलेंस वुमन अवार्ड

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की निदेशक वंदना अग्रवाल को नई दिल्ली में सोशल एम्पावरमेंट विलेजर्स एसो. और आओ साथ चलें ने महिलाओं के सशक्तीकरण की दिशा में योगदान के लिए 'दीनदयाल उपाध्याय एक्सीलेंस वुमन' अवार्ड प्रदान किया। उन्हें यह अवार्ड केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री शिव प्रताप शुक्ला, शिक्षा राज्यमंत्री सत्यपाल सिंह, पर्यावरण राज्यमंत्री डॉ. महेश शर्मा, सांसद ओम बिड़ला, सांसद मीनाक्षी लेखी और दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी की उपस्थिति में दिया गया।

डॉ. चपलोत ने संस्थापक-अध्यक्ष के रूप में ली शपथ

गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया डॉ. ओ.पी. चपलोत को शपथ दिलाते हुए।

उदयपुर। जैन सोश्यल ग्रुप अंतरराष्ट्रीय फेडरेशन मेवाड़ रीजन का प्रथम शपथ ग्रहण समारोह 4 फरवरी को शुभकेसर गार्डन में हुआ। मुख्य अतिथि जेएसजी आईएफ के अध्यक्ष निर्वाचित अजीत लालवानी, विशिष्ट अतिथि निगम महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, ओसवाल बड़े साजन सभा के अध्यक्ष किरणमल सावनसुखा थे। अध्यक्षता गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने की। समारोह का उद्घाटन जेएसजी आईएफ के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष अभय कुमार सेठिया ने किया। कार्यकारिणी को पूर्व अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश कुमार जैन ने शपथ दिलाई। जैन सोश्यल ग्रुप मेवाड़ रीजन के संस्थापक चेयरमैन ओ. पी. चपलोत ने कहा कि जेएसजी में युवाओं एवं महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जाएगी। इसमें एक-दूसरे के परस्पर सहयोग के नेटवर्किंग पर विशेष जोर दिया जाएगा। युवाओं को उद्यमिता विकास के साथ सामाजिक दायित्व का बोध कराना बनाना ही जेएसजी का मुख्य उद्देश्य है।

गौरवी सिंघवी

अंशु कोठारी

डॉ. शिल्पा गोयल

ऑडी पुरस्कार से सम्मानित

उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में उदयपुर के ऑडी शोरूम पर लेकसिटीकी तीन विशिष्ट महिलाओं को उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया। ऑडी के रीजनल मैनेजर(सेल्स) के करण अरोड़ा ने अंशु कोठारी, डॉ. शिल्पा गोयल व गौरवी सिंघवी को स्मृति चिन्ह प्रदान किए।

फील्ड क्लब के चुनाव : मनवानी, आंचलिया व शुक्ला जीते

उदयपुर। फील्ड क्लब के 18 मार्च को सम्पन्न चुनाव में उमेश मनवानी उपाध्यक्ष, यशवंत आंचलिया सचिव व कर्तव्य शुक्ला कोषाध्यक्ष पद पर विजयी हुए। मनवानी ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी जसनीत सिंह पाहवा को कड़े मुकाबले में 142 मतों से पराजित किया। सचिव पद पर त्रिकोणीय मुकाबले में यशवंत आंचलिया ने जीत का परचम फहराया। उन्हें 1022 वोट मिले जबकि मनीष नलवाया को 436 व मुकेश दोशी को केवल 228 वोट ही हासिल हो सके। कोषाध्यक्ष पद पर कर्तव्य शुक्ला को गोल्डी वधावा से सीधे मुकाबला था। शुक्ला को 1064 वोट जबकि वधवा 572 वोट मिले। इस तरह शुक्ला ने यह पद 492 मतों के अन्तर से जीत लिया। कार्यकारिणी के सात पदों पर भी चुनाव हुए। जिनमें अभिषेक कालरा, अंकित शर्मा, उरप्रीत कौर सोनी, श्रीमती डॉ. गिरिराज शर्मा, हर्ष बुला, सुहेल अख्तर तथा रूपेन्द्र मोदी ने विजय दर्ज की। क्लब के कुल 3253 सदस्यों मेंसे 1674 ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। नवनिर्वाचित सचिव आंचलिया ने मतदान स्थल पर मौजूद 'प्रत्यूष' संवाददाता को बताया कि वे क्लब में विकास के जरिए नयापन लाने के भरपूर प्रयास करेंगे। क्लब से सटे अवैध कब्जों को हटाने के लिए प्रभावी पैरवी की जाएगी।

उपाध्यक्ष मनवानी ने बताया कि खेलों के क्षेत्र में क्लब को पहचान दी जाएगी। स्पोर्ट्स कैम्प लगाने पर भी विचार करेंगे। सीए कर्तव्य शुक्ला ने कहा कि बतौर ट्रेज़रार क्लब के वित्तीय व विधिक मामलों पर नज़र बनाए रखना उनकी प्राथमिकता रहेगी। विजयी प्रत्याशियों को सदस्यों से मालाओं से लादकर शानदार स्वागत किया।

हीरो की नई पेशन एक्स प्रो लॉन्च

नई गाड़ी लांच करते प्रबंध निदेशक सतपाल सिंह एवं अन्य।

उदयपुर। वीएसएस एन्टरप्राइजेज एवं डबोक स्थित वीएसएस मोटर्स पर गत दिनों हीरो की ओर से पेशन एक्स प्रो का नया मॉडल नए फीचर्स के साथ बाजार में उतारा गया। प्रबन्ध निदेशक सतपाल सिंह ने बताया कि लॉन्चिंग के अवसर पर 2 ग्राहकों को नए मॉडल की चाबी सौंपी। उन्होंने बताया कि नए मॉडल में कम्पनी बी एस 4 मानक की पुरानी गाड़ी के मुकाबले ग्राहक को इस नए 110 सीसी के मॉडल में माइलेज 10 किलोमीटर प्रति लीटर अधिक मिलेगा। कम्पनी ने इस मॉडल में आई 3 एस की नई तकनीकी को जोड़ा है।

सेठ का अभिनंदन

सेठ का अभिनंदन करते उपनिदेशक गौरीकांत शर्मा, एपीआरओ पवन शर्मा व सूचना जनसम्पर्क कार्यालय का स्टाफ।

उदयपुर। दीर्घकालिक (38 वर्ष) एवं समर्पित सेवाओं के लिए स्थानीय सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय के कार्यालय सहायक सुरेश चन्द्र सेठ का अभिनंदन 28 फरवरी को सूचना केन्द्र में जनसम्पर्क परिवार की ओर से किया गया। अपने लम्बे कार्यकाल के दौरान सेठ ने राजस्थान सरकार के विविध कार्यक्रमों में भागीदारी के साथ ही पत्रकार कल्याण से जुड़ी सेवाओं में सराहनीय योगदान दिया। पगड़ी, उपरना, श्रीनाथजी की छवि, श्रीफल व शॉल से अभिनंदन करते हुए विभाग के उपनिदेशक गौरीकान्त शर्मा, एपीआरओ पवन कुमार शर्मा सहित समस्त स्टाफ सदस्यों ने उनके कार्यकाल की मुक्त कण्ठ से सराहना करते हुए उनके व उनके परिवार के लिए कुशलता की कामना की।

गीतांजलि के डॉ. अतुल वेबिप के सदस्य

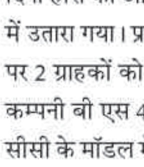

उदयपुर। गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के टीबी एवं चेस्ट विशेषा डॉ. अतुल लुहाड़िया को अंतरराष्ट्रीय संस्था वेबिप, वर्ल्ड एसोसिएशन फॉर ब्रॉन्कोलोजी एवं इंटरवेंशनल पल्मोनोलोजी में सदस्य मनोनीत किया गया है। टीबी एवं चेस्ट क्षेत्र में विशेष कार्य करने पर उन्हें इस अंतरर्राष्ट्रीय संस्था से जुड़ने के लिए पदोन्नत किया गया। इससे जुड़ने पर उन्हें टीबी एवं चेस्ट क्षेत्र में विश्व में हो रही नई-नई गतिविधियों एवं जानकारियों से अवगत कराया जाएगा।

कैंसर का पूरी तरह उपचार संभव

उदयपुर। जीबीएच ग्रुप के चेयरमैन डॉ. कीर्ति के. जैन ने कहा कि हर साल देश में करीब सवा लाख महिलाएं गर्भाशय के कैंसर से ग्रसित होती हैं। जीबीएच मेमोरियल कैंसर हॉस्पिटल इस क्षेत्र में मिसाल कायम करेगा। वे जैन सोशल ग्रुप की ओर से आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। डॉ. मोनिका खण्डेलवाल ने बच्चेदानी के कैंसर व इससे बचाव की जानकारी दी। डॉ. सुरभि पोरवाल, ग्रुप डायरेक्टर डॉ. आनंद झा सहित जैन सोशल ग्रुप के सदस्य भी मौजूद थे।

श्रद्धांजलि

भाजपा के शीर्ष नेता भानुजी का निधन

भारतीय जनसंघ की स्थापना से लेकर जनता पार्टी और फिर भारतीय जनता पार्टी की यात्रा के एक कर्मठ योद्धा, संस्थापक सदस्य भानुकुमार शास्त्री का 24 फरवरी 2018 को निधन प्रदेश भाजपा में एक राजनैतिक युग का अंत है। संघ के साधारण स्वयंसेवक से लेकर मुख्य शिक्षक, कार्यवाह, नगर कार्यवाह बाद में पार्षद, नगर परिषद् उपसभापति, सांसद, राजस्थान खादी बोर्ड के अध्यक्ष आदि उनकी लम्बी राजनैतिक यात्रा के पड़ाव रहे।

उनका शुचितापूर्ण राजनैतिक व सार्वजनिक जीवन इस क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिए संदेश से परिपूर्ण पाथेय है। वे अपने पीछे व्यथित हृदय माता लक्ष्मी देवी(105 वर्ष), पुत्र हृषिकेश, पुत्री कादम्बरी सहित भाई-भतीजों एवं पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

राजस्थान महिला विद्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सहित मंत्रिमण्डल के सदस्यों, विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं व कार्यकर्ताओं ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

उदयपुर। भीलवाड़ा जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष एवं सुखाड़िया विश्वविद्यालय छात्रसंघ के पूर्व अध्यक्ष डॉ. गजेन्द्र सिंह चौहान का 3 मार्च 18 को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय दादीजी श्रीमती चांद कुंवर, पिता श्री भवानी सिंह जी, माता श्रीमती राम कुंवर, पत्नी श्रीमती बिन्दु एवं पुत्र-पुत्री पराक्रम सिंह व आराध्या चौहान सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सचिन पायलट व पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, डॉ. गिरिजा व्यास, डॉ. सी. पी. जोशी सहित अनेक नेताओं-कार्यकर्त्ताओं ने गहरा दु:ख व्यक्त किया है।

उदयपुर। स्वतंत्रता सेनानी स्व. कनक मधुकर की पुत्रवधू एवं नवजीवन के सम्पादक जगदीश अग्रवाल की धर्मपत्नी श्रीमती सीता देवी का 9 मार्च को असामयिक निधन हो गया। वे दो सप्ताह से एक निजी अस्पताल में भर्ती थीं। वे अपने पीछे पुत्र दीपक, पुत्रियां डॉ. मनीषा, डॉ. ऋतु व ममता तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों सहित समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं। उनके निधन पर पत्रकारों व विभिन्न राजनैतिक दलों के कार्यकर्त्ताओं ने दु:ख व्यक्त किया है।

उदयपुर। पूर्व पार्षद विजय प्रकाश विप्लवी की माता श्रीमती सुशीला देवीजी का 24 फरवरी 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पति श्री पुष्करलालजी सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनके निधन पर भाजपा के अनेक नेताओं व कार्यकर्त्ताओं ने गहरा शोक व्यक्त किया है। वे आयुर्वेद विभाग से सेवानिवृत्त हुई। कुछ समय से बीमार थीं।

उदयपुर। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व सदस्य एवं वरिष्ठ नेता श्री गोपीकृष्ण जी पानेरी(पानेरी उपवन) का 12 मार्च, 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र श्री लक्ष्मीकांत, संजय पानेरी व पुत्रियां विमला, निर्मला, प्रेम, कुसुम एवं सपना देवी सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। स्व. रंगलाल जी कोठारी के सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह जी कोठारी का 12 मार्च, 2018 को निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र चैतन्य, प्रदीप व पुत्रियां आशा शाह तथा वंदना खिमेसरा सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। पूर्व पार्षद श्री दिनेश शर्मा का 11 मार्च, 2018 को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी तरुणा देवी, पुत्रियां मेघा एवं रिमझिम तथा भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। स्व. श्री भेरूसिंह जी सांखला के सुपुत्र श्री रणजीत सिंह जी सांखला का आकस्मिक निधन 18 मार्च, 2018 को हो गया। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती राजकुमारी, पुत्र अनोप सिंह एवं दो पुत्रियां नूतन कंवर एवं आशा कंवर का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर विभिन्न स्वयंसेवी एवं राजनैतिक संगठनों ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

TO RISE ABOVE
STEP BY STEP SCHOOL

Step By Step School

CBSE Affiliated No. 1730602

(Class Play Group To XII)

Sector 11, Udaipur-313002
Jogi Ka Talab, Opp. Nehla, Nr. Sec.14

Contact No. 0294-2483932, 2481567, 9680520421
E-mail ID: stepbystepschool11@gmail.com, website : sbsudaipur.com

- **Day Boarding & Hostel Facility**
- **Transport Facility Available**

मनमोहक एवं सुगन्धित खुशबु जो आपके जीवन में लायें खुशहाली
250
Products Available
चेतक घोड़ा
CHETAK HORSE
ISO 9001:2008 CERTIFIED
Archana®
Agarbatti
EXPORT QUALITY
Since 1947
AGARBATTI
Registered Office :
ARCHANA AGARBATTI
NAVBHARAT INDUSTRIES
N.H. 76, Airport Road, Glass Factory Choraha,
UDAIPUR - 313001 (Rajasthan)
Customer Care Number : 0294-2492161, 2490899
Mob. : +91-77268 51913
E-mail : sales@archanaagarbatti.com
Website : www.archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

BHUPAL NOBLES' UNIVERSITY, UDAIPUR

(Approved by Rajasthan Legislative Assembly, University Act No. 23 of 2015)

Promoted by : Vidya Pracharini Sabha, Bhupal Nobles' Sansthan Udaipur, Rajasthan (Estd. 1923)

Admission Open 2018-19

Pioneer Institute of Academic Excellence since last 94 years providing Quality Education and Career Base to students to become Noble Citizens of the Society.

Equipped with the latest and Hi-tech state-of-the-Art educational facilities. Post Metric Fellowship of State Govt., PG Scholarships of Central Govt. and other scholarships available.

Bhupal Nobles' P.G. College (Co-Education)

Email : bnpg1954@yahoo.co.in- 0294-2412981, 2423948

Bhupal Nobles' P.G. Girls' College

Email : bnpggcudr@gmail.com - 0294-2422934, 2420916

FACULTY OF SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES (Contact - 7230060824)

B.A. • Political Science, History, Sociology, English, Hindi, Geography Economics, Physical Education, Sanskrit, Drawing & Painting, Public Administration, Psychology, Music, Home Science

M.A. • Political Science, History, Sociology, English Lit., Hindi Lit. Geography Economics, Public Adm. Psychology, Drawing & Painting, Home Science

Ph.D. • Political Science, History, Sociology, English Lit., Geography Economics, Public Adm. Psychology, Visual Art, Home Science, Hindi Lit.

Faculty of Commerce & Management (Contact - 7230060843)

B.Com • 3 years Degree

Hotel Mgt. • BHM (4 Years Degree) & BATM (3 Years Degree)

B.B.A • 3 Years Degree

M.Com • ABST, Bus. Adm., Banking & Bus. Economics

Ph.D. • ABST, Bus. Adm., Banking & Bus. Economics

Faculty of Science (Contact - 7230060810)

B.Sc. • Physics, Chemistry, Mathematics, Botany, Zoology, Computer Science, Geology, Statistics, Economics, Clinical Nutrition & Dietician, Biotech.

B.Sc. Bio-technology (Honours) • 3 Years Degree

B.Sc. Home Science • 3 Years **B.C.A** • 3 Years Degree **PGDCA** • 01 Year

M.Sc. • Physics, Mathematics, Chemistry, Bio-technology, Botany, Zoology Computer Science, Home Sci. (Human Development & Family Studies)

Ph.D. • Physics, Mathematics, Chemistry, Bio-technology, Botany, Zoology, Computer Science & App.

Bhupal Nobles' College of Pharmacy

Email- bnpharmacy@gmail.com **Website :** www.bnpharma.org

Ph.- 0294-2413182, 9414313542, 7230060825

Bhupal Nobles' Institute of Pharmaceutical Sciences

Email : bnipsudaipur@gmail.com **Website :** www.bnips.org

Ph. 0294-2410406, 9414738107

Faculty of Pharmacy (Contact – 7230060826, 7230060827)

B.Pharma • 4 Years Degree　**D. Pharma** • 2 Years

Pharm D • 6 Years　**Pharm D – (PB)** 3 Years

M.Pharma • Pharmaceutics, Pharmacology, Pharm Chemistry Quality Assurance

Ph.D. • Pharmaceutics, Pharmacology, Pharm Chemistry, Pharmacognosy

Faculty of Agriculture (Contact - 9461271801)

B.Sc. (Honours) • Agriculture- 4 Years Degree Course

Bhupal Nobles' College of Physical Education

Website : www.bnphysical.org, 0294-2428469, 9314495356

Faculty of Education (Contact - 7230060844)

B.P.Ed. • 2 Years, M.P.Ed- 2 Years, PG Yog Diploma - 1 Year

Ph.D. • Physical Education

B.Ed. • 2 Years

Bhupal Nobles' Law College

Ph. 0294-2417211, 9461530320

Career Counseling & Placement Cell

Faculty of Law (Contact - 7230060812)

LLB • 3 Years Degree **LLM** • 2 Years Degree (PG)

Pratap Shodh Pratishthan (Contact - 7230060819)

Historical & Cultural Research Centre.

Bhupal Nobles' Sr. Sec. School (RBSE) (Contact - 7230060828)

Email : bnsss1923@gmail.com Ph. 0294-2423952

Bhupal Nobles' Public School (CBSE) English Medium (Contact - 7230060829)

Email : bnpublicudaipur@rediffmail.com Ph. 0294-2426018

Bhupal Nobles' Girls P.G. College, Rajsamand
(Affiliated to M.L.Sukhadia University, Udaipur)
Ph. 02952-230707, 9414158352, 9828579061, 7230060813
B.A., B.Com, B.Sc., BCA, M.A., M.Sc. (Chemistry)

Bhupal Nobles' Girls' College, Salumber
(Affiliated to M.L.Sukhadia University, Udaipur)
Ph. 02906- 232411, 9414609913, 7230060846
B.A., B.Com, BCA

Other Facilities

- Maharana Raj Singh Swimming Pool
- Maharana Mahendra Singh Gymnasium
- Bhupal Nobles' Sports Shooting Range

Ph.D. Programme

Contact- Dean, PG Studies – 7230060807, 7230060824

For Admission Procedure Please Visit our Website

www.bnuniversity.ac.in **Email –** registrar@bnuniversity.ac.in
0294- 2414497, 2414498

Hostel Facility Available for Girls & Boys Separately
Contact : 0294-2417181, 9001709559, 9414313542, 7230060831

Gunwant Singh Jhala | Dr. Mahendra Singh Rathore | Mohabbat Singh Rathore

Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth

(DEEMED TO BE UNIVERSITY)

सरस्वती देवयन्ते हवन्ते

Airport Road, Pratap Nagar, Udaipur – 313001 (Rajasthan)
Phone: 0294-2492440, Fax: 0294-2492441Email: admissions@jrnrvu.edu.in

ADMISSIONS OPEN 2018-19

"NAAC Accredited 'A' Grade University"

Faculty of Management Studies (F.M.S.) Ph. 0294-3296232, 2490632

- Master of Business Administration (M.B.A.)
- Master of Business Administration Human Resource Management (M.B.A.- H.R.M.)

Manikya Lal Verma Shramjeevi College Ph. 0294-2413029, 9460826362
Faculty of Social Sciences and Humanities

Post Graduate :
- M.Phil. – English, Hindi, Sanskrit, Political Science, Sociology, Geography, Economics, History
- M.A.– English, Hindi, Sanskrit, Political Science, Sociology, Geography, Economics, History

Graduate :
- Bachelor of Arts (B.A.) in all subjects
- B.J.M.C

Diploma Courses :
- PG Diploma in G.I.S. and Remote sensing
- Proficiency in English and Communication Skills
- PG Diploma in Yoga Education

Certificate Course : •Spoken English

Faculty of Commerce, 0294-2413029, Mob. 9413481657

- M.Phil. – Business Administration and Accounting
- M.Com. – A.B.S.T., Business Administration
- Bachelor of Commerce (B.Com.)

Diploma Courses
- PG Diploma in insurance and Banking Management
- Marketing and Sales Management
- Taxation •Computer Basics and Accounting

Certificate Courses: •Tally ERP 9.0 •Accounting Technicians (CAT) (in collaboration with ICAI)

Jyotish and Vastu Sansthan, Mo. 9460030605

- M.A. – Jyotirvigyaan
- Diploma in Jyotish and Vastu
- Certificate – Pooja Paddhati and Karm Kand
- Certificate – Bhartiya Jyotish and Hastrekha Vigyaan

Evening College, Mo. 9414166169, 9829332300, 0294-2426432

- M.A./M.Sc. (Psychology) (Inds./Educational/Clinical) (9460490072)
- M.A. Yoga Education (9829797533)
- M. Music, Vocal & Intrumental •M.Sc. Chemistry
- M.Com. – Accounting / Business administration
- M.A. – English, Hindi, Sanskrit, Political Science, Sociology, Geography, Economics, History, Public Administration, Psychology, Yoga
- B.Ed. Special Education (M.R.) (9414291078)(R.C.I. Approved)
- B.A. (all subjects) & (Psychology, Yoga, Rajasthani, Physical Education, Jyotier Vigyan, Drawing)
- B.Com. •B.Sc. •B.Lib. •M.Lib. • BCA • MCA
- B. Music •Bachelor in Special Education (HI/LD) (B.Ed. Special HI/LD)
- Bachelor in Special Education BI (B.Ed. Special BI) •B.A. (Additional) in all subjects.
- PG Diploma – Guidance and Counseling
- P.G. Diploma – Yoga Education (9352500445)
- Diploma in Special Education (MR, HI and VI) (*to be approved*)
- Certificate in Spiritual Values and Human Values •Diploma in Heart Fulness and Health Management
- Diploma and Certificate in Fine Arts •Certificate– French/German/Spanish Language
- Diploma in Dietetics and Applied Nutrition

Department of Business Management Studies, Ph. 0294-2413029, 9460022300

- Bachelor of Business Administration – (B.B.A.)
- Master of International Business – (M.I.B)
- Master of NGO Management •P.G. Diploma – Training and Development

Department of Physical Education, Mo. 9829943205, 9352500445

- Master in Physical Education (M.P.Ed.) •M.A. (Yoga Education)

Department of LAW, Mo.: 9414343363, 9928246547

- LL.M. (2 Year Degree Course)
- LL.B. (3 Year Degree Course)
- B.A. – L.L.B. (5 Year Integrated Course)
- P.G. Diploma in Forensic Science (1 Year)
- P.G. Diploma in Labor LAW (1 Year)
- P.G. Diploma in Cyber LAW (1 Year)

Faculty of Computer Science and Information Technology
(Ph. 0294-2494227, 2494217, Mo.: 9887285752)

- M.Phil. (Computer Science)
- B.C.A. (Bachelor of Computer Application)
- M.C.A. (Master of Computer Application)
- M.Sc. (Computer Science)
- M.C.A. Lateral Entry in II Year
- B.Sc. (Computer Science)
- P.G.D.C.A

Faculty of Engineering and Technology, Mo. 9829009878, Ph.: 0294-2490210

- B.Tech. - Civil, Electrical, Mechanical, Electronics and Communication, Computer Science Engineering
- Diploma – Civil, Electrical, Mechanical, Electronics and Communication, Computer Science Engineering

Institute of Rajasthan Studies (Sahitya Sansthan) Ph.: 0294-2491054

- M.A. – Ancient History of India, Culture and Archeology
- P.G. Diploma in Archeology

Udaipur School of Social Work, Ph.: 0294-2491809

- Master of Social Works (MSW)
- P.G. Diploma in N.G.O. Management
- P.G. Diploma in Rural Development
- Master of Social Works (Executive)
- P.G. Diploma in H.R.M.
- Certificate Course in Road Safety

Directorate of Janshikshan and Extension Programme Mob. 94 14 737125

- **Department of Agricultural Sciences – 98872 71976**
  -B.Sc. Agriculture Honors
- **Department of Rural Technology and Management – 98872 71976**
  - B.Sc. Rural Technology and Management
- **Department of Women Studies - 0294-2490234**
  -Diploma in Computer Application (D.C.A.)
  -P.G. Diploma in Gender Studies and Technology
- **Maharana Kumbha Sangeet Kala Kendra – 94602 54432**
  -Sangeet Bhushan – One Year Course
  -Sangeet Prabhakar – Two Years Course
- Mangalmurty Indira Gandhi Janta College
- Department of Community Centres
- Department of Lok Shikshan
- Department of Janpad

Faculty of Education
Lok Manya Tilak Teachers' Training College, Dabok (Ph.: 0294-2655327, 2657753)

- M.Phil. •M.Ed. •M.A. (Education) •B.Ed. •B.A. – B.Ed. (Integrated)
- B.Sc. – B.Ed. (Integrated) •B.Ed. (Child Development) •D.El.Ed.
- M.P.Ed. •B.Ed. – M.Ed. (Integrated)

Manikya Lal Verma Shramjeevi Girls College, Dabok, (Ph. 0294-2655223, Mo. 9460856658)

- B.A. •B.Com. •M.A. •M.Com.

Faculty of Medicine
Rajasthan Vidyapeeth Homeopathic Medical College and Hospital, Dabok,
Ph.: 0294-2655974-5 Mo.: 9414156701, 9351343740

- Bachelor of Homeopathic Medicine and Surgery (B.H.M.S.)

Department of Physiotherapy Ph.: 0294-2656271, Mo.: 9414234293

- Master of Physiotherapy •Bachelor of Physiotherapy
- Post Graduate Fellowship in Geriatric Rehabilitation

Vocational Education

- Bachelor of Vocation (B.Voc.) in Hospitality & Catering Management

For more information visit University website www.jrnrvu.edu.in

Registrar

SHIVA © 98282-44344